जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

Rashtradoot

जयपुर, शनिवार 27 मई, 2023

जयपुर में कोठी वो भी 3000 की रेट से !

FIXED PRICE

NO MIDDLE-MEN
DIRECT TO CUSTOMER

बड़ी-बड़ी कोठी, बड़े-बड़े फ्लैट

2 BHK WALK-UP अपार्टमेंट	1350 SF	45 लाख
3 BHK WALK-UP अपार्टमेंट	1900 SF	50 लाख
3 BHK BIG कोठी	2000 SF	60 लाख
4 BHK BIGGER कोठी	2325 SF	70 लाख
4 BHK BIGGEST कोठी	3200 SF	1 करोड़

KEDIA सेजस्थान
KOTHI & WALK-UP APARTMENT
अजमेर रोड, जयपुर
एम.आई. रोड़ से एक LEFT पर !

KEDIA

1800 120 2323
info@kedia.com www.kedia.com
www.rera.rajasthan.gov.in | RERA No. RAJ/P/2023/2387

LOCATION QR CODE
ROUTE MAP
SITE TOUR 360 DEGREE

विचार बिन्दु

संसार के विरुद्ध खड़े रहने के लिए शक्ति प्राप्त करने की जरूरत नहीं है। ईसा दुनिया के खिलाफ खड़े रहे, बुद्ध भी अपने जमाने के खिलाफ गए, प्रहलाद ने भी वैसा ही किया। ये सब नम्रता के धनि थे। अकेले खड़े रहने की शक्ति नम्रता के बिना असंभव है। –महात्मा गाँधी

गर्मी में पशु-पक्षियों का भी रखें खयाल

गर्मी में पानी को अमृत के समान माना जाता है और इस चिलचिलाती धूप में बार-बार प्यास लगना स्वाभाविक है। तापमान का पारा दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। विशेषकर राजस्थान में तापमान 46 डिग्री तक पहुँच गया है। बढ़ती गर्मी लोगों के साथ ही पक्षियों के लिए भी बेहाल करने लगी है। पक्षी इस मौसम में ज्यादा प्रभावित होते हैं। मानव जैसे-तैसे इस भीषण गर्मी से सुरक्षित रख पाता है, लेकिन आवारा पशु व पक्षियों के लिए ये गर्मी मुश्किलें पैदा करती हैं खाना और पानी की खोज में लगातार धूप में उड़ते रहने से वे कमजोर हो जाते हैं। इस तपती गर्मी में पेड़ों की लगातार कमी और सूखते जल स्त्रोत की वजह से पक्षी और अन्य जानवर आश्रय और दाना पानी की तलाश में इधर उधर भटकते रहते हैं। आदमी को प्यास लगती है तो वह कहीं भी मांग कर पी लेता है, लेकिन मूक पशु-पक्षियों को प्यास में तड़पना पड़ता है, हालांकि जब वे प्यासे होते हैं तो घरों के सामने दरवाजे पर आकर खड़े हो जाते हैं। कुछ लोग पानी पिला देते हैं तो कुछ लोग भगा भी देते है। इस गर्मी में पशु-पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए लोगों को प्रयास करना चाहिए।

गर्मियों का मौसम मानव के साथ-साथ पशु पक्षियों के लिए बहुत कष्टप्रद होता है। इस बार मार्च की अपेक्षा अप्रैल के महीने से तेज गर्मी देखने को मिली। गर्मी ने पशु-पक्षियों को चपेट में लेना शुरू कर दिया है। पशु-पक्षियों को जिंदा रहने के लिए हर रोज पानी की जरूरत होती है।

गर्मियों में हर साल सैकड़ों पक्षी और आवारा पशु पानी की कमी से मर जाते हैं। तेजी से कम होते प्राकृतिक जल स्त्रोत और पेड़ों की कमी से इन बेजुबानों की स्थिति विकट हो गई है।

गर्मियों में पक्षियों को भी प्यास अधिक लगती है जबकि पानी की उपलब्धता कम हो जाती है।

गर्मियों का मौसम मानव के साथ-साथ पशु पक्षियों के लिए बहुत कष्टप्रद होता है। गर्मियों में हर साल सैकड़ों पक्षी और आवारा पशु पानी की कमी से मर जाते हैं। तेजी से कम होते प्राकृतिक जल स्त्रोत और पेड़ों की कमी से इन बेजुबानों की स्थिति विकट हो गई है। गर्मियों में पक्षियों को भी प्यास अधिक लगती है जबकि पानी की उपलब्धता कम हो जाती है।

गर्मी में पानी को अमृत के समान माना जाता है और इस चिलचिलाती धूप में बार-बार प्यास लगना स्वाभाविक है। तापमान का पारा दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। विशेषकर राजस्थान में तापमान 46 डिग्री तक पहुँच गया है। बढ़ती गर्मी लोगों के साथ ही पक्षियों के लिए भी बेहाल करने लगी है। पक्षी इस मौसम में ज्यादा प्रभावित होते हैं। मानव जैसे-तैसे इस भीषण गर्मी से सुरक्षित रख पाता है, लेकिन आवारा पशु व पक्षियों के लिए ये गर्मी मुश्किलें पैदा करती हैं खाना और पानी की खोज में लगातार धूप में उड़ते रहने से वे कमजोर हो जाते हैं। इस तपती गर्मी में पेड़ों की लगातार कमी और सूखते जल स्त्रोत की वजह से पक्षी और अन्य जानवर आश्रय और दाना पानी की तलाश में इधर उधर भटकते रहते हैं। आदमी को प्यास लगती है तो वह कहीं भी मांग कर पी लेता है, लेकिन मूक पशु-पक्षियों को प्यास में तड़पना पड़ता है, हालांकि जब वे प्यासे होते हैं तो घरों के सामने दरवाजे पर आकर खड़े हो जाते हैं। कुछ लोग पानी पिला देते हैं तो कुछ लोग भगा भी देते है। इस गर्मी में पशु-पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए लोगों को प्रयास करना चाहिए।

गर्मियों का मौसम मानव के साथ-साथ पशु पक्षियों के लिए बहुत कष्टप्रद होता है। इस बार मार्च की अपेक्षा अप्रैल के महीने से तेज गर्मी देखने को मिली। गर्मी ने पशु-पक्षियों को चपेट में लेना शुरू कर दिया है। पशु-पक्षियों को जिंदा रहने के लिए हर रोज पानी की जरूरत होती है।

गर्मियों में हर साल सैकड़ों पक्षी और आवारा पशु पानी की कमी से मर जाते हैं। तेजी से कम होते प्राकृतिक जल स्त्रोत और पेड़ों की कमी से इन बेजुबानों की स्थिति विकट हो गई है।

गर्मियों में पक्षियों को भी प्यास अधिक लगती है जबकि पानी की उपलब्धता कम हो जाती है।

गर्मी की तपन के साथ बेजुबान जानवरों की परेशानियां बढ़ गयी। एक जमाना था जब देश भर में पानी के प्राकृतिक स्त्रोत मौजूद थे। मगर आज पानी के प्राकृतिक स्त्रोत न के बराबर हैं। जो बचे भी हैं उनका पानी पीने योग्य नहीं है। ऐसे में आप तो अपने घर में साफ पानी की व्यवस्था कर लेते हैं मगर जानवरों और पक्षियों को इन्हीं गंदे पानी के स्त्रोतों से प्यास बुझानी पड़ती है जिससे इनको फायदा कम होता है बल्कि ये बीमार भी हो जाते हैं। घरों के आँगन तथा छत पर पंछियों के लिए छोटे-छोटे पात्रों में जल भरकर रखना चाहिए, जिससे गर्मी में थक कर आये पक्षी जल ग्रहण कर पुन: अनंत आकाश में गोता लगा सकें। गर्मी की तपन से इन्हें बचाने के लिए जिस तरह इंसान को शुद्ध पानी और वायु की जरूरत होती है, उसी प्रकार गर्मी में पशु-पक्षियों के लिए पानी का इंतजाम लोग करते हैं, ताकि पक्षियों को भी जीवन मिल सके।

पशु-पक्षियों की सेवा करने वाले लोगों का मानना है घर की छतों पर पक्षियों के लिए दाना पानी रखने से घर में स्मृद्धि आती है। शास्त्रों में बेजुबान जानवरों की सेवा करने के लिए कहा गया है। इसका भी अपना धार्मिक महत्व है। साथ ही पशुओं और पक्षियों की सेवा करने से मन को काफी शांति मिलती है। ज्योतिष के अनुसार भी पक्षियों को पाने पिलाने के बहुत से फायदे हैं। पशु-पक्षियों को दाना और पानी पिलाने से भविष्य में आपके ऊपर आने वाली परेशानियां ये बेजुबान जानवर अपने ऊपर ले लेते हैं। इसके अलावा यह आपके ग्रह संबंधी दोषों को भी दूर करते हैं जिससे आपकी परेशानियां कम होने लगती है।

गर्मी शुरू होते ही समाज सेवी लोग जगह-जगह प्याऊ की व्यवस्था करते है। आज जरुरत इस बात की है की ठीक वैसे ही पक्षियों के लिए भी प्याऊ की व्यवस्था की जाये ताकि उन्हें भी गर्मी में साफ और ठंडा पानी मिल सके। साफ पानी न मिलने से उन्हें गर्मी में ज्यादा तकलीफ होती है। पानी खत्म होते ही दूसरा पानी और गर्म होते ही ठंडा पानी भरें, ताकि जानवरों को भी शुद्ध और ठंडा पानी मिल सके। घर के बाहर या बालकनी में छांव वाली जगह पर बर्तन में पानी भरकर रखें। पानी और दाना आदि रख रहे हैं तो नियमित तौर पर इसे बरकरार रखें। इस चीज को सुनिश्चित कर लें कि पानी का बर्तन जानवर या पक्षी के आकार के लिहाज से उचित हो, ज्यादा छोटा या ज्यादा बड़ा बर्तन भी ठीक नहीं। एक समय ऐसा भी था जब लोग अपने घरों के बाहर जानवरों के लिए पानी के छोटे कुंड बनाते थे मगर शहरीकरण के कारण यह व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी। गर्मी में पानी को अमृत के समान माना जाता है, मनुष्य को प्यास लगती है तो वह कहीं भी मांग कर पी लेता है, लेकिन मूक पशु पक्षियों को प्यास में तड़पना पड़ता है, हालांकि जब वे प्यासे होते हैं तो घरों के सामने दरवाजे पर आकर खड़े हो जाते हैं। कुछ लोग पानी पिला देते हैं तो कुछ लोग भगा भी देते है।

इस गर्मी में पशु-पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए लोगों को प्रयास करना चाहिए। मनुष्य तो पानी का संग्रहण कर रख लेता है, लेकिन परिंदे व पशुओं को तपती गर्मी में यहां-वहां पानी के लिए भटकना पड़ता है। पानी न मिले तो पक्षी बेहोश होकर गिर पड़ते हैं।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 27 मई, 2023

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, मघा नक्षत्र रात्रि 11:43 तक, व्याघात योग सांय 7:56 तक, वणिज करण प्रात: 7:43 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-मेष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा प्रात: 7:43 से रात्रि 8:50 तक है। आज सप्तमी तिथि में वृद्धि हुई है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:20 से 9:01 तक, चर 12:24 से 2:05 तक, लाभ-अमृत 2:05 से 5:28 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:09

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह

मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है। अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज कार्य योजनानुसार सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

वृष

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धन प्राप्त होगा।

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर "मैराथन" का आयोजन

अजमेर, (कासं)। विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक कार्यक्रम के तहत तंबाकू से होने वाले नुकसान के प्रति लोगों में जागरुकता लाने के लिए शुक्रवार को मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। मुख्य चिकित्सा एंव स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अनुज पिंगोलिया ने बताया कि

मैराथन दौड़ को हरी झंडी दिखाकर व आसमान में गुब्बारे छोडक़र जिला कलेक्टर डॉ. भारती दीक्षित रवाना किया।

- तंबाकू व नशा मुक्ति के प्रति आमजन को किया जागरूक

विश्व तंबाकु निषेध दिवस के उपलक्ष्य में तम्बाकु निषेध सप्ताह 25 मई से 31 मई तक निर्धारित की गई। इसमें विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। ब्लॉक स्तर पर भी एसडीएम की अध्यक्षता में ब्लॉक स्तरीय कमेटी का गठन कर गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं।

शुक्रवार को आमजन को जागरूक करने के लिए मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। मैराथन प्रात: पुरानी चौपाटी आनासागर लिंक रोड से शुरू हुई जो विभिन्न मार्गों से होते हुए अरबन हाट वैशाली नगर पर संपन्न हुई। मैराथन की समाप्ति पर जिला कलेक्टर डॉ. भारती दीक्षित ने संबोधित करते दौड़ में भाग लेने वाले युवाओं की हौंसला अफजाई भी की।

कलेक्टर डॉ. दीक्षित ने मैराथन विजेताओं को प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत भी किया।

इस अवसर पर जिला कलेक्टर ने खुले आसमान में रंगबिरंगे गुब्बारे छोड़ कर सभी से तंबाकू छोडे का आव्हान किया। सभी उपस्थित जनों ने तंबाकू सेवन नहीं करने एवं अन्य लोगों को इसके लिए जागरूक करने के लिए संकल्प लेते हुए हस्ताक्षर किए। मैराथन में लायंस क्लब, अजमेर साईकिल कम्युनिटी, नर्सिंग स्टूडेंट, चिकित्सा विभाग के अधिकारी, कर्मचारियों, विभिन्न संस्थाओं के सदस्यों सहित आमजन ने भाग लिया।

इस अवसर पर अतिरिक्त चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ संपत जोधा, लायंस क्लब की स्वस्थ्य भारत की डिस्ट्रिक चेयरपर्सन आभा गांधी, राजेंद्र गांधी, सुनील शर्मा, श्रीकिशन पारीक, जगदीश विजय, पुष्पा क्षेत्रपाल सहित अन्य मौजूद थे।

'स्काउटिंग हमें वास्तविक जीवन कला से रूबरू करवाती है'

रामगढ़ पचवारा, (निसं)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालय के तत्वावधान में मुख्य जिला आयुक्त गोविंद नारायण माली एवं जिला संगठन आयुक्त इंदु तंवर के निर्देशानुसार श्यामपुरा में राजकीय विद्यालय में चल रहे सात दिवसीय स्काउट प्रशिक्षण शिविर में सीबीईओ रामगढ़ पचवारा एवं प्रभारी कमिश्नर स्काउट मुरारी लाल जांगिड़, अतिरिक्त सीबीईओ बिहारी लाल वर्मा, स्काउट

स्काउट गाइड से जुड़े पदाधिकारियों ने शिविर का निरीक्षण किया।

- श्यामपुरा के राजकीय विद्यालय में सात दिवसीय स्काउट प्रशिक्षण शिविर आयोजित

सचिव श्रीकान्त शर्मा ने शिविर का निरीक्षण किया।

इसके दौरान सर्वप्रथम अतिथियों का शिविर प्रभारी रामकेश माली एवं सहायक प्रभारी रामखिलाड़ी मीना द्वारा स्कार्फ़, गॉर्ड ऑफ ऑनर एवं तिलक द्वारा स्वागत किया गया। रामगढ़ पचवारा सीबीईओ मुरारी लाल जांगिड़ ने बतौर मुख्य अतिथि झंडा रोहण कर शिविर का शुभारंभ किया। इस दौरान कार्यक्रम को संबोधित करते हुये एसीबीईओ बिहारी लाल ने कहा कि स्काउटिंग हमें वास्तविक जीवन कला से रूबरू करवाती है, हमें सेवा भाव सिखाती है एवं नर सेवा ही नारायण सेवा वाला भाव देती है। इस दौरान सीबीईओ मुरारी लाल जांगिड़ ने कहा कि स्काउटिंग जीवन में श्रेष्ठ अनुशासन सिखाती है, स्काउटिंग एक जीवंत आंदोलन है।

इस दौरान सहायक शिविर प्रभारी रामखिलाड़ी मीना ने शिविर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि मूलचन्द मीना टीटी कॉलेज के 33 स्काउट 27 गाइड सहित कुल 60 संभागी भाग ले रहे है। उन्होंने बताया कि शिविर कला, पायनियरिंग प्रोजेक्ट, 7 प्राथमिक 6 चिकित्सा, दिशा ज्ञान, खोज चिन्ह, स्काउटिंग उद्देश्य, सिद्धान्त आदि के बारे में जानकारी दी गयी। शिविर में कमल प्रकाश शर्मा, जितेंद्र शर्मा, सीमा मीणा, युवराज प्रजापत, मयंक शर्मा उपस्थित रहे।

केन्द्रीय कारागृह व महिला सुधारगृह का निरीक्षण

अजमेर, (कासं)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव व अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश रामपाल जाट द्वारा शुक्रवार को केन्द्रीय कारागृह का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान बंदियों से मुलाकात की गई व जिन बंदियों के विधिक सहायता के आवेदन पत्र नहीं भरे हुए हैं उनके आवेदन पत्र भरे जाने के निर्देश प्रदान किए। केन्द्रीय कारागृह में मुलाकात कक्ष में बंदयों से उनके परिवारजनों से मुलाकात करवाई जा रही थी।

साथ ही टेलिफोन के माध्यम से भी बंदियों को उनके परिवारजनों से बात करने के लिए कारागृह द्वारा व्यवस्था करवाई जा रही थी। बंदियों से उनके परिवारजनों से मिलने का समय सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक रहता है। प्रत्येक वार्ड की हेल्प डेस्क पंजिका बनाई गई है। जिसमें बंदी अपनी परेशानी के बारे में लिखते हैए उसकी भी जांच सचिव द्वारा की गई। केन्द्रीय कारागृह में बंदियों के लिए बनाए जा रहे भोजन की गुणवत्ता को भी जांचा गया। साथ ही केन्द्रीय कारागृह में वोकल बैंड प्रशिक्षण भी दिया जा रहा था और उद्योग शाल में सिलाईए सलून, हैंडीक्राफ्ट के अलग अलग प्रशिक्षण दिए जा रहे थे। केन्द्रीय कारागृह में कुल 1131 बंदी है जिनमें विचाराधीन बंदी 763, विदेशी बंदी 2, साधारण बंदी 77 लाचार बंदी 25, टाडा बंदी 3 है। साथ ही महिला सुधारगृह का भी निरीक्षण किया गयाए जिसमें महिला बंदियों से उनकी समस्याओं के बारे में पूछा और जिनके पास अधिवक्ता नहीं है उनके नि:शुल्क विधिक सहायता के आवेदन फॉर्म भरवाए जाने के निर्देश दिए और साथ ही महिला बंदियों को शिक्षा का महत्व भी समझाया गया।केन्द्रीय कारागृह व महिला सुधारगृह का निरीक्षण किया।

छात्र-छात्राओं का सम्मान

श्रीमाधोपुर, (निसं)। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के सभागार में राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षा 2023 के 12 वीं कला वर्ग के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। सम्मान समारोह की अध्यक्षता संस्था प्रधान राजेश कुमार अंकुर ने की, इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि घीसा राम जाट रहे। कला वर्ग में विद्यालय के टॉपर लवली शर्मा द्वारा 92.60 प्रतिशत, उर्मिला सैनी 89.80 प्रतिशत, राहुल कुमार सैनी 84.60 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर सम्मान किया गया। प्रधानाचार्य द्वारा 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले बालक बालिकाओं को हवाई यात्रा करवाएंगे तथा विनोद कुमार यादव उपाचार्य ने बोर्ड परीक्षा में 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं को 21 हजार रुपए देने की घोषणा की वही मुख्य अतिथि घीसाराम द्वारा 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले बच्चों को 21 सौ रुपए देने की घोषणा की।

रेलवे ने तिरुपति से जयपुर स्पेशल ट्रेन को वाया चिड़ावा होते हुए हिसार तक दिया विस्तार

चिड़ावा, (निसं)। रेलवे ने क्षेत्र को एक और बड़ी सौगात दी है। अब चिड़ावा से दक्षिण भारत के लिए सीधी ट्रेन मिल सकेगी। चिड़ावा से अब प्रसिद्ध तीर्थ स्थल तिरुपति के लिए सीधी रेल सेवा को रेलवे की मंजूरी मिली है। तिरुपति से जयपुर के बीच चलने वाली ट्रेन को हिसार तक विस्तार दिया गया है। रेलवे जीएम की ओर से जारी आदेश में ट्रेन संख्या 09715 हिसार – तिरुपति को 3 जून 2023 को जयपुर से शुरू होगी तो वहीं 6 जून 2023 को ट्रेन संख्या 09716 तिरुपति से रवाना होकर हिसार आएगी।

सप्ताह में एक दिन ही चलेगी ट्रेन:- लंबा सफर होने के चलते ये ट्रेन सप्ताह में एक दिन ही चलेगी। ये ट्रेन शनिवार को हिसार से दोपहर 2.10 बजे रवाना होगी और चिड़ावा शाम को सवा पांच बजे पहुंचेगी। तीसरे दिन सोमवार को 42.50 घंटे का सफर तय कर सुबह नौ बजे तिरुपति पहुंचेगी। वहीं तिरुपति से मंगलवार को शाम चार बजे रवाना होकर 40.30 घंटे का सफर तय कर गुरुवार को सुबह साढ़े नौ बजे चिड़ावा पहुंचेगी और दोपहर एक बजे हिसार पहुंचेगी। चिड़ावा सहित पूरे शेखावाटी क्षेत्र के लिए रेलवे की ये बहुत बड़ी सौगात है। काफी समय से ऐसी ट्रेन की मांग की जा रही थी। दरअसल शेखावाटी क्षेत्र के लोग धर्मकर्म में बहुत ज्यादा आस्था रखते हैं। इसके चलते बड़ी संख्या में दक्षिण भारत के धार्मिक स्थल तिरुपति, रामेश्वरम, मीनाक्षी मंदिर, पद्मनाभ मंदिर सहित अन्य मंदिरों में दर्शनार्थ हजारों की संख्या में श्रद्धालु हर साल यहां से दक्षिण भारत जाते हैं। इसके अलावा दक्षिण भारत के पर्यटक स्थलों पर भी काफी लोग हमारे क्षेत्र से भ्रमण के लिए जाते हैं। अब सीधी रेल कनेक्टिविटी होने से पर्यटकों और तीर्थ यात्रियों को काफी सहूलियत रहेगी।

नहर योजना को लेकर अलवर से निकली जनसम्पर्क यात्रा हिण्डौन पहुंची

भरतपुर, (निसं)। पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना संयुक्त मोर्चा की जनसम्पर्क यात्रा अलवर जिले से चलते हुए जिला कलेक्ट्रेट पर पर पहुंची। जहां पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना के संयुक्त मोर्चा के अध्यक्ष जवान सिंह मोहचा के नेतृत्व में पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना को राष्ट्रीय परियोजना घोषित करने एवं इस परियोजना में अति महत्वपूर्ण

ए.डी.एम. सिटी बीना महावर को मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा।

- इस परियोजना में अति महत्वपूर्ण बांधों को जोड़ने की मांग की

बांधों को जोड़ने की मांग को लेकर एडीएम सिटी बीना महावर को मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया।

ज्ञापन में बताया गया कि पूर्वी राजस्थान के 13 जिलों में पानी का अभाव है। पानी की कमी के कारण फसल उत्पादन, पशुपालन, उद्योग धंधे और जनजीवन पूरी तरह प्रभावित है। इन जिलों में भूजल स्तर बहुत नीचे जा चुका है। इस वजह से पेयजल की स्थिति बहुत चिंताजनक है। बोरवेल में लाखों खर्च करने के बावजूद किसानों को पानी नहीं मिल पा रहा है। इसके चलते काफी किसान कर्ज के बोझ तले दबते जा रहे है। पूर्वी राजस्थान के कई हिस्सों में तो किसान फसल ही नहीं कर पा रहे हैं। पिछले कई महीनों से पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना को लेकर 13 जिलों की आम जनता राज्य सरकार व केन्द्र सरकार से अनुरोध कर रही है। कि इस पर जल्द से जल्द कार्य शुरू कर पानी की समस्या का समाधान किया जाए।

फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 73 संख्याः 294 प्रभात जयपुर, शनिवार 27 मई , 2023 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 3.50 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

Tiger! Tiger! Burning Bright in the Fort Tonight

There was fresh evidence including peculiar body odour and probably the tigress must have been here till a little while ago.

Light Therapy

CLOTHING: Brocade Silk Saris

Silk saris need to be taken care of to ensure they do not get damaged

संकटग्रस्त गोल्डन मंकी (वानर की एक प्रजाति) का भविष्य सुनहरा नजर आ रहा है। इन वानरों के लिए संरक्षण प्रोग्राम बनाया गया है जो जल्दी ही कार्यान्वित कर दिया जाएगा। इस पांच वर्षीय एक्शन प्लान का उद्गम डायैन फॉसी गोरिल्ला फंड के बायो डायवर्सिटी प्रोग्राम के वैज्ञानिक डिओग्रेटिअस (डिओ) टुयोसिन्जाइज़ द्वारा 2004 में शुरु की गई रिसर्च से हुआ। उनकी शोध का लक्ष्य था गोल्डन मंकी का अध्ययन व संरक्षण। असल में ये वानर सिर्फ दो जंगलों में ही मिलते हैं, विरुंगा मैसीफ और गिश्वानी-मुकुरा नैशनल पार्क। ये वानर, जो कि ब्लू मंकी की उपप्रजाति हैं, एक मात्र ऐसे वानर हैं जो कि माउन्टेन गोरिल्ला की विरुंगा आबादी के साथ रहते हैं। डॉ. डिओ ने पता लगाया कि, इनकी आबादी घट रही है, जिसका प्रमुख कारण है आवास विनाश, भोजन की कमी और शिकार। गोल्डन मंकी की भोजन, रेंज, प्रजनन के पैटर्न आदि पर वर्षों की रिसर्च के बाद डॉ. डिओ ने एक विश्वसस्तरीय टीम बनाई है और इस टीम ने आई.यू.सी.एन. की गाइडलाइन्स के अनुसार स्थानीय समुदायों को साथ लेकर गोल्डन मंकी के संरक्षण की पहली कार्य योजना बनाई है। इस समय यहां गोल्डन मंकी के दो समूह हैं। असल में ये एक ही थे पर कृषि के लिए जंगल की जमीन में हुए परिवर्तन ने इन्हें दो पृथक समूहों में बांट दिया। गोल्डन मंकी की कुल आबादी लगभग 5,000 है, पर गिश्वाती में सिर्फ 170 गोल्डन मंकी हैं। डॉ. डिओ एवं अन्य शोधकर्ता रवांडा में गोल्डन मंकी समूहों की प्रतिदिन निगरानी कर रहे हैं। इन्होंने 400 से ज्यादा वानरों की पहचान की है और उन्हें नाम भी दिया है। डॉ. डिओ कहते हैं कि, यह एक्शन प्लान गोल्डन मंकी की आबादी को बनाए रखने की दिशा में एक बड़ा कदम है और गोल्डन मंकी के लिए जो भी खतरे हैं उन्हें खत्म करने के लिए इस योजना की बहुत ज्यादा जरुरत है।

राहुल गांधी की अमेरिका यात्रा का कार्यक्रम आगे खिसकाया गया

यह यात्रा 28 मई को प्रस्तावित थी, पर कार्यक्रम बदलने के बाद, राहुल गांधी के अमेरिका में निश्चित कार्यक्रमों का समय व स्थानों को भी ''रीशिड्यूल'' किया जा रहा है

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 मई। राहुल गांधी की अमेरिका के प्रस्तावित यात्रा, जो 28 मई को शुरु होनी थी, समझा जाता है कि आगे खिसका दी गई है तथा उनका अमेरिका का निर्धारित पुनः तय किया जा रहा है।

यह भी समझा जाता है कि राहुल गांधी अमेरिका तभी जायेंगे, जब पाँच चुनावाधीन राज्यों की मीटिंग हो जायेगी तथा चुनावी रणनीति की प्राथमिक रूपरेखा तैयार हो जायेगी। सूत्रों का कहना है कि इन मीटिंगों की नई तारीखें अभी तक तय नहीं हुई हैं किन्तु अब ये अगले सप्ताह ही होंगी।

सूत्रों ने यह भी कहा है कि नेतृत्व चाहता है कि जब मीटिंग हो, उस समय अशोक गहलोत तथा सचिन पायलट के बीच शान्ति-मसौदे का ब्लूप्रिंट तैयार हो जाये, जिससे उस पर काम शुरु हो जाये तथा पार्टी की राज्य इकाई अपने घर को व्यवस्थित करने का काम शुरु कर दे।

- अमेरिका रवाना होने से पहले राहुल गांधी चाहते हैं कि, जिन पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव इस वर्ष के अंत तक प्रस्तावित हैं, उन चुनावों के बारे में हाई कमान बैठक करके रणनीति फाइनल कर ले।
- अभी इन बैठकों की तारीख निश्चित नहीं की गयी है, पर, संभावना यह है कि, अब बैठकें अगले सप्ताह में आयोजित की जायेंगी।
- इसी संदर्भ में हाई कमान चाहता है कि, गहलोत व पायलट के बीच समझौता फाइनल हो जाये, जिससे कांग्रेस की राजस्थान इकाई चुनाव की तैयारी का काम शुरू हो सके।
- दूसरी ओर गहलोत अपने मित्रों के मार्फत किसी भी तरह का समझौता फलीभूत नहीं होने देना चाहते, पर, राहुल गांधी नहीं चाहते हैं कि, यह इम्प्रैशन जाए कि, राजस्थान में सब कुछ ठीक है और गहलोत की चलेगी और वे राजस्थान में पार्टी में एक मात्र कर्णधार हैं।

सूत्रों का कहना है कि अशोक गहलोत अपने वित्त-पोषित नेताओं, जो नेतृत्व के नज़दीक हैं, के जरिए किसी भी प्रकार के समझौते को बाधित करने की पूरी-पूरी कोशिश कर रहे हैं। लेकिन इस समय तक राहुल गांधी का दृढ़ निश्चय है किक राजस्थान में अब तक जैसी स्थिति नहीं चल सकती तथा गहलोत अपने तरीके चलते हुये, कांग्रेस पार्टी की नियति के एकमात्र नियन्ता नहीं बन सकते।

राहुल गांधी के सामने पासपोर्ट की समस्या थी। उन्हें अपना डिप्लोमेटिक पासपोर्ट ''सरैंडर'' करना पड़ा था तथा सामान्य पासपोर्ट के लिए आवेदन करना पड़ा। इसके लिए एन.ओ.सी. प्राप्त करने के लिए वे अदालत गये थे। दरअसल, उनके खिलाफ कई केस विचाराधीन हैं। लेकिन आज अदालत ने एन.ओ.सी. दे दी, लेकिन यह 10 वर्ष, जैसा कि राहुल ने आवेदन किया था, के बजाय तीन वर्ष के लिए ही मिली है। अब उन्हें सामान्य पासपोर्ट ही जारी किया जायेगा, क्योंकि वे अब सांसद नहीं रहे हैं।

क्या आपको कम सुनाई देता है।
कान की मशीनें
स्पीच थैरेपी
फ्री सुनाई की जाँच
TRIAL OF HEARING AID
CALL FOR APPOINTMENT
+91 94602 07080
PERFECT SPEECH AND HEARING SOLUTIONS
Tonk Road, JAIPUR | Vaishali Nagar, JAIPUR
www.perfecthearingsolutions.com

75 रूपए का सिक्का

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 मई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रविवार को नये संसद भवन के उद्घाटन के अवसर पर 75 रू. का सिक्का जारी करेंगे। प्रधानमंत्री उस दिन नये संसद भवन को राष्ट्र को समर्पित करेंगे। वित्त मंत्रालय के अनुसार, सिक्के के अग्र पृष्ठ के बीचों बीच ''अशोक स्तम्भ का शेर बना होगा'' तथा उसके नीचे ''सत्यमेव जयते'' उत्कीर्ण होगा। अशोक स्तम्भ के बायीं तरफ देवनागरी लिपि में

(शेष पृष्ठ 4 पर)

- वित्त मंत्रालय ने बताया कि, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रविवार को नई संसद के उद्घाटन की स्मृति में यह सिक्का जारी करेंगे।

मध्य प्रदेश के मु.मंत्री पर एक बार फिर तलवार लटकी

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 मई। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के सिर पर तलवार लटक रही है क्योंकि भाजपा के आंतरिक सर्वे में पता चला है कि अगर चौहान के नेतृत्व में आगामी विधानसभा चुनाव लड़े गए तो भाजपा लगभग 75 सीटें गंवा सकती है।

चौहान को हटाने की चर्चा इससे पहले जनवरी में चली थी, पर आर.एस.एस. के समर्थन की वजह से, उन्हें जीवनदान मिल गया था। इसके बाद चौहान ने राज्य में विकास यात्रा शुरु की, पर वे पर्याप्त समर्थन नहीं जुटा पाए। चौहान को हटाने की चर्चा अब फिर से होने लगी है क्योंकि सर्वे में पता चला है कि कर्नाटक की तरह मध्य प्रदेश में भी पार्टी के खिलाफ भारी सत्ता विरोधी लहर है।

अटकलें है कि मध्य प्रदेश भाजपा में जल्दी ही बड़ा फेरबदल हो सकता है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बी.डी. शर्मा को भी हटाया जा सकता है। भाजपा नेतृत्व में बड़ा बदलाव हो सकता है और यह पार्टी की रणनीति है, भावी विधानसभा चुनाव में स्थिति सुधारने के लिए।

मध्य प्रदेश में भाजपा में भारी गुटबाजी है। यहां ज्योतिरादित्य के समर्थन व विरोधी गुटों में जोरदार जंग छिड़ी हुई है। आशंका है कि पार्टी नेतृत्व सिंधिया को मुख्यमंत्री बना सकता है। प्रदेश भाजपा के कुछ गुट इन अटकलों को बढ़ावा दे रहे है कि सिंधिया भाजपा में नाखुश हैं और उनकी कांग्रेस में वापसी की संभावना है। गुटबाजी इतनी ज्यादा है कि भाजपा सांसद के.पी. यादव ने तो हाल ही में सार्वजनिक रूप से सिंधिया के खिलाफ कटु शब्दों का

(शेष पृष्ठ 4 पर)

- दोबारा उनको हटाने की चर्चा ने इसलिये जोर पकड़ा, क्योंकि नवीनतम सर्वे के अनुसार भाजपा को आगामी विधानसभा चुनाव में 75 सीटों का नुकसान होगा, अगर शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में लड़ा गया।
- चौहान को हटाने की अफवाह जनवरी में भी उठी थी, पर आर.एस.एस. के समर्थन के कारण, उनकी कुर्सी बच गयी थी।
- कर्नाटक की भांति मध्य प्रदेश में भी एन्टी इन्कमबैंसी का असर जोरों पर है।
- मध्य प्रदेश के प्रदेशाध्यक्ष बी.डी. शर्मा भी हटाये जा सकते हैं, पार्टी में आमूल परिवर्तन का नारा देकर।
- आदिवासी नेता व सांसद सुमेर सिंह सोलंकी को नया मु.मंत्री बनाये जाने के संकेत हैं, उन्हें संघ का भी पूरा समर्थन प्राप्त है।

भंवर जितेन्द्र सिंह के खिलाफ अब जमानती वारंट

बूंदी, 26 मई (निसं)। बूंदी राज परिवार की संपत्ति मामले में फर्जी दस्तावेज बनवाने के आरोप में न्यायालय में विचाराधीन मुकदमें में कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव भंवर जितेन्द्र सिंह एवं अन्य को अब जमानती वॉरंट से तलब किया जाएगा।

- ए.आई.सी.सी. के राष्ट्रीय महासचिव भंवर जितेन्द्र सिंह के खिलाफ, बूंदी राज परिवार के सम्पत्ति विवाद में फर्जी दस्तावेज बनाने के मामले में पहले चीफ जूडिशियल मजिस्ट्रेट ने गैर जमानती वारंट जारी किया था, जिसे जिला एवं सत्र न्यायालय ने जमानती वारंट में बदल दिया है।

जिला एवं सत्र न्यायालय ने गुरुवार को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट न्यायालय द्वारा इस मामले में जारी गैर जमानती वॉरंट को जमानती वॉरंट में तब्दील कर दिया गया। दिल्ली निवासी अविनाश

(शेष पृष्ठ 4 पर)

राहुल गांधी को अब नया पासपोर्ट प्राप्त करने की अनुमति मिली

दिल्ली के न्यायालय ने इजाज़त देते हुए, यह शर्त भी लगायी कि, पासपोर्ट तीन साल के लिये ही मान्य होगा, न कि दस साल के लिये, जैसे आम तौर पर होता है

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 मई। दिल्ली की एक अदालत ने आज राहुल गांधी को तीन साल के लिए रेग्यूलर पासपोर्ट बनवाने की स्वीकृति प्रदान कर दी तथा इस प्रकार, उनके लिये 30 मई को अमेरिका के तीन शहरों में छः दिन के लिये जाने का रास्ता साफ हो गया। ज्ञातव्य है कि संसद से डिसक्वालिफाइड होने के बाद एक सांसद के रूप में उनके विशेषाधिकार समाप्त हो गये हैं। सांसद के रूप में अपनी डिसक्वालिफिकेशन के बाद, उन्होंने अपना डिप्लोमेटिक पासपोर्ट ''सरैन्डर'' कर दिया था तथा अनापत्ति प्रमाण पत्र (नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट-एन.ओ.सी.) के लिये अदालत में अर्जी लगाई थी।

जज ने गांधी के वकील से कहा, ''मैं आपके प्रार्थना पत्र को आंशिक रूप से स्वीकृति दे रहा हूँ। 10 वर्ष के लिये नहीं, सिर्फ तीन वर्ष के लिये।''

पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष को अदालत की स्वीकृति की जरूरत इसलिये थी क्योंकि नैशनल हैरल्ड केस में अन्य लोगों के साथ वे भी आरोपी हैं। ज्ञातव्य है कि यह केस भाजपा नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने मनी लॉन्डरिंग तथा फंड्स के दुरूपयोग उनकी लिप्तता के सिलसिले में लगाया था। अदालत ने पूर्व भाजपा सांसद स्वामी से बुधवार को कहा था कि वे ए.ओ.सी. मांगने के गांधी के अनुरोध के संबंध में अपना जवाब शुक्रवार तक प्रस्तुत करें।

एडिशनल चीफ मेट्रोपोलिटन

(शेष पृष्ठ 4 पर)

- राहुल गांधी को पासपोर्ट पाने के लिये न्यायालय से अनुमति लेने की जरूरत इसलिये पड़ी, क्योंकि, वे सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी के साथ नैशनल हैरल्ड मुकदमे में आरोपित हैं। जैसा कि विदित ही है, भाजपा के पूर्व सांसद सुब्रमण्यम स्वामी ने नैशनल हैरल्ड पर मुकदमा दायर किया था। इस केस में फिलहाल राहुल जमानत पर रिहा हैं।
- न्यायाधीश वैभव मेहता ने राहुल गांधी को इजाज़त देते हुए, यह टिप्पणी भी की कि, 2015 में राहुल गांधी को जमानत देते हुए कोई भी शर्त नहीं लगायी गई थी और सुब्रमण्यम स्वामी की याचिका, जिसमें उन्होंने राहुल गांधी पर पाबंदियाँ लगाने की मांग की थी, को अस्वीकार कर दिया था।

न्यायपालिका के लिए केन्द्रीय योजना

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 मई। न्यायपालिका के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर सुविधाएं विकसित करने के लिए केन्द्रीय कानून व न्याय मंत्रालय को सैन्ट्रली स्पॉन्सर्ड स्कीम (सी.एस.एस.) स्थापना के बाद से ही जिला एवं अधीनस्थ न्यायालयों में न्यायिक बुनियादी ढांचे को रूपान्तरित कर रही है। न्यायालय के भवनों, डिजिटल कम्पयूटर कक्षों, वकीलों के सभा कक्षों, शौचालय परिसर तथा न्यायिक

(शेष पृष्ठ 4 पर)

- अदालतों में बुनियादी सुविधाओं के विकास के लिए ''केन्द्र प्रायोजित स्कीम'' घोषित की गई है।

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम को कॉमर्शियल कोर्ट से 100 करोड़ रू. की राहत मिली

न्यायालय ने आर्ब्रिट्रेटर द्वारा दिए गए फैसले को रद्द किया, जिसमें निगम को मैसर्स आशापुरा के पक्ष में 103 करोड़ रूपये जमा कराने का आदेश दिया गया था

- यादवेन्द्र शर्मा -

जयपुर, 26 मई। जयपुर महानगर के कॉर्मशियल कोर्ट ने राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (आर.एस.आर.टी.सी.) और मैसर्स आशापुरा ट्रेड एंड ट्रांसपोर्टर प्राइवेट लिमिटेड के बीच 103 करोड़ रूपये के चल रहे विवाद पर सुनवाई कर आदेश पारित किए हैं। अदालत ने आर.एस.आर.टी.सी. के पक्ष में फैसला दिया है और साथ ही निगम के विरूद्ध आर्बिट्रेटर द्वारा पारित निर्णय रद्द कर दिया है।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2018 में आर्बिट्रेटर ने यह फैसला सुनाया था कि आर.एस.आर.टी.सी. मैसर्स आशापुरा को 83,89,24,508/- रूपये 12 प्रतिशत ब्याज के साथ निविदा की शर्तों का उल्लंघन करने की वजह से भुगतान करें।

मामले के अनुसार वर्ष 2014 में आर.एस.आर.टी.सी. द्वारा पार्सल सर्विस शुरू करने के लिए निविदा आमंत्रित की गई थी। इस निविदा के तहत मैसर्स आशापुरा को पार्सल सर्विस शुरू करने के लिए चुना गया था और 29 सितम्बर 2014 को 'वर्क ऑर्डर' भी दे दिया गया था।

परन्तु मैसर्स आशापुरा द्वारा कहा गया कि उसे सेवा प्रदान करने में कोई फायदा नहीं हुआ बल्कि नुकसान उठाना पड़ा। यह मामला 2016 में आर्बीट्रेटर के समक्ष पहुंचा, जहां मैसर्स आशापुरा की ओर से कहा गया कि तीन साल के उनके आर.एस.आर.टी.सी. के साथ अनुबंध के दौरान उसे 76 करोड़ 33 लाख रूपये से भी अधिक का फायदा होना चाहिए था, परन्तु उसे सितम्बर 2014 से फरवरी 2016 के बीच केवल 4 करोड़ 16 लाख रू. की आय हुई और उसके करीब 7 करोड़ 55 लाख रू. का नुकसान उठाया।

मैसर्स आशापुरा ने आर्बिट्रेटर के समक्ष यह भी कहा कि उसे तीन वर्ष में पार्सल डिलेवर करने के लिए 10,717 बस यात्राओं की सेवा मिलनी चाहिए थी। यहाँ गौर फरमाने की बात यह है कि आर.एस.आर.टी.सी. और आशापुरा के बीच अनुबंध रद्द करने के लिए करीब डेढ़ साल के भीतर ही ऑर्बिट्रेशन के लिए पहुंच गया। दूसरी ओर आर.एस.आर.टी.सी. और मैसर्स आशापुरा के बीच हुए अनुबंध में यह कहीं नहीं कहा गया था कि पार्सल सेवा के कारण उठाये गए नुकसान की भरपाई आर.एस.आर.टी.सी. ही करेगी। कॉमर्शियल कोर्ट के पीठासीन अधिकारी अमित कुमार कड़वासा ने अपने आदेश के पेज नम्बर 47 में कहा है कि ''व्यापारिक संविदाऐं लाभ के निमित होती है परन्तु इनमें जोखिम सदा अन्तर्निहित रहता है। लाभ की प्रत्याशा में की गई संविदा से हर हाल में न्यूनतम

(शेष पृष्ठ 4 पर)

- मैसर्स आशापुरा ने राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम से पार्सल लाने और डिलीवरी करने का ठेका लिया था।
- मैसर्स आशापुरा ने पार्सल सर्विस का ठेका उठाने के बाद यह विवाद उठाया था कि, निगम की अव्यवस्थाओं के कारण वह ठेके की शर्तें पूरी नहीं कर पा रहा था और उसे 7 करोड़ 55 लाख रू. का नुकसान भी उठाना पड़ा था, जिसकी भरपाई के लिए उसने 103 करोड़ रू. का दावा किया था। इस दावे को सही मानते हुए आर्बिट्रेटर ने अपना ''अवॉर्ड'' सुनाया था।

नई संसद के उद्घाटन पर ''फ्लोर टैस्ट'', भाजपा का पलड़ा भारी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 मई। सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी ने रविवार को होने जा रहे नये संसद भवन के उद्घाटन समारोह में शामिल होने वाले राजनैतिक

(शेष पृष्ठ 4 पर)

- नई संसद के उद्घाटन में शामिल होने वाली पार्टियों की संख्या बढ़ कर 25 हो गई है। कुछ दलों ने अंतिम क्षणों में सहमति देकर सरप्राइज़ किया, उद्घाटन का बायकॉट करने वाली पार्टियों की संख्या भी 19 से बढ़ कर 21 हो गई है।

विरोधी गुट के लोगों की एन्ट्री के बाद भाजपा में राजे समर्थकों की एन्ट्री पर संशय

ज्वाइनिंग कमेटी ने कई और दिग्गजों की वापसी के संकेत दिए

जयपुर। प्रदेश में विधानसभा और लोकसभा चुनावों को लेकर भाजपा ने अपनी तैयारी शुरु कर दी है। इसके साथ ही प्रदेश में जहा बड़े नेताओं की सभाए हो रही है। वहीं दूसरी ओर पिछले विधानसभा चुनावों में भाजपा को छोड़ कर जाने वाले नेताओं की घर वापसी भी की जा रही है। इसके साथ ही अब चर्चाओं में है कि पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के समर्थकों को भाजपा में शामिल नही किया जा रहा है। जबकी हाल ही भाजपा में सुभाष महरिया के साथ अन्य कई नेता भाजपा में शामिल हुए है। वही वंसुंधरा समर्थक माने जाने वाले नेताओं के कई महिनों पहले ही भाजपा में आने के संकेत चल रहे थे लेकिन भाजपा के द्वारा उन नेताओं को तो शामिल नहीं किया लेकिन वंसुधरा के विरोधी गुट के माने जाने वाले पूर्व मंत्री सुभाष महरिया की भाजपा में एन्ट्री हुई है।

पिछले साल के अक्टूबर माह में उपचुनावों से ठीक पहले पश्चिमी राजस्थान के वरिष्ठ भाजपा नेता एवं पूर्व मंत्री रहे देवीसिंह भाटी की पार्टी में वापसी की चर्चाएं तेज हो गई थी, क्योंकि भाटी ने इस दौरान बकायदा बीकानेर शहर में पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे की उपस्थिति में एक बड़ी सभा आयोजित कर समर्थकों की भारी भीड़ जुटाकर अपनी ताकत का अहसास दिलाने का प्रयास किया था। इस सभा के बाद भाटी सहित अन्य वापसी का इंतजार कर रहे नेताओं के लिए वरिष्ठ संगठन पदाधिकारियों की मौजूदगी में अंतिम निर्णय लेने के लिए एक ज्वाइनिंग कमेटी गठित की गई थी।

■ भाजपा के कई नेताओं की घर वापसी की तैयारी

हालांकि भाटी शेखावटी के बड़े नेता माने जाते हैं। इनका बीकानेर के अलावा इनके आस पास के कई जिलों में प्रभाव है। भाजपा के वे पहले कई पदो पर रहे है। वही अजमेर संभाग के बडे नेता भवंर सिह पलाडा, उदयपुर संभाग के बड़े नेता रणधीर सिंह भीडर की भाजपा में वापसी की चर्चाए चल रही थी लेकिन इन दिनों इन चर्चाओं पर भी विराम सा लग गया है। इसके बाद कमेटी में शामिल सभी सदस्य कभी सरदारशहर उपचुनाव तो कभी गुजरात चुनाव और जन आक्रोश यात्रा सहित दूसरे संगठन संबंधी कामकाज में व्यस्त रहे। इसके चलते कमेटी किसी तरह का कोई निर्णय नहीं कर पाई। अब कमेटी सदस्यों की ताजा रिपोर्ट पर प्रदेश भाजपा संगठन ने पूर्व केंद्रीय मंत्री सुभाष महरिया को कांग्रेस से पुनरू भाजपा में शामिल किया है।

पूर्व मंत्री देवीसिंह भाटी के अलावा पूर्व मंत्री सुरेंद्र गोयल और पूर्व विधायक विजय बंसल एवं चार-पांच पूर्व मंत्री, पूर्व विधायक एवं कई पूर्व पार्टी पदाधिकारी भाजपा में पुनरू एंट्री की कतार में हैं। वहीं भाजपा का दामन छोड़ कांग्रेस ज्वाइन करने वाले मानवेंद्र सिंह एवं कई अन्य की भी आगामी विधानसभा चुनाव से पहले वापसी को लेकर राजनीतिक गलियारों में चर्चा है। पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं पूर्व सांसद सुभाष महरिया के पुनः भाजपा की सदस्यता ग्रहण करने के बाद अब कई घर वापसी का इंतजार कर रहे कई दिग्गज नेताओं की उम्मीदों को भी पंख लगे हैं।

शिविर में 521 यूनिट रक्तदान

जयपुर में झालाना केन्द्रीय विद्यालय नं. 3 के सामने सामुदायिक केन्द्र इन्दिरा नगर में शुक्रवार को राज्य सफाई कर्मचारी आयोग, उपाध्यक्ष दीपक डंडोरिया के जन्म दिवस पर उन्हें फूलमालाएं पहनाकर स्वागत किया गया।

जयपुर। सामुदायिक केन्द्र इन्दिरा नगर फैज झालाना केन्द्रीय विद्यालय नं. 3 के सामने आज जयपुर में राज्य सफाई कर्मचारी आयोग, उपाध्यक्ष दीपक डंडोरिया के जन्म दिवस से उपलक्ष में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसके तहत 521 यूनिट ब्लड एकत्र किया गया। सैकण्डो कार्यकत्ताओं ने रक्तदान शिविर में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया, इस सुअवसर पर उपाध्याक्ष, दीपक डंडोरिया द्वारा स्वच्छता सर्वेक्षण अभियान की शुरूआत भी की गई। जिसका मकसद स्वच्छता के प्रति लोगो के अन्दर जागरूकता पैदा करना है और जयपुर को आगामी स्वच्छता सर्वेक्षण की सूची में प्रथम स्थान पर लाना है। दीपक डंडोरिया ने बताया कि आज जन्म दिवस पर जयपुर शहर में सफाई को लेकर स्वच्छता अभियान की मुहिम की शुरूआत नगर निगम ठोटर क्षेत्र से की गई है। आमजन में किसी भी तरह की कोई परेशानी नहीं हो इसके लिए सफाई कर्मचारी आयोग द्वारा हेल्पलाईन नं. व ईमेल जारी किये गये है। अब आमजन को सफाई से संबंधित परेशानियों से राहत मिलेंगी,कार्यक्रम में आए हुए समस्त अतिथियों एवं जनप्रतिनिधियों ने सडक पर झाडू लगाकर सफ़ाई के प्रति लोगों को जागरूक भी किया और सकरात्मक संदेश दिया। जन्मदिवस के उपलक्ष में सम्पूर्ण राजस्थान में अपने-अपने जिलो में कार्यकत्ताओं ने रक्तदान शिविर, भोजन व फल वितरण का कार्यक्रम किया रक्तदान शिविर में अतिथि के रूप में मंत्री डॉ. महेश जोशी, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं भूजल विभाग, कृष्णा पूनिया विधायक सादुलपुर व अध्यक्ष राजस्थान राज्य क्रीडा एसोसिएशन, राजीव अरोड़ा अध्यक्ष लघु उद्योग विकास निगम, अर्चना शर्मी, अध्यक्ष राजस्थान समाज कल्याण विभाग, पवन गोदारा अध्यक्ष ओबीसी वित्त एवं विकास कॉरपोरेशन, विरेन्द्र पूनिया, द्रोणाचार्य अवार्डी व मुख्य खेल अधिकारी राजस्थान, मुनेश गुर्जर, महापौर, नगर निगम हैरिटेज, सम्मिलित हुए और अपनी शुभकामनाऐं प्रेषित की। सभी ने समस्त रक्त दाताओं की हौंसला अफजाई की एवं सभी रक्तदाताओं को प्रशस्ती पत्र देकर सम्मानित किया।

'इस निकम्मी सरकार को किसान सबक सिखाएगा'

जयपुर। भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेशाध्यक्ष हरिराम रणवां की अध्यक्षता में भाजपा किसान मोर्चा की 'एक दिवसीय प्रदेश कार्यसमिति' की बैठक जयपुर के न्यू सांगानेर रोड, रजत पथ के सामने स्थित न्यू हवेली होटल के पास 'शिव सरोवर' में आयोजित हुई। भाजपा किसान मोर्चा की 'एक दिवसीय प्रदेश कार्यसमिति' की बैठक का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन कर "वन्दे मातरम्" गान के साथ हुआ।

मोर्चा के प्रदेशाध्यक्ष हरिराम रणवां ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रदेश में कांग्रेस सरकार बनते ही किसानों की सम्पूर्ण कर्जामाफी की जायेगी, जो अभी तक नहीं की गई। आज भी किसान अपनी पूर्ण कर्जमाफी का इंतजार कर रहा है। किसानों के साथ वादाखिलाफी करने वाली ऐसी निकम्मी सरकार को आगामी विधानसभा चुनाव में प्रदेश का किसान सबक सिखाएगा।

बैठक में भाजपा प्रदेश महामंत्री (संगठन) चन्द्रशेखर ने कहा कि मोदी सरकार के सुशासन एवं सेवा के सफलतम 9 वर्ष पूर्ण होने पर मोदी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को भाजपा किसान मोर्चा के पदाधिकारी, कार्यकर्ता जन-जन तक पहुंचाये। बैठक में भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष माधोराम चौधरी ने किसानों के उत्थान में एफपीओ की भूमिका के बारे में विस्तार से बताया।

ऐसी क्या मजबूरी है कि ए.सी.बी. में पूर्णकालिक डी.जी. की नियुक्ति नहीं कर रहे? : डॉ. पूनिया

■ 'कांग्रेस सरकार की मंशा पर सवाल खड़े होते हैं, इसलिये केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर सचिवालय के पीछे बड़ी संख्या में नकदी और सोना मिलने की घटना के केन्द्रीय एजेंसी से जांच करवाने का आग्रह किया है'

जयपुर। उपनेता प्रतिपक्ष डॉ. सतीश पूनियां ने बयान जारी कर कहा है कि, राजस्थान में कांग्रेस पार्टी की अशोक गहलोत के शासन में राजस्थान की जनता ने सबसे अधिक पीड़ा भुगती है, वैसे तो किसान कर्जमाफी, बेरोजगारी, कानून व्यवस्था तमाम मुद्दे यक्ष प्रश्न की तरह खड़े हैं।

कांग्रेस शासन में भ्रष्टाचार का जिस तरीके से तांडव है, मुझे लगता है कि राजस्थान के इतिहास में कभी नहीं हुआ। अभी मुख्यमंत्री की नाक के नीचे सचिवालय के पीछे बड़ी संख्या में नकदी और सोना मिलना इस बात का प्रमाण है कि किस कदर भ्रष्टाचार ने घुसपैठ कर रखी है। जिस तरीके से राजस्थान में माफियाओं का राज है, अपराधियों का राज है, राजस्थान में पिछले कुछ अरसे से कोई भी पूर्णकालिक गृहमंत्री नहीं है। सचिवालय की घटना पर पुलिस के अधिकारी, चीफ सेक्रेटरी, डीजीपी प्रेस कांफ्रेंस करते हैं, जो एजेंसी है एसीबी की उसका कोई अधिकारी मौजूद नहीं होता है। पूर्णकालिक गृहमंत्री नहीं है समझ में आता है, लेकिन एसीबी के लिये डीजी स्तर का कोई सक्षम अधिकारी नहीं है, ऐसे में सवाल खड़ा होता है कि इतने बड़े भ्रष्टाचार के इतने बड़े एपिसोड में उसकी जांच कौनसी एजेंसी करेगी, कितने निरपेक्ष तरीके से करेगी, यह सवाल आज भी खड़ा हुआ है। इसलिये राजस्थान सरकार की मंशा पर सवाल खड़े होते हैं, इसलिये केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर आग्रह किया है कि किसी केन्द्रीय एजेंसी से इसकी जांच करवाई जाये।

प्रसिद्ध प्लास्टिक सर्जन डॉ. संदीपन मुकुल को मातृशोक

जयपुर (कासं)। प्रसिद्ध प्लास्टिक सर्जन डॉ. संदीपन मुकुल की माताजी डॉ. संतोष मुकुल का शुक्रवार को राजधानी जयपुर के फोर्टिस अस्पताल में निधन हो गया। वे 91 वर्ष की थीं और पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ थी। इस कारण उनका फोर्टिस अस्पताल में उपचार चल रहा था। शुक्रवार शाम 6 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। उनके निधन से चिकित्सा जगत में शोक की लहर छा गई। डॉ. संतोष मुकुल का अंतिम संस्कार शनिवार सुबह जयपुर में आगरा रोड स्थित पुरानी चुंगी मोक्षधाम में होगा।

ज्ञात रहे कि स्व. डॉ. संतोष मुकुल राजस्थान की अग्रणी व वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ चिकित्सक थीं। उन्होंने अपने जीवनकाल के 65 वर्ष चिकित्सा सेवा को समर्पित किए, उन्होंने जयपुर के सोडाला स्थित ई.एस.आई. मॉडल अस्पताल में चिकित्सा अधीक्षक पर भी सेवाएं दीं। हाल ही में उन्हें एम.एम.एस. मेडिकल कॉलेज की ओर से आयोजित प्लेटिनम जुबली समारोह में सम्मानित किया गया था। डॉ. संतोष मुकल, सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज की सबसे पुरानी स्टूडेंट रही थी।

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

परिणाम कैसे जारी किया?

जयपुर। हाईकोर्ट ने स्कूल व्याख्याता भर्ती परीक्षा, 2022 में आरपीएससी की ओर से घोषित की गई राजनीति विज्ञान विषय की उत्तर कुंजी में आपत्ति के बाद भी परीक्षा का अंतिम परिणाम जारी करने पर प्रमुख शिक्षा सचिव, शिक्षा निदेशक व आरपीएससी सचिव से जवाब मांगा है। जस्टिस सुदेश बंसल ने यह आदेश हरिशंकर वर्मा की याचिका पर दिए।

सरकार जल्द नुकसान का आंकलन करवा कर राहत दे : सी.पी.जोशी

■ 'जोधपुर जिले में हुई श्याम पालीवाल की हत्या के अपराधियों को जल्द से जल्द पकड़ा जाए'

जयपुर। राजधानी जयपुर सहित प्रदेश के कई जिलों में आंधी और तूफान से जनधन और पशुधन की हानि हुई है। प्राकृतिक आपदा से हुए इस नुकसान को लेकर प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने शुक्रवार को बयान जारी कर गहलोत सरकार से जल्द नुकसान का आकलन करवा कर प्रदेश की जनता को राहत देने की मांग की है।

जोशी ने कहा राजधानी जयपुर सहित प्रदेश के कई जिलों में बेमौसम बारिश और आंधी तूफान की वजह से पशुधन और जनधन की हानि हुई है। कई हिस्सों में लोगों के मकान ढहने से लोग बेघर हो गए तो कुछ लोगों की मौत हो गई। इतना ही नहीं इस प्राकृतिक आपदा में पधुओं की भी मौत हुई है। आसमानी आफत से हुए जनता के नुकसान की भरपाई के लिए अब भाजपा ने गहलोत सरकार के सामने जल्द नुकसान का आंकलन करवा कर मुआवजा देने की मांग रखी है। प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने कहा कि इस आपदा से जो नुकसान प्रदेश की जनता को उठाना पड़ा है, उसका सरकार जल्द आंकलन कराएं और लोगों को राहत मुहैया कराए। जोशी ने कहा कि संकट की घड़ी में भाजपा इन सभी प्रभावित लोगों के साथ हर संभव मदद के लिए खड़ी है। वही जोशी जैसलमेर दौरे पर तनोट माता मंदिर में दर्शन कर आशीर्वाद लिया और प्रदेशवासियों की खुशहाली की कामना की। इसके बाद बावलियान पोस्ट पर सैनिकों से मिलकर उनका अभिवादन किया। उन्होंने सैनिकों के लिए कहा कि वह सीमा पर अपना सर्वस्व अर्पण करके भारत की रक्षा करते हैं। इसके बाद रामदेवरा में बाबा रामदेव के दर्शन किए और पोकरण में मंडल कार्यसमिति को संबोधित किया। इस दौरान पत्रकारों से बात करते हुए प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी ने कहा कि प्रदेश की जनता प्रधानमंत्री मोदी के अजमेर दौरे को लेकर बहुत उत्साहित है। उन्होंने केंद्र सरकार की योजनाओं की प्रशंसा करते हुए उन्हें जनहितकारी बताया और कहा कि प्रधानमंत्री जो वादा करते हैं उसे पूरा करते हैं। इसलिए प्रदेश की जनता प्रधानमंत्री मोदी पर विश्वास करती है। इसके बाद प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी ओसियां के चेरेई गाँव पहुंचकर अभी हाल ही मैं हुई हत्या श्याम पालीवाल के निवास स्थान पर श्रद्धांजलि अर्पित की और परिजनों को ढांढस बंधाया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा अपराधों को लेकर इस सरकार को जगाना भी व्यर्थ जा रहा है। यह जाग ही नहीं रही है। अपनी कुर्सी की सुरक्षा के चक्कर में पूरे प्रदेश को गहलोत ने अपराध के अंधकार में धकेल दिया है।

आम सूचना सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्य श्री नौशाद बैग पुत्र मरहुम इकबाल बैग, निवासी-61, मुक्ति मार्ग, घाटगेट रोड, जयपुर के द्वारा एक निर्मित मकान नम्बर 59, फतेहटीबा, शमशान क.ब. मालियों की बगीची, आदर्श नगर, जयपुर में स्थित क्षेत्रफल 50 वर्गगज को मूल आवंटी मंगलचन्द सैन 69, मालियों की बगीची, आदर्श नगर, जयपुर से जरिये इकरारनामा दिनांक 16.08.2022 के द्वारा खरीद किया है। किसी व्यक्ति, बैंक, वित्तीय संस्था को मेरे अभिभाष्य द्वारा क्रय करने के सम्बन्ध में कोई आपत्ति हो तो वह मुझसे मेरे कार्यालय में आपत्ति से सम्बन्धित दस्तावेजात सहित उपस्थित होकर 3 दिवस के अन्दर संपर्क करें। उक्त अवधि के पश्चात कोई आपत्ति मान्य नहीं समझी जावेगी। सूचित रहे।
जयपुर (रईस अली बेहलीम) एडवोकेट
दिनांक-26.05.2023 मो. 9414447040

कार्यालय उप आवासन आयुक्त, वृत्त द्वितीय
राजस्थान आवासन मण्डल, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर
Email Id: dhcjpr2.rhb@rajasthan.gov.in. Phone No. 0141-2782772
क्रमांक-DHC-II/652 दिनांक-26.05.2023

जाहिर आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा आवास संख्या 123/244 मानसरोवर, जयपुर, क्षेत्रफल 64.190 वर्ग मीटर/वर्ग गज का आवंटन श्री हेमराज बैरवा पुत्र श्री रामनारायण को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 3414 दिनांक 18.11.1989 को जारी किया गया। इनके पश्चात राजस्थान आवासन मण्डल के पत्र क्रमांक 5365 दिनांक 25.02.2000 के द्वारा श्री सीताराम अग्रवाल पुत्र श्री मोहन लाल अग्रवाल के नाम नियमितिकरण पत्र जारी कर दिया गया। इनके द्वारा अपने स्वयं के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्रों का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर मे दिनांक 04.02.2000 को करवाया गया। इसके पश्चात श्री सीताराम अग्रवाल की मृत्यु पश्चात नाम हस्तान्तरण सम्बन्धी प्रपत्र एवं पंजीकृत हकत्याग पत्र प्रस्तुत कर उक्त आवास को अपने नाम हस्तान्तरण हेतु निवेदन किया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 7 दिवस में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर अपनी आपत्ती प्रस्तुत कर देंवे, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त वर्णित व्यक्ति/आवेदक श्रीमती शांति देवी पत्नी स्व.श्री सीताराम अग्रवाल के पक्ष में उक्त आवास के हस्तान्तरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। उक्त जाहिर आम सूचना उप आवासन आयुक्त महोदय से अनुमोदित है।
सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त द्वितीय, जयपुर

कार्यालय उप आवासन आयुक्त, वृत्त द्वितीय
राजस्थान आवासन मण्डल, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर
Email Id: dhcjpr2.rhb@rajasthan.gov.in. Phone No. 0141-2782772
क्रमांक-DHC-II/633 दिनांक-25.05.2023

जाहिर आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा आवास संख्या 47/90 मानसरोवर, जयपुर, क्षेत्रफल 189.00 वर्ग मीटर/वर्ग गज का आवंटन श्री उमेश प्रसाद माथुर पुत्र श्री लाडली प्रसाद माथुर को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 70 दिनांक 31.05.1991 को जारी किया गया। इनके द्वारा उक्त आवास का भौतिक कब्जा दिनांक 12.01.1998 को प्राप्त कर लिया गया था। इसके पश्चात राजस्थान आवासन मण्डल के पत्र क्रमांक 1475 दिनांक 23.08.1997 के द्वारा श्री अरूण माथुर पुत्र श्री उमेश प्रसाद माथुर का नाम जोड़ दिया गया। राजस्थान आवासन मण्डल के पत्र क्रमांक 2859 दिनांक 06.10.1998 के द्वारा श्री उमेश प्रसाद माथुर एवं श्री अरूण माथुर के नाम अदेय प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया। इनके द्वारा अपने स्वयं के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्रों का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर में दिनांक 23.03.2013 को करवाया गया। इसके पश्चात श्री उमेश प्रसाद माथुर की मृत्यु दिनांक 02.06.2018 को हो जाने के कारण इनके पुत्र श्री अरूण माथुर पुत्र स्व. श्री उमेश प्रसाद माथुर ने 1/2 अविभाजित हिस्से का मृत्यु पश्चात नाम हस्तान्तरण सम्बन्धी प्रपत्र एवं पंजीकृत हकत्याग पत्र प्रस्तुत कर उक्त आवास को अपने नाम हस्तान्तरण हेतु निवेदन किया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 7 दिवस में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर अपनी आपत्ती प्रस्तुत कर देंवे, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त वर्णित व्यक्ति/आवेदक श्री अरूण माथुर पुत्र स्व. श्री उमेश प्रसाद माथुर के पक्ष में उक्त आवास के हस्तान्तरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। उक्त जाहिर आम सूचना उप आवासन आयुक्त महोदय से अनुमोदित है।
सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त द्वितीय, जयपुर

कार्यालय उप आवासन आयुक्त, वृत्त द्वितीय
राजस्थान आवासन मण्डल, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर
Email Id: dhcjpr2.rhb@rajasthan.gov.in. Phone No. 0141-2782772
क्रमांक-DHC-II/653 दिनांक-26.05.2023

जाहिर आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा आवास संख्या 64/165 मानसरोवर, जयपुर, क्षेत्रफल 30.750 वर्ग मीटर/वर्ग गज का आवंटन श्री कृपा शंकर शर्मा पुत्र श्री रामजी लाल को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 8647 दिनांक 20.02.1986 को जारी किया गया। इनके द्वारा उक्त आवास का भौतिक कब्जा दिनांक 31.03.1986 को प्राप्त कर लिया गया था। इसके पश्चात राजस्थान आवासन मण्डल के पत्र क्रमांक 6220 दिनांक 29.03.2008 के द्वारा श्री कृपा शंकर शर्मा पुत्र श्री रामजी लाल के नाम अदेय प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया। इसके पश्चात श्री कृपा शंकर शर्मा की मृत्यु दिनांक 08.05.2021 को हो जाने के कारण इनके पुत्र श्री विपिन कुमार शर्मा पुत्र स्व. श्री कृपा शंकर शर्मा ने मृत्यु पश्चात नाम हस्तान्तरण सम्बन्धी प्रपत्र प्रस्तुत कर उक्त आवास को अपने नाम हस्तान्तरण हेतु निवेदन किया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 7 दिवस में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर अपनी आपत्ती प्रस्तुत कर देंवे, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त वर्णित व्यक्ति/आवेदक श्री विपिन कुमार शर्मा पुत्र स्व. श्री कृपा शंकर शर्मा के पक्ष में उक्त आवास के हस्तान्तरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। उक्त जाहिर आम सूचना उप आवासन आयुक्त महोदय से अनुमोदित है।
सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त द्वितीय, जयपुर

खोया पाया

मेरा राजस्थान फार्मेसी काउंसिल का रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट संख्या 42135 जयपुरमें कहीं खो गया है किसी को मिले तो सूचित करें। इंद्र सिंह शेखावत-8505088808

मैं जुगल तिवारी बहैसियत मु.आप सुरेन्द्र सोलंकी पुत्र श्री कपूर चन्द सुथार जो कि एक प्लाट सं. 355 योजना स्वर्ण विहार जे.डी.ए. का आवंटन पत्र गुम हो गया है। जिसकी एफ.आई.आर. दर्ज है मिलने पर सूचित करें। मो.9950329394

मैं शम्भु दयाल शर्मा मेरी दुकान नम्बर 5 व 6 आवासीय योजना श्रवण वाटिका लूनियावास बस स्टैड गोनेर रोड़ पर स्थित दुकानों का ओरिजिनल एग्रीमेंट लूनियावास बस स्टैंड पर गुम हो गया है मिलने पर सूचित करें। मो.8949999808

नाम परिवर्तन

I have changed my name from Rakhi Gaur to Rakhi Jodha W/o Harendra Singh Gaur for all purpose, Resi.-Flat No. 906, Shivgyan Heights, 9th Foor, DCM Circle, Ajmer Road, Jaipur.

I have changed my name from Neeraj Sawariya to Neeru Samariya D/o Mahesh Chand Samariya for all Purpose R/o- 2804 Purohit Ji Ka Chowk, Kalyan Ji Ka Rasta Jaipur Raj.

I changed my daughter name from Turvi to Turvi Dhaka, D/o Rajesh Dhaka M-1/16, LIC Flats, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur for all purpose.

मैंने अपना नाम अनिल कुमार खंडेलवाल से बदलकर अनिल खंडेलवाल पुत्र स्व. श्री दुर्गा प्रसाद खंडेलवाल रख लिया है। भविष्य में मुझे अनिल खंडेलवाल के नाम से जाना जावें। पता-6/346 विद्याधर नगर, जयपुर, राजस्थान

मैंने अपनी पुत्री का नाम मोरिस से बदलकर मोरिस ढाका पुत्री राजेश ढाका रख लिया है। भविष्य में मेरी अपनी पुत्री को इसी नाम से जाना जावे। निवासी एम-1/16, एलआईसी फ्लेट्स, सेक्टर 6, विद्याधर नगर, जयपुर

13 नए करोना संक्रमित मिले

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। प्रदेश में शुक्रवार को 13 नए करोना संक्रमित मिले हैं। इस दौरान 18 मरीजों के ठीक होने से एक्टिव केस घटकर 79 रह गए हैं। राज्य में पिछले चौबीस घंटों में करोना से एक संक्रमित की मौत हुई है।

प्रदेश में शुक्रवार को पांच जिलों में 13 नए संक्रमित मिले हैं। इससे पहले गुरूवार को 9 रोगी पाए गए थे। राज्य में आज सबसे ज्यादा 6 नए संक्रमित जयपुर में मिले हैं। इसके अलावा उदयपुर में 4 तथा अजमेर, जोधपुर और राजसमंद में 1-1 नया संक्रमित मिला है। इस बीच राज्य में 2583 कोविड जांच की गई है।

प्रदेश में शुक्रवार को 18 मरीज रिकवर हुए हैं। इसके साथ ही एक्टिव केस घटकर 79 रह गए हैं। इनमें 26 मामले जयपुर में बचे हैं। इसके अलावा उदयपुर में 16 और बीकानेर में 11 लोगों का इलाज चल रहा है। प्रदेश में पिछले चौबीस घंटों में करोना से जोधपुर में एक संक्रमित की मौत हो गई है। राज्य में अब तक इस बीमारी से 9734 लोगों की मौत हो चुकी है।

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड IDFC FIRST Bank
(पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफससी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है)
CIN : L65110TN2014PLC097792
पंजीकृत कार्यालय - केआरएम टॉवर्स, 8वीं मंजिल, हैरिंगटन रोड, चेटपेट, चैन्नाई-600031
फोन- +91 44 4564 4000 | फैक्स- +91 44 4564 4022

वित्तीय अस्तियों के प्रतिभूतिकरण व पुनर्निर्माण एवं ब्याज प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के सैक्शन 13 (2) के तहत नोटिस

निम्न ऋणग्रहिताओं एवं सहऋणग्रहिताओं ने नीचे वर्णित आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड का सिक्योर्ड ऋण (पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफससी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) से लिया था। निम्नलिखित ऋणग्रहितओं एवं सहऋणग्रहिताओं के ऋण उनकी अपनी-अपनी सम्पत्तियों के गिरवी रखने से सुरक्षित है। क्योंकि उन्होंने अपने-अपने ऋण एग्रीमेन्टस के नियम व शर्तों की पालना नहीं की है और अनियिमित हो गये है, उनके ऋणों को आरबीआई की गाइडलाइन्स के अनुसार एनपीए वर्गीकृत कर दिया गया है। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड (पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफससी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) को देय राशियाँ उनके पृथक नोटिस में लिखी गयी है तथा और विशेष रूप से निम्न सूचि में वर्णित है और उक्त राशियों पर आगे का ब्याज भी लागू होगा तथा वह उनकी अलग-अलग तिथियों से समझौते की प्रभावी दर से वसूला जायेगा।

क्रम संख्या	ऋण खाता संख्या	ऋण का प्रकार	ऋणग्रहिताओं एवं सहऋणग्रहिताओं के नाम	सैक्शन 13(2) के नोटिस की तिथि	सैक्शन 13(2) नोटिस के अनुसार बकाया राशि	सम्पत्ति का पता
1	32143405	सम्पत्ति पर ऋण	1. प्रकाश चंद वर्मा 2. कालू राम 3. मुन्नी देवी 4. विजय कुमार उर्फ गोविन्द	13.05.2023	2,97,415.39/-	प्लाट नं. 141, क्षेत्रफल 50 वर्गगज, सर्वे नं. 123/2004, अम्बेडकर कॉलोनी, वार्ड नं. 11, कच्ची बस्ती, अजमेर रोड, सोडाला, जयपुर, राजस्थान-302019 का पूरा व प्रत्येक भाग, और सीमाये है- पूर्व-प्लाट नं. 149, पश्चिम-प्लाट नं. 142, उत्तर-खुला, दक्षिण-रोड 50'0" चौडी

आपको एतद्द्वारा, इस प्रकाशन के 60 दिन के अन्दर, ऊपर सूचि में दर्शायी राशियों को उनकी प्रथम तिथि से, उस पर लगे आगे के समझौते में ब्याज दर तथा अन्य खर्चों, चार्ज आदि सहित आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लि. (पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफससी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) को भुगतान करने को कहा जा रहा है, यदि ऐसा नहीं हुआ, तो अधोहस्ताक्षरकर्ता को, एसएआरएफएइएसआई एक्ट के सैक्शन 13(4) तथा सैक्शन 14 के तहत, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड (पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफससी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) को देय राशि वसूल करने के लिये, गिरवी रखी सम्पत्तियों के खिलाफ कार्यवाही शुरू करने के लिये बाध्य होना पडेगा/इसके अलावा उक्त एक्ट के सैक्शन 13 (13) के तहत आप उक्त सम्पत्तियों को बिक्री/लीज अथवा किसी अन्य प्रकार से ट्रांसफर नहीं करने के लिये प्रतिबंधित है।

ह./-
दिनांक- 27.05.2023 प्राधिकृत अधिकारी
स्थान- जयपुर आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड
(पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफससी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है)

कार्यालय कृषि उपज मंडी समिति, लालसोट (दौसा)

क्रमांक-414/422 दिनांक-21.05.2023

निविदा-सूचना संख्या 02/2023-24

कृषि उपज मण्डी समिति, लालसोट में वित्तीय वर्ष 2023-24 में कार्य करने हेतु मोहरबन्द निविदाएं निम्नविवरणानुसार आमंत्रित की जाती है-

क्र. सं.	कार्य का विवरण	अनुमानित राशि (लाखों में)	निविदा शुल्क (रूपयों में)	UBN No.
1	बागवानी व्यवस्था	1.40	200	DAM2324SSOB00170
2	कम्प्यूटर आपरेटर व्यवस्था	4.50	500	DAM2324SSOB00169
3	प्याऊ मैन (जल व्यवस्था)	1.40	200	DAM2324SSOB00171
4	टेंकर से जलापूर्ति व्यवस्था	3.00	500	DAM2324SSOB00173
5	विद्युत एवं प्रकाश व्यवस्था रखरखाव	1.50	200	DAM2324SSOB00172
6	वाहन किराये व्यवस्था	3.00	200	DAM2324SSOB00174
7	क्योस्क ठेका (क्योस्क सं.01 से 06) तक मुख्य मंडी यार्ड	खुली बोली	200	DAM2324SSOB00175

1 निविदा प्रपत्र दिनांक 08.06.2023 को 12.00 पी.एम. तक कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते है तथा दिनांक 08.06.2023को 5.00 पी.एम. तक निर्धारित प्रारूप में निविदाए कार्यालयमें जमा करायी जा सकती है।
2 क्योस्क आवंटन हेतु खुली बोली का आयोजन दिनांक 09.06.2023 को 11.00 ए.एम. तथा अन्य सुविधाएं हेतु प्राप्त निविदाए दिनांक 09.06.2023 को 12.05 पी.एम. पर उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष (यदि कोई हो तो) खोली जायेगी।
3 निविदा सम्बन्धित जानकारी www.sppp.raj.nic.in पर तथा विभागीय वेबसाइट WWW.RSAMB पर उपलब्ध है।

ममता गुप्ता
सचिव
कृषि उपज मण्डी समिति, लालसोट

कार्यालय जिला परिषद (ग्रामीण विकास) दौसा

क्रमांक- जिपदौ/ग्रा.वि.प्र./लेखा/2023/1403 दिनांक-26.05.2023

खुली निविदा सूचना

अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में कम्प्यूटर्स, प्रिन्टर्स, स्केनर एवं कम्प्यूटर टेबल सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजनान्तर्गत क्रय करने के लिये खुली निविदाएआमंत्रितकी जाती है क्रय किये जाने वाली सामग्री की अनुमानित लागत 9.90 लाख रूपये होगी, सामग्री क्रय हेतु पंजीकृत निर्माता/विक्रेता एवं आपूर्तिकर्ता आदि द्वारा अपनी सीलबंद निविदायें समस्त आवश्यक दस्तावेजों सहित दिनांक 05.06.2023 को दोपहर 3.00 बजे तक कार्यालय में प्रस्तुत की जायेगी तथा उसी दिवस सायं 4.00 बजे क्रय समिति द्वारा उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जावेगी। क्रय सामग्री की दरें प्रति आईटम प्रस्तुत की जावेगी।

S.N.	Name of Items, Sze & Specifications	Qty.
1	Desktop ComputerBranded ie-Acer, Dell, Lenovo, HP. i5, 8GB, ITB HHD, 20/22 inch Led Monitor	8
2	All in One Computer Branded ie-Acer, Dell, Lenovo, HP i7-12700. 16GB RAM, 512GB SSD. Windows II Professional OS, 22/24 inch Led Monitor.	2
3	Scanner Branded ie-HP/Canon Scan Jet Pro 3000 s4 sheet-feed	2
4	Printer Branded ie-HP/Canon. All in One/wifi	2
5	Printer Branded ie-HP/Canon Simple/wit	4
6	Microtek/Zebronics/HP ie-UPS 600 VA	10
7	Wooden ply Computer Table, Size (4x3)Feet	10

निविदा शर्ते-
1 उक्त सामग्री कार्यालय में FOR उपलब्ध करानी होगी तथा कम्प्यूटर, प्रिंटर एवं स्केनर को चालू करके देने होंगे।
2 विवाद की स्थिति में मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद दौसा का निर्णय अंतिम होगा जो सभी को मान्य होगा।
3 फैक्स द्वारा निविदा स्वीकार नहीं की जायेगी। शर्ते निविदा मान्य नहीं होगी।
4 दरें सभी करो सहित प्रस्तुत की जावे तथा अतिरिक्त कोई चार्ज देय नहीं होगा।
5 क्रय किये जाने वाली सामग्री के तकनीकी स्पेसिफिकेशन एवं निविदा शर्ते अलग से SPPP पार्टल http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखे जा सकते है।
6 निविदा फार्म के साथ 2 प्रतिशत अमानता राशि का डीडी/बैंकर चैक मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद दौसा के नाम बनवाकर प्रस्तुत करना आवश्यक है।
7 निविदा फार्म कार्यालय समय में निर्धारित शुल्क 500/- जमा करवाकर प्राप्त किया जा सकता है।
8 विस्तृत तकनीकी स्पेसिफिकेशन निविदा शर्तो के साथ संलग्न है।
UBN No.- ZDA2324GSOB00024, NIB CODE-ZDA2324A0019

रामकिशोर मीना
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
जिला परिषद दौसा

तूफानी बारिश व अंधड़ से कहीं हरे-भरे पेड़ धराशायी हुए तो कहीं दीवारें गिरी

आमेर इलाके में टीनशेड पर दीवार गिरी; नीचे सो रहे युवक की मौत, परिवार के चार लोग घायल

जयपुर (कासं)। राजधानी में तूफानी बारिश और तेज अंधड़ ने गुरूवार रात को जबरदस्त कहर बरपाया। रामनिवास बाग, जे.एल.एन. रोड, नाहरगढ़ रोड, सी-स्कीम, विद्याधर नगर, दिल्ली बायपास रोड और बिंदायका क्षेत्र समेत कई जगहों पर हरे-भरे पेड़ धराशायी हो गए, जबकि आमेर इलाके में नाई की थड़ी स्थित एक मकान की दीवार टीनशेड के नीचे सो रहे परिवार पर गिर गईं, इससे 50 वर्षीय युवक की मौत हो गयी, जबकि उसकी पत्नी तसलीम, मां व चार बच्चे दब गए, जिन्हें उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी मिल गई है। तेज अंधड़ में शहर में घायल होकर 30 लोग सवाई मानसिंह अस्पताल पहुंचे, जिनमें से 11 को भर्ती करना पड़ा। शेष लोगों को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई।

उधर नाई की थड़ी में दीवार गिरने की सूचना पाकर जयसिंहपुरा खोर पुलिस व आपदा प्रबंधन की टीम मौके पर पहुंची थी। हादसे में 50 वर्षीय आबिद मोहम्मद की मौत हो गई। बाकी परिवार के सदस्यों को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दी। थानाधिकारी सतपाल यादव ने बताया कि आबिद शांति कॉलोनी में टीनशेड के घर में रहकर रिक्शा चलाते थे। गुरूवार रात को आई आंधी के बाद करीब 11 बजे बारिश के दौरान पास वाली दीवर टूटकर आबिद के टीनशेड पर गिर गई। जिससे अंदर सो रहे आबिद, पत्नी तसलीम, मां व चार बच्चे दब गए। पडौसियों द्वारा सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची टीमों ने सभी घायलों को हॉस्पिटल पहुंचाया।

उधर मौसम विभाग ने 27, 28 व 29 मई को जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, चूरू, झुंझुनूं, सीकर, अलवर, नागौर, दौसा, भरतपुर, धौलपुर व करौली जिलों में तीव्र मेघगर्जन, 50 से 60 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से तेज अंधड़ और तेज बारिश के साथ-साथ कहीं-कहीं पर ओलावृष्टि की चेतावनी जारी की है। बारिश और ओलावृष्टि के कारण जयपुर में न्यूनतम तापमान 17.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ है, करीब 2 इंच से ज्यादा बारिश दर्ज हुई है।

वहीं दूसरी ओर जयपुर-सीकर रोड स्थित कूकरखेड़ा अनाज मंडी में बारिश में भीगे हुए अनाज को सुखाने की कवायद में शुक्रवार को दिनभर किसान जुटे रहे। गुरुवार रात अचानक तेज हवा के साथ हुई बरसात ने ना केवल यहां की व्यवस्थाओं की पोल खोलकर रख दी, बल्कि किसानों की कड़ी मेहनत से उपजाया गया अनाज भीग गया, जिसके चलते किसानों और आढ़तियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा, शुक्रवार को किसान भीगी बोरियों में से गेंहू निकाल कर उन्हें सुखाने की मशक्कत करते रहे। उनका कहना था कि अब गेंहू सूखने के बाद उन्हें फिर से उनकी बोरियों में भरवाई करनी होगी, जिससे लेबर का खर्च दोगुना हो जाएगा। इतना ही नहीं अनाज मंडी में जगह जगह पानी भी भर गया, जिससे किसानों को खासी परेशानी हुई।

गुरूवार रात को अंधड़ की वजह से शहर में कई जगह पेड़-पौधे, दीवार, बिजली के पोल गिर गए, जिससे काफी नुकसान हुआ। एयरपोर्ट पर भी फ्लाइट्स का संचालन करीब एक घंटे तक प्रभावित रहा। नाहरगढ़ रोड पर बड़ा पेड़ नजदीक बनी दीवार पर गिर गया, इससे कई वाहन क्षतिग्रस्त हो गए, जबकि मकान की दीवार ढह गई। इस पेड़ के धराशायी होने से नजदीक बने मंदिर को भी नुकसान पहुंचा है। इसी तरह तेज आंधी के कारण जयपुर के राजापार्क में एक परिसर पर लगे मोबाइल टावर का एक हिस्सा टूटकर सड़क पर आ गिरा। गनीमत ये रही कि उस समय वहां से कोई व्यक्ति या वाहन चालक नहीं गुजर रहा था, वरना हादसा हो सकता था। इसी तरह दिल्ली रोड पर खोले के हनुमानजी मंदिन के पास बड़ा पेड़ गिरने से वहां कुछ देर के लिए ट्रैफिक जाम हो गया।

- **अंधड़ में घायल हुए 30 लोग एसएमएस अस्पताल में पहुंचे, जहां 11 को भर्ती किया गया और शेष को उपचार के बाद छुट्टी मिली**
- **जयपुर समेत 13 जिलों में 29 मई तक तेज अंधड़, बारिश और ओलावृष्टि की चेतावनी**
- **बारिश और ओलावृष्टि के कारण जयपुर में तापमान गिरा, करीब 2 इंच से ज्यादा बारिश दर्ज**

राजधानी में गुरूवार शाम को आए तेज अंधड़ ने रामनिवास बाग और नाहरगढ़ रोड पर हरे पेड़ को धराशायी कर दिया। उधर कूकरखेड़ा मंडी में बारिश में भीगी हुई अनाज की बोरियों को सुखाने के लिए शुक्रवार को दिनभर किसान जुटे रहे। फोटो-राष्ट्रदूत

आंधी-तूफान से राजधानी का बिजली तंत्र प्रभावित

- **मौसम में ठंडक बढ़ने से बिजली की 1145 लाख यूनिट खपत कम हुई**

जयपुर (कासं)। आंधी-तूफान, बारिश के कारण जयपुर जिले का बिजली तंत्र प्रभावित हुआ है। शहर के कई इलाकों में ही 14 घंटे तक बिजली गुल रही। जबकि, ग्रामीण क्षेत्र का 40 फीसदी इलाके में 24 घंटे बाद तक बिजली सप्लाई शुरू नहीं हो सकी। परेशान लोगों के इंजीनियरों और टोल फ्री नम्बर पर फोन घनघनाते रहे, लेकिन ज्यादातर को कोई उत्तर नहीं मिला। ऐसे में डिस्कॉम का बेहतर बिजली प्रबंधन का दावा राजधानी जयपुर में ही खोखला साबित होता रहा।

सूत्रों की मानें तो टोल फ्री नम्बर पर आम दिनों में शहर में 250 से 300 शिकायत दर्ज होती है, लेकिन शुक्रवार को यह आंकडा 2100 को पार कर गया। टोल फ्री नम्बर पर लोग फोन करते रहे, लेकिन हमेशा की तरह आप कतार में हैं... रिकॉर्डेड आवाज सुनाई देती रही। अभियंताओं ने फोन रिसीव नहीं किया। वहीं तेज अंधड के कारण रूफटॉप सोलर पैनल क्षतिग्रस्त हो गए। छत और खेतों में लगे सोलर पैनल उखड़ गए। तेज हवा के कारण कई जगह तो उडकर दूसरी जगह जा गिरे।

हालांकि मौसम में बदलाव के कारण बिजली खपत एक साथ 1145 लाख यूनिट घट गई। 23 मई को 3300 लाख यूनिट बिजली डिमांड थी, जो एक दिन पहले घटकर 2255 लाख यूनिट रह गई। इस कारण सूरतगढ़ की 2570 मेगावाट क्षमता की 7 यूनिट से उत्पादन विद्युत उत्पादन बंद कराना पड़ा है।

सार-समाचार

पार्षद कुसुम यादव बैठी धरने पर

जयपुर । किशनपोल जोन पर पार्षद कुसुम यादव के नेतृत्व में कार्यकर्ता बंधुओं व स्थानीय निवासियों ने विकास कार्यों में भेदभाव को लेकर धरना दिया। पार्षद कुसुम यादव ने बताया कि वार्ड के विकास कार्य ठप पडे हैं। सडकों में गड्ढे, केजीबी का रास्ता एमएसबी का रास्ता घी वालों का रास्ता में लगातार सीवर लाइन चौक पडी है बरसात का मौसम आने वाला है नालों की सफाई अभी तक नहीं हुई है नाले उफान पर है। नालियां टूटी पडी है। जौहरी बाजार में डिवाइडर व लाइट के पोल टूटे पडे है। स्वान बंदर सहित आवारा पशुओं का क्षेत्र में आतंक है। गंदी गलियों की मरम्मत की व्यवस्था ठप पडी है। किशनपोल जोन के बाबू, कर्मचारी अधिकारी नदारद मिले। जनता त्रस्त है अधिकारी अपनी मौज मस्ती में व्यस्त हैं।आमजन को पट्टो के लिए दर-दर भटकना पड रहा है। नदारद अधिकारियों के चलते पार्षद ने उपायुक्त की कुर्सी को ज्ञापन सौंपा।

विप्र महाकुंभ के पोस्टर का विमोचन

जयपुर । पूर्व चिकित्सा मंत्री एवं विधायक डॉ. रघु शर्मा ने 28 मई को विप्र फाउंडेशन की ओर से समता समरसता सर्वोदयता के उद्देश्य को लेकर आयोजित किए जा रहे संभाग स्तरीय तृतीय विप्र महाकुंभ थानागाजी अलवर के पोस्टर का विमोचन किया गया इस अवसर पर विप्र फाउंडेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. के के शर्मा, प्रदेश मुख्य संगठन उमेश तिवारी आरोग्य सारथी योजना के राष्ट्रीय प्रभारी डॉ. गोविंद शर्मा, प्रदेश महासचिव सुनील शर्मा एवं प्रदेश सचिव विष्णु शर्मा सहित अनेक विप्र बंधु उपस्थित रहे।

'माहेश्वरी स्कूल का शानदार परिणाम'

जयपुर । श्री माहेश्वरी उच्च माध्यमिक विद्यालय, तिलक नगर, जयपुर के विद्यार्थियों ने 12वीं कला संकाय के बोर्ड परीक्षा परिणाम में शानदार प्रदर्शन करके विद्यालय का नाम रोशन किया। विद्यालय के मानद् सचिव कमल किशोर साबू ने बताया कि परीक्षा परिणाम में विद्यालय की छात्रा अमीषा कँवर राठौड़ ने 98.6 अंकों के साथ कला वर्ग में विद्यालय स्तर पर शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। साथ ही कला संकाय में पवित्रा 95.8, जया सैनी 93.6, पूर्वी शर्मा 92.4, कुशल शर्मा 92.2, अमित सिंह 91.8, हर्षना शर्मा 91.8, डिम्पल शर्मा 90.8, आशु सिंह 90.6 ने 90 से अधिक अंक प्राप्त करके विद्यालय को गौरवान्वित किया।

गौकाष्ठ उपयोग कर पेड़ बचाएं

जयपुर । पर्यावरण संरक्षण एवं गोसंवर्द्धन समिति के सद्प्रयास से जयपुर विद्याधर नगर सैक्टर 4,10 व मुरलीपुरा एवं झोटवाडा के मुक्तिधाम पर गौकाष्ठ (गोवर की लकडी) उपलब्ध करवाई जा रही है जिससे अंतिम संस्कार में जलाई जा रही लकडी बच रही है। समिति के संयोजक राजकुमार टीबडेवाल ने बताया कि एक अंतिम संस्कार गौकाष्ठ में करवाने पर पन्द्रह वर्ष आयु के दो पेडों को जीवनदान मिलता है। संरक्षक अध्यक्ष सुरेश कुमार भुवालका ने कहा कि इस सप्ताह में एक संस्कार प्रतिदिन के हिसाब से अब तक 15-16 पेडों को गौकाष्ठ के माध्यम से करवाया जा सका है। उपाध्यक्ष तुलसीराम गुप्ता ने गौकाष्ठ से ही अंतिम संस्कार करवाने हेतु जनचेतना लाने की योजना बनाकर गौकाष्ठ से ही अंतिम संस्कार करवाने की बात कही जिससे पेडों एवं गायों की रक्षा हो सके।

दो किलो सोने के साथ तस्कर गिरफ्तार

जयपुर । सांगानेर एयरपोर्ट थाना पुलिस ने दुबई से सोने की तस्करी कर जयपुर ला रहे व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उसके पास से 2 किलो 200 ग्राम सोना बरामद किया हैं। आरोपी टार्च में छिपाकर सोना लाया था। पकड़े गए सोने की कीमत एक करोड़ चालीस लाख रुपए बताई जा रही हैं। एडिशनल कमिश्नर कैलाश चन्द्र विश्नोई ने बताया कि पुलिस को 25 मई को सूचना मिली थी कि दुबई से तस्करी कर सोना लाया जा रहा है। इस पर पुलिस ने दुबई से आने वाली फ्लाइट पर नजर रखनी शुरू कर दी। डीसीपी ज्ञान चन्द्र यादव ने बताया कि इस मामले में तस्कर बैरासर राजगढ चुरू निवासी अनिल कुमार को गिरफ्तार किया हैं। पुलिस ने तस्कर के कब्जे से 2 किलो 200 ग्राम सोना बरामद कर लिया। पुलिस ने बताया कि पकड़े गए सोने की कीमत 1 करोड़ 40 लाख रुपए है। पुलिस ने तस्करी करने वाले अनिल कुमार से पूछताछ की तो उसने बताया कि दोस्त ने टार्च यह कहकर दी थी कि वह उसे घर तक पहुंचा दें। आरोपी ने बताया कि टार्च देने वाला दोस्त उसके गांव का रहने वाला है।

दोस्त के हत्यारे 4 दिन के रिमांड पर

जयपुर । सांगानेर में हनुमान मीणा की एक करोड़ रुपए की फिरौती के लिए अपहरण कर हत्या करने वाले तीनों दोस्तों को शुक्रवार को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उन्हें सांगानेर थाना पुलिस को चार दिन के रिमांड पर सौंपा है। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त कैलाश चन्द्र विश्नोई ने बताया कि साजिश का मुख्य आरोपी एडवोकेट दिवाकर टांक ने खुद को बचाने के लिए पूरी तैयारी कर रखी थी। आरोपी दिवाकर 22 को अपहरण करने से दो दिन पहले 20 मई को बूंदी अपने ननिहाल चला गया। फिर 22 मई की तड़के ननिहाल में अपना मोबाइल छोड़कर कार से जयपुर के लिए रवाना हो गया। सभी टोल नाको से बचता हुआ और कच्चे रास्ते से होते हुए जयपुर पहुंचा, ताकि उसकी लोकेशन बूंदी में आए। 22 मई की सुबह हत्या करने के अगले दिन मृतक के परिवार के पास पहुंच गया और उनके साथ हनुमान की तलाश में जुटा रहा। वह सांगानेर थाने भी पहुंचा। यहां तक की बृजभान सिंह के मोबाइल से ही हनुमान को फोन कर फ्लैट पर बुलाया था। पकडे जाने के बाद आरोपी दिवाकर साजिश में शामिल होने से इनकार कर दिया। लेकिन प्रताप नगर स्थित सन स्क्वायर अपार्टमेंट के सीसीटीवी कैमरे में आरोपी दिवाकर कैद हो गया।

महिला को घायल कर दुष्कर्म करने वाला बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। राजधानी के मानसरोवर इलाके में घर में घुसकर महिला को घायल कर दुष्कर्म करने के मामले में पुलिस ने आरोपी को बूंदी से गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी पूर्व में नकबजनी और चोरी के मामले में टोंक और अजमेर में गिरफ्तार हो चुका है। वह देवली थाने का स्थाई वारंटी है।

डीसीपी साउथ योगेश गोयल ने बताया कि 23 मई को पीड़िता ने पर्चा बयान में बताया था कि रात को वह घर पर सो रही थी। करीब साढ़े ग्यारह बजे उसका पति ऑटो लेकर चला गया। उसके बाद वह घर में अकेली सो रही थी। तभी रात 12 बजे एक व्यक्ति कूलर वाली खिड़की के रास्ते से अंदर आया और उसका मुंह और गला दबा दिया। पीड़िता ने उसने हटाने की कोशिश की। इस पर उसने उसके गले पर ब्लैड से कट मार दिया, जिससे महिला के खून निकल गया। आरोपी बोला अगर तू चिल्लाई तो वह उसे जान से मार देगा। मेरा एक साथी बाहर खड़ा है। इसके बाद आरोपी ने पीड़िता के साथ गलत काम किया। जाते समय वह उसके दोनों मोबाइल लेकर चला गया और कमरे को बाहर से बंद कर दिया। किसी तरह वह खिड़की से बाहर निकली और कमरे का दरवाजा खोला। 9 महीने के बच्चे को लेकर बाहर आकर सामने थड़ी में सो रहे अपने ससुर को जगाया और पति को फोन किया। एसीपी मानसरोवर अभिषेक शिवहरे ने बताया कि मामले की गंभीरता को देखते हुए थानाधिकारी हरिपाल सिंह, एसआई वन्दना के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। टीम ने 200 से ज्यादा कैमरों को खंगाला। पुलिस ने आरोपी को चिन्हित कर उसे बूंदी से गिरफ्तार कर लिया।

'राजस्थान स्लीप सिम्पोज़ियम' 28 को

जयपुर । स्लीप एजुकेशन एंड रिसर्च सोसायटी राजस्थान और साऊथ ईस्ट एशियन अकेदमी ऑफ स्लीप मेडिसिन की ओर से 28 मई को 'राजस्थान स्लीप सिम्पोज़ियम' आयोजित किया जायेगा। दुर्गापुरा स्थित होटल रॉयल ओर्चिड में सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक यह कार्यक्रम होगा।

आयोजन अध्यक्ष डॉ. रजनीश शर्मा और सचिव डॉ. शिवानी स्वामी ने बताया कि उद्घाटन सत्र सुबह पौने 10 बजे होगा। इसके बाद दो विषयों पर स्पीकर डॉ. प्रमोद दाधीच व डॉ. रजनीश शर्मा तथा चेयरपर्सन डॉ. शीतु सिंह, डॉ. राजीव कटारा, डॉ. बी.बी.माथुर, डॉ. पंकज गुलाटी, डॉ. शुभ्रा जैन व डॉ. विजयंत सोलंकी रूबरू होंगे।

वेद प्रकाश यादव को कोर्ट ने जेल भेजा

जयपुर (कासं)। राजधानी जयपुर के योजना भवन में डीओआईटी के बेसमेंट में अलमारी से 2.31 करोड़ रुपए और एक किलो सोना मिलने के मामले में गिरफ्तार संयुक्त निदेशक वेद प्रकाश यादव को दो दिन का रिमांड पूरा होने पर शुक्रवार को एसीबी ने कोर्ट में पेश किया। जहां से उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया।

एसीबी ने कोर्ट को बताया कि यादव से पांच दिन रिमांड के दौरान पूछताछ की जा चुकी है। अब उन्हें रिमांड की आवश्यकता नहीं हैं। एसीबी सूत्रों के अनुसार आरोपी ने जांच में कोई सहयोग नहीं किया।

- **योजना भवन के बेसमेंट में अलमारी से 2.31 करोड़ रुपए व एक किलो सोना मिलने का मामला**

उससे पैसों के बारे में कई बार पूछा गया लेकिन उसके द्वारा कोई जवाब सही नहीं दिया। अब एसीबी आरोपी वेद प्रकाश यादव के जब्त मोबाइल, लेपटॉप सहित अन्य उपकरणों की एफएसएल से जांच करवा रही है।

डॉक्टर की गैर मौजूदगी के लिए गाइडलाइन क्यों नहीं?

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने डॉक्टर की गैरमौजूदगी यानि उनके अनुपस्थित या अवकाश पर रहने के दौरान नर्सिंग अधिकारी को डॉक्टर के कार्य दिए जाने के संबंध में कोई गाइडलाइन नहीं होने पर प्रमुख चिकित्सा सचिव, चिकित्सा निदेशक व अन्य से जवाब देने के लिए कहा है। जस्टिस सुदेश बंसल ने यह आदेश खुशीराम मीणा की याचिका पर दिए।

याचिका में अधिवक्ता सुखदेव सिंह सोलंकी ने बताया कि डॉक्टर के अनुपस्थित रहने के दौरान नर्सिंग अधिकारी को डॉक्टर के कार्य करने का निर्देश देते हुए बाध्य किया जाता है। नर्सिंग अधिकारी को ओपीडी/आईपीडी व आपातकालीन स्थिति में चिकित्सा अधिकारी के कार्यों के अनुरूप मरीजों को देखने का निर्देश दिया जाता है। जबकि यह कार्य नर्सिंग अधिकारी की जिम्मेदारी में नहीं आता। वहीं सरकार ने नर्सिंग अधिकारी को डॉक्टर के कार्य दिए जाने को लेकर अभी तक ना तो कोई गाइडलाइन बनाई है और ना ही कोई निर्देश ही दिए हैं। ऐसे में नर्सिंग अधिकारियों से डॉक्टर की अनुपस्थिति में उनका काम नहीं कराया जाए या चिकित्सा विभाग को यह गाइडलाइन बनाई जानी चाहिए कि डॉक्टर की अनुपस्थिति में नर्सिंग अधिकारी मरीजों को ओपीडी/आईपीडी आपातकालीन स्थितियों को देखेंगे और मरीजों को दवाइयां भी लिखेंगे। यह भी तय किया जाए कि वे कौनसी दवाइयां मरीजों के लिए लिखें और कौन सी दवाई नहीं। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया है।

क्यों ना आर.ओ. ई.ओ.परीक्षा को रद्द कर दिया जाए?

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने मुख्य सचिव, आरपीएससी और प्रमुख यूडीएच सचिव को नोटिस जारी कर पूछा है कि परीक्षा में नकल होने और दूसरी पारी में कुछ प्रश्नों के रिपीट होने पर क्यों ना राजस्व अधिकारी व अधिशासी अधिकारी भर्ती, 2022 की परीक्षा को रद्द कर दिया जाए। जस्टिस सुदेश बंसल की एकलपीठ ने यह आदेश भारत सिंह मीणा की याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता प्रेमचंद देवन्दा ने अदालत को बताया कि आरपीएससी ने राजस्व अधिकारी ग्रेड-द्वितीय और अधिशासी अधिकारी के पदों के लिए गत 14 मई को दो पारियों में लिखित परीक्षा आयोजित की थी। जिसमें करीब तीन लाख अभ्यर्थी शामिल हुए। याचिका में कहा गया कि भर्ती परीक्षा में आरपीएससी की ओर से प्रथम परीक्षा में पूछे गए कुछ प्रश्नों को हूबहू दो घंटे बाद आयोजित दूसरी पारी में भी पूछ लिया गया। जिसके चलते दूसरी पारी के अभ्यर्थियों को पहली पारी का प्रश्न पत्र का अध्ययन कर लेने से फायदा हो गया। ऐसे में दूसरी पारी के अभ्यर्थियों के पहली पारी के अभ्यर्थियों के मुकाबले अधिक अंक लाने की संभावना बढ गई है। आरपीएससी की ओर से बनाए गए इस दोषपूर्ण प्रश्न पत्र के चलते पहली पारी के अभ्यर्थियों को नुकसान होगा।

जे.ई.सी.आर.सी. यूनिवर्सिटी में 2050 ऑन कैंपस ऑफर्स

चयनित विद्यार्थियों में से 85 प्रतिशत छात्राओं को मिले ऑफर लेटर

जयपुर (कासं)। जेईसीआरसी हर दिन बना रही है नए रिकॉर्ड, ग्लोबल एमएनसी रिक्रूटर्स और फॉर्च्यून 500 कंपनीज की पसंद बन रहे जेईसीआरसी के विद्यार्थी।

जेईसीआरसी में हर बार की तरह एक बार फिर प्लेसमेंट के नए रिकॉर्ड बनाने का सिलसिला शुरू हो गया है। 30 अप्रैल 23 तक 170 से अधिक वैश्विक कंपनियों जैसे अमेज़न, एचपी, ट्रिलॉजी, सेलेबल टेक्नोलॉजीज, नेस्ले, आईबीएम, ज़ेबिया, सेल्सफोर्स, एचडीएफसी, टाटा एआईजी, ज़ी स्टूडियोज, मिंत्रा, कोटक महिंद्रा, जियो, सेपिएंट, फ्यूचर फर्स्ट और ताज होटल 186 दिन में 2050 ऑन-कैंपस ऑफ़र बच्चों को प्रदान किये है, इनमें से 250 ऑफर 10 एलपीए से ऊपर के हैं जो विवि के लिए गर्व की बात है।

वाइस चेयरपर्सन,जेईसीआरसी, अर्पित अग्रवाल ने कहा कि ये उपलब्धियां विद्यार्थियों और प्लेसमेंट सेल की अथक मेहनत का परिणाम हैं। हमारे विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा दिखाने के अधिक अवसर मिले हैं। इस सफलता का श्रेय प्री प्लेसमेंट ट्रेनिंग और विद्यार्थियों की कठिन मेहनत को जाता है। उन्होंने कहा कि इसे हासिल करने के लिए 16 सदस्यों की टीम विशेष रूप से काम कर रही है, साथ ही उन्होंने कैंपस रिक्रूटमेंट ट्रेनिंग को प्लेसमेंट को पिलर बताया। कंपनी की मांग और क्वालिफिकेशन को पूरा करने के लिए जेईसीआरसी के ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट ऑफिस की ओर से सीआरटी कक्षाएं चलाई जाती है जहां विद्यार्थियों को इंडस्ट्री में मांग के मुताबिक तैयार किया जाता है। इस दौरान एक्सपर्ट विद्यार्थियों को इंटरव्यू फेस करने के टिप्स देते हैं।

हथियार समेत दो गिरफ्तार

जयपुर । मुहाना पुलिस और डीएसटी साउथ ने ऑपरेशन आग के तहत दो बदमाशों को गिरफ्तार कर उनके पास से दो देशी पिस्टल और 22 जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। प्रारम्भित पूछताछ में सामने आया कि ये बदमाश मध्यप्रदेश से हथियार लेकर आए थे। गिरफ्तार बदमाश शेखर सिंह राजावत उर्फ सूरजू बिहारी के खिलाफ जयपुर कमिश्नरेट में मारपीट,हत्या के प्रयास के करीब एक दर्जन मामले दर्ज हैं वहीं आरोपी विष्णु कुमार गुर्जर के खिलाफ हत्या और अवैध हथियारों के मुकदमे दर्ज हैं। दोनों बदमाशों के पास से पुलिस को दो देशी पिस्टल 22 जिंदा कारतूस बरामद हुए।

ARBiT
it happens here...

Better Speech and Language Month

Around five percent of the world's population experience hearing loss. While five percent of the population is also thought to experience problems with speech. With communication being so important to our lives, Better Speech and Language Month sets out to raise awareness of issues surrounding communication problems such as an inability to hear properly or to speak effectively. So take stock of your hearing and speech and get help if necessary.

राष्ट्रदूत
SATURDAY
27 May 2023
A-B

#CLOTHING

Brocade Silk Saris

Since it is an organic fabric, you must take care of your silk outfits to preserve and save them from agents of deterioration.

Let's be honest, although we might not wear them very often we all love our silk sarees. It might be because we spent considerable time purchasing them for some special purpose and also because they are evergreen. These sarees hold a lot of memories from when we wore them.

Be it our wedding or any other special occasion, they make us look confident and beautiful. Although silk saree is a very integral part of fashion conscious women they are also extremely delicate.

They need to be taken care of to ensure they do not get damaged or fade.

While silk saris are a much-treasured piece of clothing owned by various women in the Indian subcontinent and abroad, the fabric is prone to insect attacks, or loss of sheen and colour, among other things. As such, one needs to be extra cautious when taking care of these textile heirlooms.

So, if you too are looking for ways to preserve your cherished sari, we've got you covered with a few simple tips.

Silk brocade fabrics are vulnerable to damage due to their intrinsic nature. But a good preventive care routine can increase their life and keep them shining bright for a longer time.

Investing a little time in taking proper care and storing of these fabrics can help in preventing damage control actions taken once deterioration has taken place.

Tips to keep your silk sari looking new:

1. Store the silk brocade sari/suit in a clean and dry muslin or cotton bag to avoid dust accumulation. The muslin or cotton should be de-starched and unbleached. Nowadays, such sari bags are easily available on online marketplaces. One should prefer buying the plain cotton ones in white colour and wash them thoroughly before use.
2. It is better to roll your saris if the space allows. If folding is necessary, white tissue paper should be sandwiched in the folds to avoid sharp creases. When stacking your clothes one above the other, put a sheet of tissue paper between the layers of the folded fabrics.
3. In case of a very old brocade sari (family heirloom), invest in an activated charcoal cloth for its storage. This specialised cloth would absorb all air pollutants from the surrounding air and keep the sari safe from various deterioration factors.
4. It is equally important to pay attention to the storage space/area. Your valuable clothes should be stored in a clean and dry place. If required, keep silica gel packets in the storage area (not in direct contact with the object) to absorb moisture and keep the area dry.
5. Before packing away your silk saris for winter, make sure there are no stains on them. Get them dry cleaned, and put them in the sun for a few hours before storing them.
6. Avoid keeping any woollen fabric, plastic items, rubber bands and metallic objects near your silk brocade sari as these can lead to the corrosion/tarnishing/blackening of zari.
7. While wearing your silk brocade saris/suits, do not use any kind of perfumes or deodorants. If you wish to wear a fragrance, it should be applied carefully avoiding any contact with your garment. This might result in loss of shine and discolouration of the zari.

How often should you wash your silk sari/suits?

Silk brocade saris/suits do need a wash after every use. But you can wash them after 3-4 uses or if there is a stain on them. It is always better to get them dry-cleaned professionally. If it is not an option, gently hand wash these saris in ezee or genteel or reetha solution.

You should be very careful, use light pressure, and not rub them aggressively. The sari should not be wrung or tumble-dried; it should be lightly squeezed to remove excess water and left to dry in the shade.

Rinse it thoroughly to remove all the traces of the washing solution used.

Detergents and machine washing should never be used.

It is not just the humans who get fascinated by the old forts. Tigers too love frequenting these relics of time which inhabit the old forests; quite a frightful proposition for a tourist who is just interested in having a good time!

Sunayan Sharma
IFS (Retd.), Ex field director project tiger Sariska & keoladeo national park, Bharatpur

Tiger! Tiger! Burning Bright in the Fort Tonight

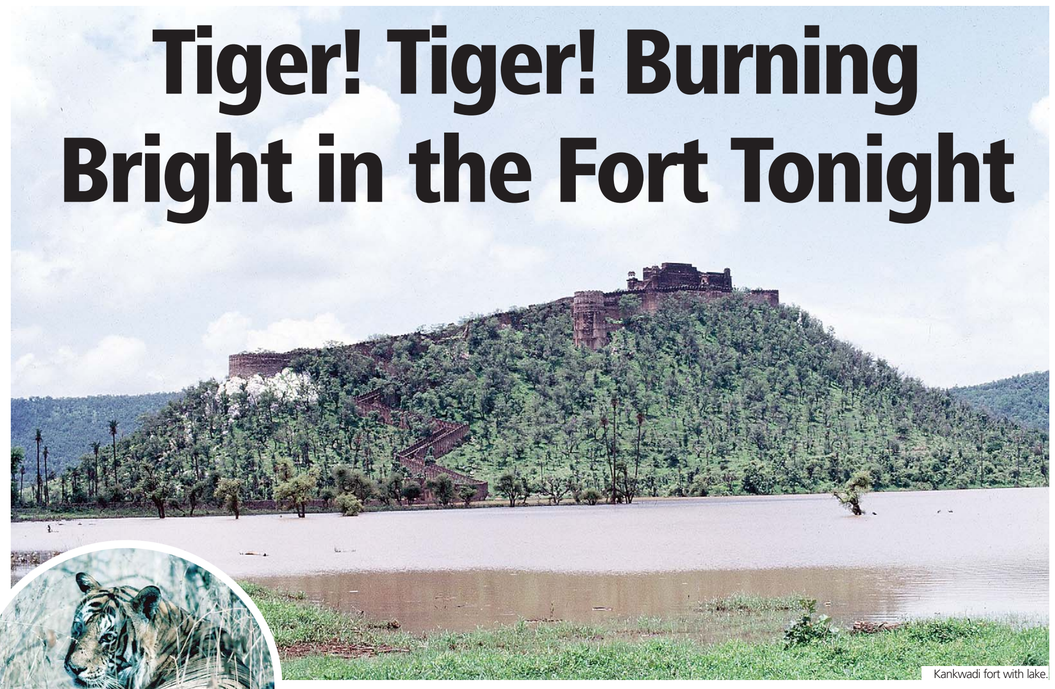

Kankwadi fort with lake.

The southern forests of the Sariska Tiger Reserve lie mostly under the Tehla range. Though these dry deciduous forests predominated by Anogeissus pendula, popularly known as Dhonk or Kala Dhav, are treasure trove of biodiversity but what makes them outstanding in the entire reserve is their archaeological and cultural treasure spread over the entire southern forest belt like a string of pearls. These heritage structures represent various cultural evolutions of society for over thousand years.

Very few tourists, keen on archaeological and cultural history, may be seen roaming in this part of the reserve as these historical buildings are located in remote forest areas.

Interestingly tigers have always shown great fancy for these foregone structures which for sometime remained the centre of attraction for the people of that era. Therefore it is advisable to be cautious while roaming about these sites lest your sudden intrusion provokes the large cat to charge on you purely out of an instinctive behaviour.

Elusive tigers find solace in the abundened fort.

#ROYAL LAIR

A Bone-Chilling Tryst

I can never forget my first such encounter with a tigress in the fort of Kankawadi. It was replete with bone-chilling experiences. This beautiful fort situated on a medium height hillock embedded with white quartzite stones is surrounded by miscellaneous forests of dhonk, salar, gurjan, kadaya, tendu, khair and bamboo. The majestic fort with such rich green surroundings looks like a precious diamond in a ring of green gold. I had joined Sariska (1991) as the field director merely few days back and was pretty busy in combing various far flung areas especially the sensitive ones from protection point of view. During one such visit while camping at Kalighatinaka (protection outpost), Kabul Singh, one of the most experienced forest guards who spent his entire service in Sariska, informed that a tigress is frequently using the Kankawadi fort for rest during day hours. This excited me to try my luck at the earliest and the very next day, at 8 am, I was on my way to Kankawadi along with Kabul Singh and the Nakedar of Kalighati.

On Kalighati-Tehla tar road at about 3.5 km on the right side, an earthen hilly track of about 8 km took us to the fort. This earthen track gets badly damaged during monsoon every year especially because hundreds of people from Gujjar community use this track round the year for travel and transport. They are mostly cattle owners who are settled here in four hamlets (many of these have been shifted out of the reserve after 2006), not far from each other, at the foot of the Fort.

A forest guard outpost was created here in order to contain the forest damage by these cattle owners. This track passes through a narrow valley rich in soil. Bamboo grows on the lower hill slopes on either side of this valley. Sambar and chital are always present here in good numbers. The upper areas of these hills are cautiously used by leopards for fear of the larger carnivore, the tiger.

A view of valley from Kankawadi Fort.

A Grim Tale

The abandoned medieval fort is situated in the heart of the reserve. It tells a grim story of the Mughal Empire. It is believed to have been built by the Mughal emperor, Aurangzeb, in the 17th century to keep his brother, Dara Shikoh in confinement here for several years as a prisoner in the race for succession to the Mughal throne.

Thousands of date palms growing around the fort are said to be the result of seeds thrown by the Mughal soldiers, guarding the fort during that period after eating the fruits. It is a small but beautiful fort. Even now beautiful paintings can be seen on some of the walls of the fort.

After entering the gate, as soon as I reached the main building, I had a closer look to inspect the space created under the platform of the elevated ground floor. It is quite a spacious place with an earthen floor. Here I saw several pugmarks, body marks and other evidences to prove that a tigress had been using this place frequently to take rest.

Soon I realized that there was fresh evidence including peculiar body odour and probably the tigress must have been here till a little while ago and could be around even at that point of time! I had a gut feeling that the tigress left the resting place only when she saw me approaching her after entering the gate. That sent a chill down my spine. The staff too was frightened. I realized my mistake and lack of experience with tigers. I apologized to my team and promised myself to be more careful in the future.

After this incident, I found the pug marks of tiger in the fort on several occasions but, of course, I took enough precaution, every time I visited the fort.

The fort was in ruins. Many ceilings and walls had collapsed. The Rajasthan government carried out extensive restoration and renovation work at the fort in 2009-2010, under keen supervision of Salauddin Ahmed, a dedicated officer and the then chairman of the Amer Development Authority. All those who love their heritage owe to him for not only rejuvenating this historical fort but also for turning it into a tourist attraction once again.

Further south of Kankawadi fort, several villages namely Kaniawas, Muthrawat, Rajore and Garh are located in a valley popularly known as Garh-Rajore valley. The land here is very fertile.

Rich Bhagani valley Adjascent to Kankwadi valley.

> After entering the gate, as soon as I reached the main building, I had a closer look to inspect the space created under the platform of the elevated ground floor. It is quite a spacious place with an earthen floor. Here I saw several pugmarks, body marks and other evidences to prove that a tigress had been using this place frequently to take rest.

On Our Toes

Kaniawas is inhabited mainly by Gujjar community while the other three villages are dominated by Meena community, who are mainly farmers. The tobacco of this area is of high quality. Therefore, along with cattle rearing, tobacco farming is one of the main sources of livelihood for these villagers. Meena community here is a non-vegetarian community. Therefore, threat to herbivores and prey species always exist in this area. The reserve management has to always be on toes to keep strict vigil on the movements of not only big cats but also the miscreants lest they get a chance to poach the big cat!

Tigress showed mercy on us by leaving her seat.

This valley is very special from archaeological and cultural point of view as well.

There are ruins of Shaivite and Jain temples, which are more than a thousand years old, in the archaeological complex of Garh-Rajore. Here, barely 9 km from Kankawadi, Neelkanth temple of 9-10th century is still intact. The Jain temple with an 18ft statue of Lord Mahavira stands as a mute witness to the political turmoil in the past. This complex was probably a deserted township.

An Ancient Learning Hub

It has several dilapidated temples within a small area of about 1 sq. km. It is believed that the complex was a university where students from various parts of the country used to study various subjects, philosophy in particular, from learned teachers. These temples doubled up as residential schools for these scholars. Several invaluable old statues of Hindu Gods and Goddesses have been smuggled out of here in the past. Of course, now the Archaeological Survey of India (ASI) is protecting the remaining valuables, collected from the ruins of these temples. A full armed guard has been posted here to guard these invaluable statues round the clock. Some important bawadis (stepped wells) have been revived by the ASI. During one of my rounds, I saw some labourers repairing an old bawadi close to the Neelkanth temple. At first, I was happy to see restoration work being done but was alarmed to find that the contractor was using old and invaluable statues as stones for the masonry work! I intervened and scolded the contractor. The contractor promised me not to use any such statue in future but was not ready to take out the ones already buried deep in the masonry. I threatened him with stoppage of payment. Only then did I succeed in rescuing the invaluables. I informed the Archaeological Survey Of India (ASI) authorities about this case. They showed their concern but it is just not enough.

The historic gate to Kankwadi valley.

This invaluable treasure deserves better care-taking. Though the Garh-Rajore complex is under care of the ASI but overall, this part of the reserve falls under administrative control of the range officer, Tahla. Another approach road to Garh-Rajore complex is through Dabkan and even today an old fort wall made of red stone along with a huge gate stands on this approach road at the entrance of this complex. This complex is also called Para Nagar. It was under the rule of the mighty Gurjar-Pratihar dynasty. Later, it went to the powerful Bad-Gurjar kings. During the reign of the Mughal emperor, Akbar, it was merged with Jaipur. In this period, 17th century AD, the entire Garh-Rajore complex was fortified with the help of a massive wall and small structures made of red stone for the security in-charge and other personnel at the top of the hill. This security house overlooks Dabkan village and the Mansarovar lake.

In the latter half of the 18th century, it finally shifted from Jaipur to Alwar under the leadership of Rao Raja Pratap Singh who had formed Alwar. It seems that during his rule, except for Lord Shiva's temple, no other temple or structure was maintained and that is why this rich cultural heritage got ruined.

I wish this invaluable heritage is maintained and preserved with utmost care by the governments, in the interest of mankind.

rajeshsharma1049@gmail.com

Langoors are witness to all jungle happenings.

#RESEARCH

Light Therapy

Can intervention in middle age could enable people to avoid further age-related heart deterioration?

A form of light therapy called photobiomodulation may delay the occurrence of age-related diseases, like heart deterioration, a study with mice shows.

Almost 20% of Americans older than 65 have been diagnosed with heart disease, and heart disease continues to be the leading cause of death in the United States.

"The idea was to see if intervention in middle age could enable people to avoid further age-related heart deterioration," says Praveen Arany, associate professor of oral biology in the University at Buffalo School of Dental Medicine.

The study focused on heart condition and function in middle-aged mice, 14 months of age. The research showed an improvement in heart function after exposure to photobiomodulation (PBM) therapy.

PBM also mitigated the thickness of the cardiac wall.

"As muscle thickens, it becomes stiffer, and the pumping action of the heart is less effective," says Arany. Gait symmetry-observing how mice performed comfortably on a treadmill-also improved, suggesting an improvement in neuromuscular coordination.

The experiment exposed mice to a dose of near-infrared light by using an overhead LED light source rather than a focused light source. The ambient low-dose exposure took place five days a week for two minutes each day.

One group of the genetically manipulated mice gets severe heart disease, which usually causes death. After treatment with PBM, heart disease among these mice with heart disease did not progress. The survival rate among the most susceptible group was 100%, compared to the usual survival rate of 43%. The results were significant even though the eight-month study was interrupted for three months by COVID-19.

Arany began his professional career as a dentist. "After a tooth extraction, we have to wait for the wound to heal before we can proceed with treatment," he says. "I became interested in how to improve and hasten healing." He soon learned that exposing the wound to light promoted healing, and his interest in light therapy began.

How does PBM work? The study showed that the production of a substance called transforming growth factor beta (TGF-?1) correlated to exposure to PBM, suggesting that PBM triggers the activation of TGF-?1.

The substance plays an important role in human health and disease, especially in age-related diseases. Arany says that TGF-?1 regulates stem cell activity, inflammation, and immune system function that may partly explain why light therapy works.

Light therapy is only effective if it is administered with appropriate parameters. To be effective and safe, it is important to use specific light wavelength (colour), intensity (dose), and length of exposure. Certain kinds of light, such as ultraviolet light and light produced by lasers, can be harmful.

Other lights, while harmless, may not be effective. This study shows that long-term exposure to a low-dose near-infrared light in a non-thermal manner, carefully adjusted, may benefit heart health and longevity. The next step, Arany says, is controlled human clinical trials.

The study appears in the journal Lasers in Surgery and Medicine.

THE WALL

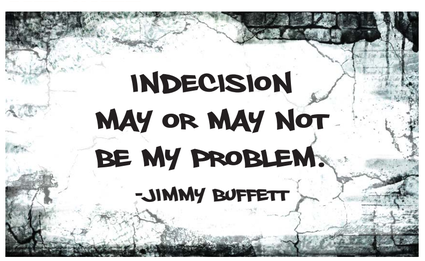

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

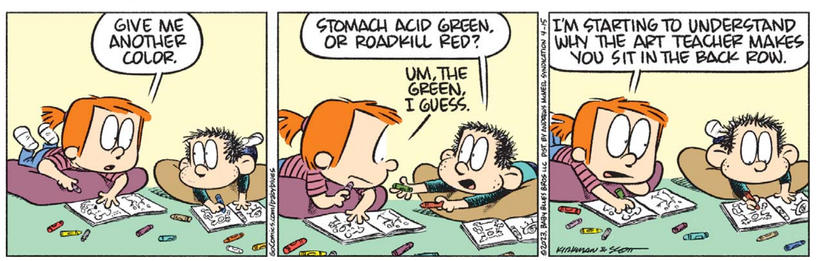

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

थाने में युवक की मौत, आक्रोशित लोगों ने किया थाने का घेराव

थानेदार व तीन पुलिसकर्मी निलंबित व अन्य पुलिसकर्मी लाईन हाजिर

उदयपुर, (कासं)। अपहरण मामले में युवक व युवती को पुलिस गुजरात से लेकर आई। जहां पूछताछ के दौरान युवक की थाने में मौत हो गई। इसका पता चलने पर आक्रोशित श्री राजपुत करणी सेना, क्षत्रिय व सर्व समाज जनों ने उपखण्ड कार्यालय एवं गोगुन्दा थाने के बाहर प्रदर्शन किया। मामले में जिला पुलिस अधीक्षक ने गोगुन्दा थाने के थानेदार व तीन पुलिस कर्मियों को निलंबित एवं शेष पुलिसकर्मियों को लाइन हाजिर कर दिया।

प्रकरण के अनुसार गत 16 मई को देवडों का खेड़ा गोगुन्दा निवासी सुरेन्द्रसिंह पुत्र उदयसिंह द्वारा युवती का अपहरण कर ले जाने की रिपोर्ट दर्ज होने के बाद हरकत में आई पुलिस 25 मई को सुरेन्द्रसिंह व युवती को गुजरात दमन से दस्तियाब कर लेकर आई थी। जहां सुरेन्द्रसिंह की थाने में पूछताछ के दौरान मौत हो गई थी। इस पर पुलिस उसे गोगुन्दा चिकित्सालय ले गए । जहां चिकित्सकों द्वारा मृत घोषित करने पर उसे एमबी चिकित्सालय मोर्चरी में रखवा परिजनों को सूचना दी। घटना के दूसरे दिन आक्रोषित मृतक के परिजनों ,श्री राजपूत करणी सेना, क्षत्रिय समाज, सर्व समाज जनों ने सुरेन्द्र के साथ

आक्रोशित लोगों ने उपखण्ड कार्यालय व गोगुन्दा थाने के बाहर प्रदर्शन किया।

- राजपूत, क्षत्रिय व सर्व समाज ने थाने का घेराव कर प्रदर्शन किया
- अपहरण मामले में युवक व युवती को पुलिस गुजरात से लेकर आई थी

पुलिस थाने में पुलिस कर्मियों द्वारा मारपीट करने से मौत होने पर आक्रोष व्यक्त किया है तथा इस मामले में पुलिस ने पूछताछ के दौरान हार्ड अटैक से मृत्यु होने की जानकारी दी। इसको लेकर आक्रोशित समाजजनों ने मृतक के परिजनों को पचास लाख का मुआवजा देने, परिवार के एक सदस्य को नौकरी देने तथा थाने के थाने को लाईन हाजिर करने की मांग की तथा उपखण्ड कार्यालय पर प्रदर्शन किया तथा थाने का घेराव कर मांगें पूरी नहीं होने तक शव लेने से इनकार कर दिया। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने गोगुन्दा बस स्टेण्ड से बाइक पास जाने वाले मार्ग को अवरूद्ध कर दिया।

इधर माहौल तनावपूर्ण होने की सूचना पर जिला पुलिस अधीक्षक विकास शर्मा के नेतृत्व में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मंजीतसिंह सहित जिले के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, पुलिस उप अधीक्षक एवं आपस पास के पुलिस थानों को जाप्ता मौके तैनात करने से गोगुन्दा छावनी में तब्दिल हो गया है। जहां दिन पर आक्रोशित परिजनों के प्रतिनिधिमंडल एवं जिला पुलिस अधीक्षक के साथ हुई बातचीत में एसपी विकास शर्मा ने गोगुन्दा थाने के थानेदार अनिल कुमार विश्नोई, कांस्टेबल नंदकिशोर, किशोर कुमार, गणेश मीणा को निलंबित किया तथा घटना के समय ड्यूटी परतैनात पुलिस कर्मियों को लाईन हाजिर कर दिया।।मले की मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में पोस्टमार्टम एवं जांच कराने का आश्वासन देने पर परिजनों द्वारा शव लेने की सहमती बनने से मामला शांत हुआ। देर रात तक मुआवजे की प्रशासन द्वारा घोषणा करने के बाद आगे निर्णय लेने की समाज जनों ने घोषणा की है। दस दिन पूर्व देवडों का खेडा निवासी सुरेन्द्रसिंह देवडा अपने ही गांव की रहने वाली मेघवाल समाज की युवती को भगा ले गया था।

इस मामले में 16 मई को गुमशुदगी दर्ज हुई थी। इस मामले में पुलिस व परिजन दोनों को 25 मई सवेरे थाने लेकर पहुंचे थे एवं बयान कराने के बाद युवती के साथ भेज दिया लेकिन सुरेन्द्र को थाने पर बिठाए रखा। जहां पूछताछ के दौरान उसकी मौत हो गई। इस मामले में पुलिस ने युवती द्वारा विरोध में बयान देने से आहत होकर सुरेन्द्र की मौत होना बताया है। जबकि परिजनों ने बताया कि युवती ने स्वयं की मर्जी से जाने की बात कही इसके बावजूद टार्चर कर मारपीट करने से मौत होने का आरोप लगाया। देरा रात तक आन्दोलन कारियों ने मुआवजा एवं सरकारी नौकरी मिलने के बाद शव लेने की घोषणा की जानकारी सामने आई है। जिससे गोगुन्दा कस्बे में तनाव बरकरार है।

ब्लूटूथ लगी विग से नकल करवाने का मास्टर माइंड गिरफ्तार

नागौर से पकड़ा गया तुलछाराम, दिल्ली से खरीदी थी विग

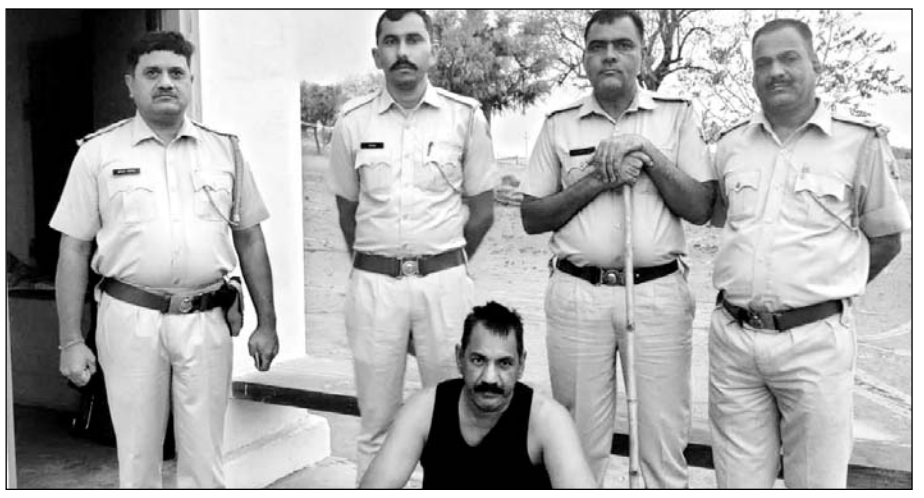

पुलिस ने नकल कराने मास्टर माइंड को गिरफ्तार किया।

बीकानेर, (निसं)। विग में ब्लटूथ डिवाइस लगाकर नकल कराने के मामले में पुलिस ने मास्टर माइंड तुलछाराम कालेरा को पकड़ लिया है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है। अब तक ये सामने आया है कि विग दिल्ली से खरीदी गई थी। पुलिस जांच में जुटी है कि विग से नकल किस तरह करवाई और कितने रुपए लिए गए? अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक हरिशंकर ने तुलछाराम को गिरफ्त में लेने की पुष्टि की है। तुलछाराम ने बीकानेर में स्थानीय निकाय विभाग के राजस्व अधिकारी की परीक्षा में नकल के लिए विग बनाई थी। जानकारी के अनुसार पिछले दिनों

- तुलछाराम ने राजस्व अधिकारी की परीक्षा में नकल के लिए विग खरीदी थी

बीकानेर के तीन सेंटर्स पर विग से नकल करने के मामले में तीन युवकों को गिरफ्तार किया गया था। इनमें उदयरामसर में स्थित सावित्री देवी बीएड कॉलेज से महेंद्र ओझा और मुरली सिंह यादव कॉलेज में एग्जाम देने पहुंचे मनोज कुमार को नकल से पहले एग्जाम सेंटर में घुसते वक्त पकड़ा। वहीं, पवन मूंड को एमएम स्कूल से गिरफ्तार किया गया था। नकल के आरोपी महेंद्र ओझा, मनोज कुमार और पवन मूंड की गिरफ्तारी के बाद उनसे पूछताछ की गई।

पूछताछ में तुलछाराम का नाम सामने आया था। तुलछाराम को पकड़ने के लिए पुलिस पिछले कई दिनों से मशक्कत कर रही थी। इस बीच नोखा एसएचओ ईश्वर प्रसाद जांगिड़ को तुलछाराम के बारे में जानकारी मिली। ईश्वर प्रसाद ने ही नागौर से तुलछाराम कालेर को गिरफ्तार कर लिया। शुक्रवार सुबह उसे बीकानेर लाया गया, जहां उससे पूछताछ की जा रही है। तुलछाराम चप्पल से नकल करवाने के मामले में गिरफ्तार हो चुका है।

तेज अंधड़ व बारिश से एक दर्जन राष्ट्रीय पक्षी मोर की मौत

फुलेरा, (निसं)। गुरुवार की रात्रि अचानक आये तेज अंधड़ और बारिश के कारण क्षेत्र में कई स्थानों पर काफी नुकसान हुआ है। इसके चलते कई मकानों पर लगी हुई लोहे की चद्दर उड़कर दूर जा गिरी, तो कहीं पर बड़े पेड़ गिरकर धराशाही हो गये। इसी तरह कई पक्षी घायल होकर काल का ग्रास बन गए। इसके चलते पक्षियों के घायल व मृत होने की सूचना पर वन विभाग और वन्य जीव एवं पर्यावरण संरक्षण में कार्यरत संस्था वाइल्ड लाइफ क्रीचर ऑर्गेनाइजेशन (डब्ल्यूसीओ) संस्था सक्रिय हो गए हैं। डब्ल्यूसीओ के संस्थापक ओमप्रकाश सैन(पीन्टी) ने बताया कि ग्राम हबसपुरा (रीणगी) निवासी गजानन्द जांगिड़ ने संस्था को सूचना दी कि उनके क्षेत्र में तेज आंधी की चपेट में आने से कुछ मोर की मौत हो गई है।

उक्त सूचना पर फुलेरा वन विभाग से नाका इन्चार्ज श्याम शर्मा व वन रक्षक कानाराम और डब्ल्यू सीओ संस्था व एनिमल वेलफेयर संस्था के सदस्य ने मौके पर पहुंचकर मौका मुआयना किया तो वहां पर लगभग एक दर्जन मोर, 66 तोते, 2 ब्लैक ड्रोंगो नामक पक्षी मृत अवस्था में मिले। साथ ही 1 पौन्ड हैरन, 2 कैटेल ई गरिट, एक शिकारी पक्षी शिकरा सहित 1 नीलगाय पेड़ के गिरने की वजह से घायल अवस्था में मिले।

तूफान से किसानों को भारी नुकसान

कपास की 90 प्रतिशत तक फसल हुई खराब

अनूपगढ़, (निसं)। क्षेत्र में देर शाम तेज आंधी बरसात और ओलावृष्टि ने किसानों पर कहर बरपाया है। किसानों के अनुसार शाम हुई बरसात और ओलावृष्टि में लगभग 80 से 90 प्रतिशत तक कपास की फसल खराब हो चुकी है। किसानों ने सरकार से खराब फसलों की एवज में मुआवजे की मांग की है। कृषि विभाग के सहायक निदेशक रामनिवास चौधरी ने बताया कि आए तूफान में किसानों को काफी नुकसान हुआ है। किसानों के नुकसान के लिए सर्वे करवाया जाएगा और सर्वे करवाने के लिए टीमों का गठन कर दिया गया

- 'मुआवजे के लिए करवाया जाएगा सर्वे'

है। तूफान में किसानों को भारी नुकसान हुआ है। गांव गिलावाली के किसान परविंदर सिंह ने बताया कि शाम तेज आंधी और बरसात के साथ-साथ ओलावृष्टि भी हुई थी। ओलावृष्टि के कारण खेतों में नरमा और कपास की फसल बिल्कुल खत्म हो चुकी है। उन्होंने बताया कि इन दिनों खेतों में नरमा व कपास की फसल बिजान किया जा रहा है और काफी किसानों ने बिजान कर लिया है। बिजान की हुई फसल लगभग खत्म हो चुकी है।

गांव 67 जीबी के किसान हरजिंदर सिंह ने बताया कि खेतों में नरमा व कपास के छोटे-छोटे पौधे खड़े थे। तेज आंधी बरसात और ओलावृष्टि के कारण यह पौधे बिल्कुल खत्म हो चुके हैं। उन्होंने बताया कि जो तूफान आया था उसमें किसानों की लगभग 80 से 90 प्रतिशत तक फसल खराब हो गई है। अनूपगढ़ क्षेत्र के कई गांवों में भारी नुकसान हुआ है। मिली जानकारी के अनुसार गांव बांडा,बांडा कॉलोनी, कमरानिया, गिलावाली, 28 एपीडी, 30 एपीडी,67 जीबी, 68 जीबी, 61 जीबी, 72 जीबी, 65 जीबी, 20 एएस, पतरोडा, 20 एपीडी और 15 एपीडी सहित अन्य गांवो में नुकसान हुआ है। कृषि विभाग के सहायक निदेशक रामनिवास चौधरी ने बताया कि गुरुवार को जो तूफान आया है। इसमें किसानों को काफी नुकसान हुआ है। किसानों के नुकसान का विभाग द्वारा सर्वे करवाया जाएगा। सहायक निदेशक रामनिवास चौधरी ने बताया कि क्षेत्र में हुए नुकसान का सर्वे करवाने के लिए आज टीमों का गठन कर दिया गया है और उन्हें आवश्यक दिशा निर्देश भी दे दिए गए हैं।

डिलीवरी के दौरान शिशु का गला कटा

गुड़ामालानी, (निसं)। गुड़ामालानी मुख्यालय पर स्थित निजी हॉस्पीटल में महिला कि डिलीवरी करवाने के दौरान शिशु का गला काट दिया। परिजनों को नवजात शिशु की मौत हो गई बताकर रुई से लपेटकर दे दिया गया। इसको लेकर परिजनों ने पुलिस थाना गुड़ामालानी में मामला दर्ज करवाया है। मृतक नवजात शिशु के पिता रमेश कुमार पुत्र जोगाराम जाति गुरु निवासी लूणवा जागीर ने मामला दर्ज कर बताया कि मेरी पत्नी की डिलीवरी करवाने निजी हॉस्पीटल आये थे। तभी महिला डॉक्टर तीजा चौधरी ने डिलेवरी करवाकर कहा कि शिशु कि मौत पेट के अन्दर ही दो दिन पहले हो गई थी। हमें रूई से नवजात शिशु को लपेटकर दे दिया। हम विश्वास के साथ अपनी पत्नी और बच्चे को घर ले गए। घर जाने के दौरान हिंदू रीति रिवाज के अनुसार बच्चे को खोल कर देखा तो बच्चे का गला कटा हुआ देखकर हम परिजन चौक गए। तब हमें पता चला कि ऑपरेशन के दौरान महिला डॉक्टर द्वारा नवजात शिशु की गर्दन काट दी तब शिशु की मौत हो गई। उसके बाद हम परिजन वापस हॉस्पीटल में पहुंचे। उनके स्टाफ से बात की तो उन्होंने संतुष्ट जवाब नहीं दिया। इसको लेकर परिजनों ने पुलिस थाना गुड़ामालानी मामला दर्ज करवाकर निजी कृष्णा हॉस्पिटल के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की।

तापमान में आई गिरावट

चूरू, (कासं)। शेखावाटी में हुई बारिश से मौसम सुहावना बन गया है। मौसम विभाग के अनुसार चूरू में शुक्रवार को न्यूनतम तापमान 18.5 डिग्री सेल्सियस व अधिकतम तापमान 33.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ है। साथ ही यहां 12.3 एमएम बारिश हुई है। चूरू शहर में बारिश के बाद सड़कों पर भारी मात्रा में पानी एकत्रित हो गया। इससे आमजन को बहुत परेशानी हुई। यहां राजकीय डेडराज भरतिया अस्पताल के पास, उद्यमसिंह चौक, मंडेलिया हाऊस के पास, राजकीय लोहिया कॉलेज के आगे, रेलवे स्टेशन के आगे, प्रतिभा नगर, शेखावत कॉलोनी, ओम कॉलोनी, शिव कॉलोनी, पूनियां कॉलोनी, आंखों के अस्पताल के पास, अग्रसेन नगर, शर्मा कॉलोनी सहित शहर की हर गली व सड़क पर निकासी के अभाव में बारिश का पानी देखा जा सकता है।

मृतक रोहित का हुआ अंतिम संस्कार

प्रशासन व परिजन के बीच बनी विभिन्न मांगों पर सहमति

अजमेर, (कासं)। अजमेर जिले के नरवर गांव में एक दलित युवक रोहित रेगर पर गत दिनों पेट्रोल छिड़कर आग लगाने से झुलसे युवक की जवाहर लाल नेहरू अस्पताल में हुई युवक की मौत के बाद गुस्साये ग्रामीण व समाज के लोगों के द्वारा मुर्दाघर के बाहर 36 घंटे से चले धरने के बाद शुक्रवार को जिला प्रशासन व समाज के प्रतिनिधियों के बीच मृतक के परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने व आरोपियों को गिरफ्तार समेत विभिन्न मुद्दों पर हुई वार्ता सफल रही। वहीं सहमति बनने के बाद परिजन ने शव उठाया और नरवर लेकर पहुंचे, जहां अंतिम संस्कार करवाया गया। अखिल भारतीय रैगर समाज के प्रतिनिधि बी एल नवल ने बताया कि नरवर गांव में गत 10 मई को रोहित

- अजमेर के नरवर गांव में युवक पर पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी थी

रेगर पर पेट्रोल छीड़कर आग लगा दी, जिसके कारण रोहित की गुरूवार सुबह जवाहर लाल नेहरू अस्पताल में मौत होने के बाद से समाज व ग्रामीणों ने विभिन्न मांगों को लेकर धरने पर बैठ गये, जहां शुक्रवार शाम जिलाधीश भारती दीक्षित व जिला पुलिस अधीक्षक से वार्ता हुई जिसमें मृतक के परिवार को 50 लाख रूपये का मुआवजा, परिवार के एक व्यक्ति को सरकारी नौकरी देने व निष्पक्ष जांच सहित आरोपियों को गिरफ्तार करने पर सहमति बनी, लेकिन समाज के प्रतिनिधि बी एल नवल ने कहा कि मृतक रोहित रेगर के शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव उठाना या नही उठाना इसके लिये उन्होंने जिलाधीश दीक्षित से कहा कि आपके बीच जिन मुद्दों पर वार्ता हुई सहमति बनी उनके बारे में धरना स्थल पर आपका प्रतिनिधि भेजकर बता दे।

गेगल थाना प्रभारी सुनिल बेडा ने बताया कि प्रशासन व मृतक रोहित रेगर के परिजन के बीच हुई विभिन्न मुद्दों पर वार्ता सफल होने के बाद परिजन शव उठाने के लिये सहमत हुये, जहां शव का पोस्टमार्टम करवाकर शुक्रवार को अंतिम संस्कार करवाया गया, ओर इस मामले में एक व्यक्ति को हिरासत में भी लिया।

हादसे में एक की मौत

बाप, (निसं)। बाप कानासर सड़क मार्ग पर बीती देर रात सर तालाब के पास एक ट्रेक्टर पलट गया। हादसे में ट्रेक्टर चालक किसान की दबने से मौत हो गई। सूचना पर मौके पर पहुंची बाप पुलिस मौके पर पहुंची तथा शव को सरकारी अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया। मुख्य आरक्षी पाबुदान ने बताया कि मदासर निवासी मदनलाल पुत्र बंशीलाल विश्नोई गुरूवार दिन में गांव से ट्रेक्टर में रायड़ा भरकर फलोदी गया था। वंहा रायड़ा बेचने के बाद वह वापस ट्रेक्टर में मूंगफली व यूरिया खाद लेकर वापिस लौट रहा था। बाप से निकलने के बाद कानासर सड़क मार्ग पर सर तालाब के पास रात करीब 11 बजे उसका ट्रेक्टर पलट गया। मृतक के भाई जयपाल ने पुलिस को बताया कि आंधी तुफान के बीच नील गाय को बचाने के प्रयास में ट्रेक्टर पलट गया।

मनरेगा में हुए फर्जीवाड़े की जांच के आदेश

वैर, (निसं)। पिछले दिनों वैर पंचायत समिति वैर की ग्राम पंचायत गोविंदपुरा में मनरेगा में हुये फर्जीवाड़े का मामला मुख्यमंत्री तक पहुंचा। मुख्यमंत्री कार्यालय से जिला कलेक्टर भरतपुर को इस मामले के तथ्यों की जांच करने के लिए पत्र लिखा गया है। राज्य उपभोक्ता संरक्षण परिषद (राजस्थान सरकार) के सदस्य बृजेन्द्र चौधरी जटबलाई ने ग्राम पंचायत गोविंदपुरा में चल रहे मनरेगा कार्यो का निरक्षण कियाथा जिसमे फर्जीवाड़ा सामने आया था। चौधरी ने मुख्यमंत्री को लिखे गए पत्र में भी इस मामले से अवगत कराया था, चौधरी ने पंचायत समिति वैर की ग्राम पंचायत गोविंदपुरा में मनरेगा योजना के अंतर्गत चल रहे कामों की जांच 20 मई को की थी जिसमें बड़ा फर्जीवाड़ा सामने आया व बड़े स्तर पर अनियमितताएं उजागर हुई थी। मस्टरोल में 70 श्रमिकों की जगह मौके पर मात्र 38 श्रमिक ही काम कर रहे थे। मौके पर मौजूद मेट भी संतोषजनक जवाब नहीं दे पाया। इस फर्जीवाड़े में कौन-कौन लिप्त है। इसकी जांच होनी चाहिए, पंचायत समिति वैर के विकास अधिकारी सुरेश बागोरिया को उसी दिन फोन द्वारा मनरेगा योजना में हो रहे फर्जीवाड़े से अवगत करा दिया गया था। लेकिन अभी तक जिम्मेदारों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं हुई है, पत्र पर मुख्यमंत्री कार्यालय ने संज्ञान लेते हुए जिला कलेक्टर भरतपुर को तथ्यों की जांच करने के निर्देश दिये हैं।

दुष्कर्मी को भेजा जेल

बीदासर, (निसं)। उपखण्ड के ग्रामीण क्षेत्र की 35 वर्षीया विवाहिता के साथ जेठ के लड़के द्वारा दुष्कर्म करने के दर्ज मामले में बीदासर पुलिस ने शुक्रवार को दुष्कर्म के आरोपी महिला के जेठुते रामनिवास को बीदासर न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया जिसे न्यायालय द्वारा न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया। उपखण्ड के ग्रामीण क्षेत्र की 35 वर्षिय विवाहिता की माता ने पुलिस थाना में लिखित रिपोर्ट दर्ज करवाई थी कि मेरी पुत्री जन्म से गूंगी बहरी है, जो न ही बोल सकती न ही सुन सकती है। यह मानसिक रूप से कमजोर है। मेरी पुत्री की शादी आज से 20 वर्ष पूर्व ग्रामीण क्षेत्र में की थी। मेरे पुत्री के पति की दस वर्ष पूर्व मृत्यु हो चुकी है। मेरी पुत्री अपने जेठ व उसके परिवार के साथ ढाणी में रहती है। मेरी बेटी के साथ उसके जेठ के लड़के ने दुष्कर्म किया।

स्मैक तस्कर को पकड़ने पहुंची पुलिस व ग्रामीणों में झड़प

सरपंच की पत्नी ने पुलिस पर गोली चलाने का आरोप लगाया

करौली, (निसं)। करौली सदर थाना क्षेत्र की रौड कला ग्राम पंचायत के आगरी गांव में बीती रात स्मैक तस्करी की सूचना पर पहुंची सदर थाना पुलिस और ग्रामीणों के बीच झड़प हो गई। जिसमें सरपंच की पत्नी ने पुलिस पर गोली चलाने का आरोप लगाया। पुलिस ने स्मैक तस्कर सूरज मीणा को 385 ग्राम स्मैक सहित गिरफ्तार किया।

सदर थाना अधिकारी कृपाल सिंह ने बताया कि 385 ग्राम स्मैक जो अंतरराष्ट्रीय बाजार में करीब 40 लाख रुपये की है। पुलिस ने स्मैक तस्कर सूरज पुत्र गिलारी मीणा के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार किया। पुलिस ने फायरिंग के आरोपों को निराधार बताया। ग्रामीणों के अनुसार पुलिस दल सदर थाना क्षेत्र के आगरी गांव में देर रात स्मैक तस्कर को गिरफ्तार करने गया था। इस दौरान ग्रामीणों और पुलिस दल में झडप हो गई। रौडकला सरपंच पाखंडी मीना की पत्नी राजंती 68 का आरोप है कि देर रात वह घर से बाहर आई थी। इस दौरान अचानक उसके ऊपर पुलिस ने फायरिंग

घायल महिला को अस्पताल में भर्ती कराया।

कर दी। पैर में गोली लगने से फ्रेक्चर हो गया। मामले को लेकर करौली डीएसपी दीपक गर्ग ने बताया है कि मुखबिर की सूचना पर सदर थाना अधिकारी कृपाल सिंह मुय पुलिस जाप्ता के और डीएसपी प्रभारी अनूप सिंह मय टीम के आगरी गांव स्मैक तस्कर के मकान के पास पहुंचे। जहां से स्मैक तस्कर सूरज मीणा को स्मैक सहित गिरफ्तार किया। जिसमे अहम भूमिका कांस्टेबिल नेमीचन्द 412 की रही। उन्होंने बताया कि मुल्जिम को छुडाने के लिये स्मैक तस्कर के परिजनों ने फायरिंग कि जिसके जबाव में पुलिस ने हवाई फायरिंग की। उधर घायल महिला के पति सरपंच पाखंडी मीणा ने जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर पुलिस के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराने के लिये परिवाद पेश किया। देर शाम तक घायल महिला का मेडीकल परिक्षण नही हुआ।

बारिश व तेज आंधी से तबाही

चाकसू, (निसं)। गुरुवार को दिन में पड़ी भीषण गर्मी के बाद रात्रि करीब 10:30 बजे बाद कस्बे सहित आसपास के ग्रामीण अंचलों में जबरदस्त तूफान के साथ जोरदार बारिश हुई। इस दौरान आंधी चलने से कहीं पेड़ टूटकर गिरे तो कहीं विद्युत पोल टूट गए।

तो कहीं विद्युत पोल से डीपी टूटकर जमीन पर आ गिरी, होर्डिंग्स बैनर टूटकर लटक गए, करीब 1 घंटे के लिए बारिश आंधी ने लोगों को भयभीत कर दिया। करीब 100 किमी रफ्तार से चली तेज हवा के झोकों से सब भयभीत हो गए। तेज अंधड़ से नगरपालिका कार्यालय के पीछे लगा एयरटेल कम्पनी का 70 फीट ऊंचा टावर धराशायी होकर एक खेत में जा गिरा, गनीमत यह रही कि वह पास के मकानों पर नहीं गिरा वरना बहुत बड़ा हादसा हो जाता। वही तेज अंधड़ से बड़े - बड़े पेड़ उखड़ गए और मकानों से टीन शेड उखड़ गए , मकानों की दीवारें गिर गयी जिनसे कबूतर , तोते सहित कई पक्षी व जानवर मोत के मुंह मे चले गए । तहसीलदार पुष्पेंद्र पांचाल ने बताया कि यहां पर 46 एमएम वर्षा दर्ज की गई । विधायक वेदप्रकाश सोलंकी ने क्षेत्र में अंधड़ से हुई तबाई का सर्वे करने के लिये उपखण्ड , तहसीलदार , विकास अधिकारी सहित राजस्व कर्मियों को निर्देश दिए है ।

फर्जी दस्तावेज देकर पासपोर्ट बनाने का मामला दर्ज

डूंगरपुर, (निसं)। सदर थाने में एक युवक के खिलाफ गलत डॉक्यूमेंट देकर पासपोर्ट बनवाने की रिपोर्ट दर्ज हुई है। युवक पासपोर्ट बनाने के बाद विदेश में भी नौकरी करने के लिए चला गया। पासपोर्ट विभाग की रिपोर्ट पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सदर थाने के एएसआई शंकरलाल ने बताया कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय जयपुर के सहायक पासपोर्ट अधिकारी (पॉलिसी) की ओर से रिपोर्ट दर्ज करवाई गई है। इसमे बताया कि डूंगरलाल पटेल

- नौकरी करने कुवैत भी गया, जांच में जुटी पुलिस

पुत्र तेजा पटेल निवासी इंद्रखेत ने साल 2011 में पासपोर्ट बनवाया था। इसके बाद कुवैत जाने के लिए आरोपी डूंगरलाल पटेल ने इमिठोशन के लिए आवेदन किया। इसके बाद आरोपी डूंगरलाल कुवैत भी चला गया। बाद में पता चला कि आरोपी डूंगरलाल की ओर से पेश किए डॉक्यूमेट गलत थे। जिससे उनमें पासपोर्ट बनवाया और इमिठोशन भी करवाकर विदेश भी चला गया। मामले में पुलिस ने सहायक पासपोर्ट अधिकारी की रिपोर्ट पर आरोपी डूंगरलाल पटेल के खिलाफ फर्जीवाडे का मामला दर्ज कर लिया है। मामले की जांच एएसआई शंकरलाल की ओर से की जा रही है। एएसआई शंकरलाल ने बताया कि मामले की जांच के बाद ही ये पता लगेगा कि किस तरह के गलत दस्तावेज आरोपी की ओर से पेश किए गए थे।

नाविक भर्ती प्रक्रिया में अभ्यर्थी को शामिल करें: हाईकोर्ट

झुंझुनूं, (निसं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने एक अभ्यर्थी को इंडियन कोस्ट गार्ड द्वारा नाविक पद के लिए की जा रही भर्ती प्रक्रिया में शामिल किए जाने आदेश जारी कर गृह विभाग, रक्षा विभाग, इंडियन कोस्ट गार्ड व भर्ती विभाग के अधिकारियों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। मामले के अनुसार ढांढोत निवासी अभ्यर्थी विजय शर्मा ने एडवोकेट संजय महला के जरिए रिट याचिका दायर कर बताया कि नाविक भर्ती-2023 में लिखित परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इंडियन कोस्ट गार्ड द्वारा भर्ती के अगले आयोजित चरणों में अभ्यर्थी के भाग लेने पर रोक लगा दी थी। बहस में एडवोकेट संजय महला ने कहा कि अभ्यर्थी द्वारा लिखित परीक्षा पास करने के बाद अगले द्वितीय-चरण में भाग लेने के लिए उपस्थित हुआ। किंतु उसे बिना किसी उचित कारण के चयन प्रक्रिया से आउट कर दिया। उन्होंने निवेदन किया कि अभ्यर्थी को प्रक्रिया में शामिल किया जाए। मामले की सुनवाई कर रहे न्यायाधीश सुदेश बंसल ने याचिका का अवलोकन करने व भारत सरकार के अधिवक्ता को सुनने के बाद अभ्यर्थी को चयन प्रक्रिया में शामिल करने के आदेश जारी कर अभ्यर्थी का परिणाम न्यायालय में प्रस्तुत करने के आदेश दिए है।

धोनी एक जादूगर है वह किसी के कचरे के डिब्बे को भी जादू का डिब्बा बना सकत है। वह बहुत ही दक्ष और सकारात्मक कप्तान है।
- मैथ्यू हेडन

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर, महेन्द्र सिंह धोनी के बारे में।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

जेसन रॉय

इंग्लैंड के विस्फोटक ओपनर जेसन रॉय के फैसले से वर्ल्ड क्रिकेट में सनसनी मच गई है। 32 वर्षीय जेसन रॉय ने अपने राष्ट्रीय टीम का कॉन्ट्रेक्ट छोड़कर अब सिर्फ फ्रैंचाइजी क्रिकेट खेलने का निर्णय ले लिया है। वह दुनियाभर में जाकर आईपीएल, पीएसएल, बीपीएल जैसी टी-20 लीग खेलते हैं। मगर रॉय का यह फैसला यूएसए में शुरू होने जा रही नई मेजर लीग क्रिकेट से जोड़कर देखा जा रहा है। खबरों की माने तो दाएं हाथ के धुआंधार बल्लेबाज ने इस लीग में लॉस एंजिल्स नाइटराइडर्स के साथ जुड़ने के लिए दो साल के लिए 30.68 करोड़ की डील कर चुके हैं।

क्या आप जानते हैं ?... ऑस्ट्रेलिया के खब्बू स्पिनर फ्लीड वुड स्मिथ ने इंग्लैंड के विरुद्ध 1938 में 87 ओवर में 298 रन पर एक विकेट लिया था। ये आज तक एक टेस्ट पारी में किसी भी गेंदबाज द्वारा दिए गए सबसे ज्यादा रन है।

विश्व टेस्ट क्रिकेट का शंहशाह होगा मालामाल

मेलबर्न 26 मई। विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के अगले महीने खेले जाने वाले खिताबी मुकाबले के विजेता को 16 लाख डालर की पुरस्कार राशि से नवाजा जायेगा। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने शुक्रवार को यह घोषणा की। 2023 विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के विजेता को 16 लाख डॉलर की पुरस्कार राशि मिलेगी जबकि उपविजेता टीम को आठ लाख डॉलर मिलेंगे। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच विश्व टेस्ट चैंपियनशिप 2023 का खिताबी मुकाबला सात से 11 जून के बीच ओवल में खेला जायेगा। तीसरे स्थान पर रहने वाली दक्षिण अफ्रीका की टीम को साढे चार लाख डॉलर मिलेंगे। चौथे स्थान पर रहने वाले इंग्लैंड ने साढे तीन लाख डालर और पांचवे स्थान पर काबिज श्रीलंका को दो लाख डालर की पुरस्कार राशि प्राप्त हुई। छठे स्थान पर न्यूजीलैंड, सातवें स्थान पर पाकिस्तान, आठवें स्थान पर वेस्टइंडीज और नौवें स्थान पर मौजूद बांग्लादेश को एक-एक लाख डॉलर मिले हैं।

एशिया जूनियर चैम्पियनशिप के लिए ट्रायल आयोजित करेगा बाई

नई दिल्ली, 26 मई। भारतीय बैडमिंटन संघ चार से सात जून तक नई दिल्ली के करनैल सिंह स्टेडियम में बहुप्रतीक्षित बैडमिंटन एशिया जूनियर चैंपियनशिप 2023 के लिए चयन ट्रायल आयोजित करेगा। एशिया जूनियर बैडमिंटन चैंपियनशिप इंडोनेशिया में सात से 16 जुलाई तक खेली जायेगी जिसके लिये खिलाड़ियों का चयन ट्रायल में उनके प्रदर्शन के आधार पर किया जाएगा। ट्रायल में इस महीने की शुरुआत में गुवाहाटी में आयोजित ऑल इंडिया जूनियर रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट की युगल स्पर्धाओं में शीर्ष-8 लड़के और लड़कियों के एकल शटलर के साथ-साथ शीर्ष-4 युगल शामिल होंगे। अन्वेषा गौड़ा (4), अनुपमा उपाध्याय (8), उन्नित हुड्डा (14) और पांच अन्य खिलाड़ी, जो बीडब्ल्यूएफ रैंकिंग में टॉप-20 में शामिल हैं, ट्रायल्स में हिस्सा लेंगी और भारतीय टीम में अपनी जगह पक्की करने की कोशिश करेंगी।

दिल्ली एफसी ने आई लीग में जगह बनाई

चंडीगढ़, 26 मई। दिल्ली एफसी ने शुक्रवार को यहां अंबरनाथ यूनाइटेड अटलांटा एफसी को 3-1 से हराकर सेकेंड डिवीजन का खिताब जीता और पहली बार आई लीग फुटबॉल प्रतियोगिता में जगह बनाई। सेकंड डिवीजन में पहली बार खेल रही मुंबई की अटलांटा एफसी को खिताब जीतने के लिए केवल एक अंक की जरूरत थी, लेकिन दिल्ली की टीम के सामने उसकी एक नहीं चली।

अहमदाबाद में बारिश के बाद बरसे शुभमन गिल

अहमदाबाद 26 मई। शुभमन गिल (129 रन,60 गेंद) की रनो की बरसात की बदौलत गुजरात ने शुक्रवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के वर्षा प्रभावित दूसरे क्वालीफायर में मुंबई के खिलाफ तीन विकेट पर 233 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा कर लिया।

समाचार लिखे जाने तक मुंबई इंडियंस ने 16 ओवर में 8 विकेट खोकर 162 रन बना लिये है। नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में बारिश के कारण मैच निर्धारित समय से करीब आधा घंटा देरी से शुरू हुआ। मुबंई के कप्तान रोहित शर्मा ने टास जीत कर पिच में व्याप्त नमी का अंदाजा लगाते हुये गुजरात को बल्लेबाजी सौंपी मगर मैदान पर सलामी बल्लेबाज के तौर पर उतरने वाले शुभमन के तेवर का उन्हे कतई अंदाज नहीं था। क्रीज पर आते ही पंजाब के जीवट खिलाड़ी के बल्ले ने आग उगलनी शुरू कर दी।

शुभमन के तूफान को थामने की रोहित सेना ने भरपूर कोशिश की मगर असफल रहे और देखते ही देखते गुजराती शेर ने न सिर्फ अपना आईपीएल शतक पूरा किया बल्कि उसके बाद भी मुबंई के

गेंदबाजों पर कोई रहम नहीं दिखाया। उन्होने अपनी 129 रन की पारी में महज 60 गेंद खेलकर दस आसमानी छक्के लगाये और सात बार जमीनी रास्ते से गेंद को सीमा रेखा के बाहर पहुंचाया। वह आकाश माधवाल की शानदार यार्कर पर टिम डेविड के हाथों आउट हुये। शुभमन ने साई सुदर्शन (43) के साथ 138 रनों की शानदार साझीदारी भी निभायी।

जॉन वारबर्टन बने सब जूनियर बाक्सिंग टीम के मुख्य कोच

नई दिल्ली, 26 मई। इंग्लैंड के जाने माने बॉक्सिंग कोच जॉन वारबर्टन को देश की सब जूनियर बाक्सिंग टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया गया है। फेडरेशन ऑफ इंडिया (बीएफआई) ने सब-जूनियर वर्ग के लिए मुख्य कोच के रूप में अनुभवी जॉन वारबर्टन की नियुक्ति की घोषणा की है। वारबर्टन के पास लगभग चार दशक का अनुभव है। वह 1984 से इंग्लैंड में अपनी सेवायें दे रहे हैं। सब-जूनियर श्रेणी में मुख्य कोच के रूप में, जॉन वारबर्टन युवा भारतीय मुक्केबाजों के विकास और विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए तैयार हैं।

अपने पूरे कार्यकाल के दौरान उन्होंने कई मुक्केबाजों को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो राष्ट्रमंडल खेलों, यूरोपीय और विश्व चैंपियनशिप के साथ-साथ ओलंपिक जैसे प्रतिष्ठित आयोजनों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर चुके हैं। बीएफआई ने एक बयान जारी कर कहा हम बीएफआई में युवा प्रतिभाओं का पोषण करने के लिए वारबर्टन को पाकर बेहद गौरवान्वित और खुश हैं। बीएफआई में हमारा मिशन न केवल भारतीय मुक्केबाजी के उच्चतम स्तर पर उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करना है बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि हम जमीनी स्तर पर भी समान स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें और अधिक प्रतिभाओं का पता लगा सकें और एक मजबूत प्रतिभा पूल तैयार कर सकें।

वर्तमान में, वारबर्टन जेएसडब्ल्यू के इंस्पायर इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट में मुक्केबाजी के प्रमुख हैं, जहां उन्होंने मंजू बम्बोरिया, मनीषा मौन और निशांत देव समेत कई होनहार भारतीय मुक्केबाजों के साथ भी काम किया है। उनकी विशेषज्ञता और मार्गदर्शन ने उनके विकास और प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने इंग्लैंड में कैलम स्मिथ और एंटनी बेलवे समेत कई मुक्केबाजों का पोषण और मार्गदर्शन किया है, जिससे उन्हें पेशेवर विश्व चैंपियनशिप तक पहुंचने में मदद मिली है।

जूनियर एशिया कप में पाक से भिड़ेंगे भारत के लड़के

नई दिल्ली, 26 मई। ओमान के सलालाह में पुरुष जूनियर एशिया कप 2023 में लगातार दो मुकाबले जीतने के बाद उत्साह से लबरेज भारतीय जूनियर टीम शनिवार को ठाुप चरण में अपने चिर-परिचित प्रतिद्वंदी पाकिस्तान से भिड़ेगी। भारतीय लड़कों ने जीत के साथ अपने अभियान की रोमांचक शुरुआत की थी। अपने पहले पूल ए मैच में चीनी ताइपे पर 18-0 की शानदार जीत दर्ज करने के बाद भारत ने गुरुवार को अरिजीत सिंह हुंदल , शारदा नंद तिवारी और उत्तम सिंह के गोलों की मदद से जापान पर 3-1 से जीत दर्ज की थी।

मुकाबले से पहले भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम के कप्तान उत्तम सिंह ने कहा, हमने टूर्नामेंट की शुरुआत मजबूत नोट के साथ की है और हम पाकिस्तान के खिलाफ उसी मानसिकता के साथ आगे बढना चाहेंगे। हमारी पहली दो जीत ने हमें वह आत्मविश्वास दिया है जिसकी हमें जरूरत थी। पाकिस्तान के पास भी एक मजबूत टीम है और यह एक करीबी मुकाबला होगा।

इस बीच, पाकिस्तान भी टूर्नामेंट में चीनी ताइपे के खिलाफ अपना पहला मुकाबला 15-1 से जीतकर और फिर अपने दूसरे गेम में थाईलैंड को 9-0 से हराकर टूर्नामेंट में अब तक नाबाद है। उत्तम सिंह ने कहा, 'हमारी रक्षा पंक्ति अच्छी है लेकिन पाकिस्तान के पास भी अच्छे हमलावर हैं। हमने अतीत में इसी तरह की चुनौतियों का सामना किया है और हमें विश्वास है कि हम उन्हें गोल करने से रोकने में सक्षम होंगे।

दोनों टीमें आखिरी बार 2015 मेन्स जूनियर एशिया कप फाइनल में भिड़ी थीं, जिसे भारत ने 6-2 से जीता था। 2011 के बाद से भारत जूनियर पुरुष हॉकी टीम और पाकिस्तान जूनियर पुरुष हॉकी टीम सात बार आमने सामने हो चुकी है, जिसमें भारत पांच बार और पाकिस्तान एक बार जीता है। एक मैच टाई में समाप्त हुआ है।

पीवी सिंधू मलेशिया मास्टर्स के सेमीफाइनल में

कुआलालंपुर, 26 मई। भारत की शीर्ष बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू ने शुक्रवार को चीन की झांग यी मान को मैराथन मुकाबले में हरा कर मलेशिया मास्टर्स के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। दो बार के ओलंपिक पदक विजेता ने निचली रैंकिंग की चीन को 21-16, 13-21, 22-20 से हराने में एक घंटा 14 मिनट का समय लिया। सिंधु ने इस साल के शुरू में ऑल इंग्लैंड ओपन में 18वीं रैंकिंग के झांग से 32वें राउंड में हार का बदला लिया। वह शनिवार को सेमीफाइनल में सातवीं वरीयता प्राप्त और दुनिया की नौवें नंबर की खिलाड़ी ठोगोरिया मरिस्का तुनजुंग से भिड़ेंगी।

ट्रैप निशानेबाज भवनीश को अलमाटी विश्व कप में संयुक्त बढ़त

अलमाटी, 26 मई। पेरिस ओलंपिक का कोटा जीत चुके भवनीश मेंदीरत्ता 75 में से सिर्फ दो निशाने चूके और आईएसएसएफ विश्व कप में शुक्रवार को ट्रैप स्पर्धा के पहले दिन संयुक्त बढत बना ली। फरीदाबाद के 23 वर्ष के मेंदीरत्ता चार अन्य के साथ शीर्ष पर हैं जिनमें विश्व कप और 2020 में तोक्यो ओलंपिक मिश्रित टीम ट्रैप स्पर्धा के विजेता स्पेन के अलबर्टो फर्नांडिज शामिल हैं। अभी क्वालीफिकेशन के दो राउंड और होने है जिसके बाद छह निशानेबाजों का फाइनल होगा। मेंदीरत्ता ने पहले और तीसरे दौर में परफेक्ट 25 का स्कोर किया। वह सिर्फ 28वां और 43वां निशाना चूके। भारत के जोरावर संधू 16वें और पृथ्वीरात टोंडाइमन 23वें स्थान पर हैं। महिला ट्रैप में श्रेयसी सिंह 70 के स्कोर के साथ आठवें स्थान पर है।

अंतिम क्षणों में गोल गंवाने के कारण बेल्जियम से हारा भारत

लंदन, 26 मई। भारतीय पुरुष हॉकी टीम को अंतिम क्षणों की चूक के कारण एफआईएच हॉकी प्रो लीग प्रतियोगिता में शुक्रवार को यहां बेल्जियम के हाथों 1-2 से हार का सामना करना पड़ा। पहला क्वार्टर गोल रहित छूटने के बाद थिबाउ स्टॉकब्रॉक्स ने 17वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर गोल करके बेल्जियम को बढत दिला दी। मनदीप सिंह ने हालांकि 24वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदलकर भारत को बराबरी पर ला दिया। तीसरे क्वार्टर में कोई टीम गोल नहीं कर पाई लेकिन अंतिम क्षणों में बेल्जियम के आक्रमक खेल के सामने भारतीय रक्षा पंक्ति छितर गई। बेल्जियम ने 59वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर हासिल किया जिसे नेल्सन ओनाना ने गोल में बदलकर अपनी टीम को जीत दिलाई।

प्रदेश में तूफान और बारिश ने बरपाया कहर

तूफान से अनेक पशु-पक्षी काल कलवित हो गये, दर्जनों मोर की मौत

बाप क्षेत्र में 700 से अधिक विद्युत खंभे जमींदोज

बाप के निकट मालमसिंह की सिड्डु के तेज अंधड़ से लोहे का टॉवर गिर गया।

बाप, (निसं)। जोधपुर जिले के बाप क्षेत्र में बीते दो दिन से चल रहा खराब मौसम डिस्कॉम को संभलने का मौका नहीं दे रहा है। डिस्कॉम कर्मचारी एक दिन पहले आए तेज अंधड़ से गिरे खंभों को ठीक कर पाते इससे पहले ही गुरूवार रात आए तूफान ने ग्रामीण क्षेत्र का विद्युत तंत्र ही धराशायी कर दिया। शक्तिशाली तूफान से बाप क्षेत्र में 700 से अधिक विद्युत खंभे जमींदोज हो गए। यह संख्या बढ भी सकती है। इसमें 33 केवी लाइन के पोल भी शामिल है। एक दर्जन से अधिक ट्रांसफार्मर गिर कर टूट गए। तूफान के कहर से डिस्कॉम को लाखो का आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा है। इसके अलावा बडी संख्या में पेड पौधे भी धराशायी हुए है। हॉर्डिंग टूटकर ताश के पत्तो की तरह उड़ गए। तूफान कितना शक्तिशाली था इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि खीरवा में सड़क किनारे खड़ी 35 टन वजन को उठाने वाली शक्तिशाली मशीन ही पलट गई। बड़ी तादाद में पोल गिरने से कई गांवों के साथ सैकड़ो ढाणियों में बिजली सप्लाई प्रभावित हो गई। बाप क्षेत्र में 14 मई को 80 तथा बुधवार शाम को अंधड़ से 75 पोल गिरे थे। बाप क्षेत्र में रात करीब 9 बजे के बाद बारिश के साथ तूफान आया था। बाप कस्बे में भी तेज हवाओं के साथ हल्की बारिश हुई थी। दूसरा दशक निदेशक मुरारीलाल थानवी ने बताया कि वे रात नो बजे बाप से फलोदी जा रहे थे। जोड़ के बाद तेज तूफान की वजह से कार चलाना मुश्किल हो रहा था। सामने से आ रहे वाहन भी सड़क पर संतुलन नहीं बना पा रहे थे। कानसिंह की सिड्डु के पास रेल फाटक से 500 मीटर दूर मालमसिंह की सिड्डु रोड़ पर सोलर कंपनी का लगाया गया लोहे का टॉवर विद्युत लाइन पर गिर गया। उसका कुछ हिसा सड़क पर गिरने से यातायात भी अवरूद्ध हो गया।

डिस्कॉम बाप के सहायक अभियंता गोविंद राम ने बताया कि गुरूवार रात आए तूफान से डिस्कॉम को बड़ा नुकसान हुआ है। 700 से अधिक पोल टूट गए। शेखासर, खीरवा, मलार, जैतेरी, धोलिया, ननेऊ, जाम्बा सहित कई गांवों में सैकड़ों पोल गिर गए। अकेले खीरवा जीएसएसएस क्षेत्र में 250 से अधिक पोल गिरे है।

मालपुरा में तूफान का ताण्डव, तीन की मौत व एक दर्जन घायल

मालपुरा, (निसं)। गुरूवार की देर रात्रि को तेज गर्जना व तेज हवाओं के साथ शुरू हुए तूफान ने देखते ही देखते विकराल रूप धारण कर रातभर तबाही का ताण्डव मचा सैंकडों हरे पेड़ व मकानों को धराशाही कर दिया। तूफान के ताण्डव से क्षेत्र में तीन जनों की दर्दनाक मौत हो गई तो एक दर्जन घायल हो गये। वहीं मकान की दीवार के नीचे दबने से 12 बकरियों की मौत हो गई, तो कई पशु घायल हो गये।

तूफान की गति से मकानों पर लगे टीनशेड व सौर ऊर्जा की प्लेटें कई किलोमीटर दूर उड़ गई। तेज हवा व तूफान से मालपुरा डिविजन के 35 विद्युत फीडर के 10 ट्रांसफार्मर धूं-धूं कर जल उठे तो 260 विद्युत पोल धराशाही हो गये। डिग्गी फीडर के 7 ट्रांसफार्मर जल गये तो 120 से अधिक विधुत पोल धराशाही हो गये। 20 घंटों से अधिक समय तक दर्जनों गांव-ढाणियां अंधेरे में डूबी रही। शुक्रवार की शाम तक भी विद्युत व इंटरनेट की सेवाएं बाधित रही। पचेवर थाना क्षेत्र के अरनिया बस्सी में मकान की दीवार गिर जाने से भागीरथ जाट की मौत हो गई। तो 12 बकरियां भी मौत का शिकार हो गई। डिग्गी में कच्चे मकान की दीवार के नीचे दब जाने से बसंत गुर्जर की मौत हुई तो पप्पू गुर्जर घायल हो गया।

टोडारायसिंह क्षेत्र के गेदिया गांव में गिर्राज भांड का मकान गिर जाने से 9 साल की बच्ची अंशुका की मौत हो गई व परिवार के रेणु, बबली, शांति व सायरी घायल हो गई। मालपुरा कृषि मंडी, निर्माणाधीन एफसीआई गोदाम, जाजमो की ढाणी, ढोला का खेडा, सांस सहित सैंकडों की संख्या में गांव-ढाणियों में टीन व छप्पर उड़ गये। दर्जनों मकान धराशाही हो गये। औधोगिक क्षेत्र में 2 से 3 करोड़ रुपये के सौलर प्लांट व टीनशेड उड जाने से भारी नुकसान हुआ।

विधायक कन्हैयालाल चौधरी, एसडीएम महिपाल सिंह,पालिका ईओ राजपाल बुनकर,तहसीलदार सहदेव मंडा, विकास अधिकारी सतपाल कुमावत सहित अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों ने पीड़ितों के आवास पहुंच मृतक के प्रति शौक व्यक्त कर गरीबों को आर्थिक मदद का विश्वास दिलाया। पंचायत मुख्यालयों पर लगे स्थाई महंगाई राहत शिविरों तथा शहर के बाबा लक्ष्मण दास बगीची मे चल रहे यज्ञ का पाण्डाल धराशाही हो गया। अस्पताल से मिली जानकारी में तूफान की चपेट में आ जाने से पप्पू गुर्जर निवासी डिग्गी, लल्लू निवासी उतरप्रदेश, शशिकांत निवासी संग्रामपुरा, मथुरा निवासी अम्बापुरा, पानकी देवी निवासी बांरा, हरजी निवासी गुंजा ढाणी मालपुरा, रामेश्वर नायक निवासी अम्बापुरा, हनुमान मीणा निवासी चांदा की ढाणी चांदसेन, मनभर देवी निवासी गुरूदयालपुरा घायल हो गये।

बीदासर में कई स्थानों पर टीनशेड उड़े, पेड़ धराशायी

बीदासर क्षेत्र में गुरूवार रात को आये भीषण तूफान से कई जगह विद्युत पोल गिर गये।

बीदासर, (निसं)। क्षेत्र में गुरुवार को चक्रवाती तूफान का कहर देखने को मिला। गुरुवार की शाम 7 बजे बाद आये भीषण तूफान के कारण भारी नुकसान हुआ, अनेक स्थानों पर टीनशेड उड़ गये, विशालकाय पेड़ जड़ों से उखड़कर धराशायी हो गये। गुरुवार की शाम अचानक आसमान बादलों के अट गया और बिजलियां कड़कने लगी। तूफान के दौरान अत्यधिक तीव्र गति से हवायें चली और तेज बारिश हुई। लगभग एक घण्टे तक चले तूफान के दौरान कस्बे व आस-पास के क्षेत्र में भारी नुकसान बरपाया। तूफान के कारण क्षेत्र में विद्युत निगम के 200 विद्युत पोल व एक दर्जन डीपीयां टूटकर जमीन पर आ गिरी।

वहीं अनेक स्थानों पर बिजली के तार टूटकर जमीन पर आ गिरे,क जिसके कारण विद्युत निगम के लाखों रुपयों का नुकसान हुआ। वहीं ग्राम उंटालड़ में छप्पर गिरने से चार बकरियों की मौत हो गयी। तूफान में अनेकों पशु-पक्षी काल कलवित हो गये वहीं दर्जनों राष्ट्रीय पक्षी मोर की मौत हो गयी। तूफान के कारण क्षेत्र की विद्युत व्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित हुई। तूफान के दौरान नोखा-सीकर मार्ग दड़ीबा के पास एक वाहन पर अचानक पीपल का पेड़ आ गिरा, गनीमत यह रही कि वाहन में सवार एडवोकेट बाघाराम व उनकी पुत्री को कोई हानि नहीं हुई। वहीं कस्बे की शिवकृष्ण गौशाला मे बने शेड के 18 टीन उड़ गये। बारिश के कारण कस्बे के नीचले इलाकों में पानी भर गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार गत् दो दिनों मे क्षेत्र में करीब 160 एमएम बारिश रिकॉर्ड की गई जिसमें से बुधवार को करीब 120 एमएम और गुरुवार को करीब 40 एमएम बारिश हुई।

तूफान से बिजली विभाग को काफी नुकसान पहुंचा

सूरजगढ़, (निसं)। गुरुवार देर शाम को आई आंधी तूफान के चलते बिजली विभाग को काफी नुकसान पहुंचा है। जानकारी के मुताबिक महज चंद घंटों में मौसम ने बिजली विभाग को भी 25.50 लाख का नुकसान कर दिया। एईएन बृजपाल ने बताया कि सूरजगढ़ एईएन कार्यालय से जुड़े 27 गांव प्रभावित हुए हैं। उन्होंने बताया कि जाखोद, राजवीरपुरा, बेरला, धींगड़िया, अगवाना, बड़सरी का बास, स्वामी सेही, स्यालू, सेही कलां सहित अन्य गांवों में 11 केवी के 155 पोल, एलटी लाइन के 130, थ्री फेस के 62 ट्रांसफॉर्मर, सिंगल फेस के 20, अंधड़ की वजह से टूट कर गिर गए। जिसके चलते काफी घंटों से बिजली प्रभावित है। एईएन बृजपाल ने कहा कि सारी व्यवस्थाएं दुरुस्त करने में करीब 3 से 4 दिन का समय लगेगा। कई इलाकों में विद्युत सप्लाई बाधित रहेगी।

अंधड़ ने सूरजगढ़ के इलाके में मचाई तबाही, करोड़ों का नुकसान हुआ

सूरजगढ़, (निसं)। पश्चिमी विश्व की सक्रियता के चलते बदले मौसम के मिजाज से गुरूवार को देर शाम तेज आंधी के साथ आई जोरदार बारिश की वजह से शहर व ग्रामीण क्षेत्र में करोड़ों रुपए के नुकसान का आंकलन किया जा रहा है। प्रधान बलवान सिंह रघुनाथपुरा ने इलाके में हुए नुकसान का जायजा लिया। काकोड़ा गांव के रहने वाले पशुपालक रिशाल सिंह का टीनशेड भेड़ों पर गिर गया। जिससे 14 भेड़ों की मौत हो गई। रघुनाथपुरा डेयरी संचालक ईश्वर सिंह स्वामी ने बताया कि रात को तेज आंधी के कारण गायों के लिए बनाई हुई चारदिवारी गिर गई। सुबह तक मलबे को हटाकर गायों को बाहर निकाला गया। दस से अधिक गाय गंभीर रूप से घायल हो गई। वहीं तेज हवाओं के साथ आई बारिश व ओलों ने फसलों, पेड़-पौधों को नुकसान पहुंचाया। खेतों में पानी भरा हुआ है। सूरजगढ़-बुहाना रोड पर बड़ी संख्या में पेड़-पौधे टूट गए और सड़कों पर आ गिरे। तेज अंधड़ से हुए नुकसान का आंकलन पटवार सर्किल द्वारा किया जा रहा है। आंधी की रफ्तार इतनी तेज थी कि इलाके में लगी सौर ऊर्जा की प्लेट, टीनशेड उड़कर 100 से 200 मीटर तक दूर जाकर गिर गए। वहीं खेतों में खेजड़ी के पेड़ काफी संख्या में टूट गए। इसी के साथ बिजली विभाग के बिजली के पोलों के टूटने से भी लाखों रुपए का नुकसान हुआ है। गुरुवार देर शाम से ही शुक्रवार दिन भर विद्युत सप्लाई बाधित रही। पिलानी मौसम केंद्र पर 50.2 एमएम बरसात दर्ज की गई है। मौसम विभाग की ओर से जिले के लिए 29 मई तक येलो अलर्ट जारी करते हुए ओलावृष्टि धूल भरी आंधी या और बरसात की चेतावनी जारी की गई है। सूरजगढ़ कस्बे के वार्ड नंबर 15 में अंधड़ की वजह से रास्ते पर खड़े बिजली के पोल का तार टूट गया। तार टूटकर सड़क पर आ गिरा। जिसकी चपेट में आने से एक गाय की मौत हो गई। बलवान सिंह रघुनाथपुरा, प्रधान, पंचायत समिति सूरजगढ़ का कहना है कि गुरुवार देर शाम आए तेज अंधड़ व बारिश की वजह से इलाके में करोड़ों रुपए का नुकसान हुआ है। किसान पशुपालक की फसलों पशुओं का काफी नुकसान हुआ है।

कार्यालय विकास अधिकारी कम कार्यक्रम अधिकारी पंचायत समिति बयाना(भरतपुर)

क्रमांक:पंसब/लेखा/2023-24/209 दिनांक:25.05.2023

ई-निविदा सूचना सं. 01/2023-2024

पंचायत समिति बयाना एवं अधीनस्थ 46 ग्राम पंचायतों के लिए महानरेगा एवं ग्रामीण विकास की अन्य योजनाओं में कराये जाने वाले कार्यों हेतु आवश्यक निर्माण सामग्री आपूर्ति बाबत वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिये ई-निविदायें दिनांक 08.06.2023 तक आमंत्रित की जाती है। विस्तृत विवरण वेबसाइट https://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in पर उपलब्ध है।

NIB No.-ZBH2324A0047 UBN No-ZBH2324GLRC0082 से 00128 तक

विकास अधिकारी कम कार्यक्रम अधिकारी पंचायत समिति बयाना

राजधानी जयपुर में गुरूवार देर रात को तूफानी बारिश और तेज अंधड़ ने जबरदस्त कहर बरपाया। अजमेरी गेट स्थित रामनिवास बाग में करीब 100 वर्ष पुराना विशाल पेड़ तेज हवाओं के कारण धराशायी हो गया, हालांकि इससे कोई हताहत नहीं हुआ। शुक्रवार को दिनभर पेड़ को काटकर मौके से हटाने का काम चलता रहा। बताया जा रहा है कि, रामनिवास बाग में चूहों की भरमार है, चूहों द्वारा कुतरने के कारण इस पेड़ की जड़ें खोखली हो गई थीं। इस कारण गुरूवार शाम को तेज अंधड़ में यह पेड़ उखड़कर गिर पड़ा। इसी तरह परकोटे के नाहरगढ़ रोड, सी-स्कीम, जे.एल.एन. मार्ग और विद्याधर नगर स्टेडियम के पास भी हरे-भरे पेड़ उखड़ गए। शुक्रवार को ऐसा ही नजारा शहर के अलग-अलग मार्गों पर भी नजर आया।

तूफान से एशिया की सबसे बड़ी जमालपुरा तिरपाल मंडी में करोड़ों का नुकसान

मंडी के तीन गोदाम पूरी तरह नष्ट हो गए तथा कुछ गोदामों की छत उड़ गई तो कुछ दीवारें टूट गईं

- **सड़क किनारे खड़े एक युवक पर पेड़ गिर गया, जिससे उसकी मौत हो गई।**
- **होली धोरा के एक खेत में दीवार गिरने से 11 मवेशियों की मौत हो गई।**
- **सुजानगढ़ में 80 से ज्यादा बिजली खम्भे टूट गये। क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति ठप्प हो गई है।**

सुजानगढ़ , 26 मई। (निसं)। गुरूवार रात्रि आए भीषण तूफान ने सुजानगढ़ शहर एवं आस-पास के गांवों में भारी तबाही मचाई है। तूफान के दौरान पेड़ गिरने से एक युवक की मौत हो गई, तूफान के कहर से मवेशी भी बच नहीं पाए। एक खेत में दीवार गिरने से 18 मवेशियों की मौत हो गई।

तूफान के कारण एशिया की सबसे बड़ी तिरपाल मंडी के रूप में पहचान रखने वाले जमालपुरा में तिरपाल के अनेक गोदामों में भारी नुकसान हुआ है। तूफान के कारण तीन गोदाम पूरी तरह से तबाह हो गए, वहीं अनेक गोदामों दीवारें गिर गई तो अनेक गोदामों के टीन शेड उड़ गए। एक गोदाम की दीवार वहां अंदर खड़ी तीन गाड़ियों पर गिर गई, जिससे उन कारों को बड़ा नुकसान हुआ है। तूफान से छापर रोड पर पेड़ गिरने से उसके नीचे दबने से राजलदेसर के बलरामपुरा निवासी 18 वर्षीय किशननाथ पुत्र ईशरनाथ की मौत हो गई। डी.टी.ओ. कार्यालय में अपने काम से आया किशननाथ गांव जाने के लिए अपने साथियों की गाड़ी का इंतजार कर रहा था। इतने में पेड़ गिरने से वह दब गया, जिसे रामकरण जाट व अन्य ने निजी वाहन से राजकीय बगड़िया उप जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां पर चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। तूफान से होली धोरा निवासी फारुख खान धोलिया के खेत में मवेशियों के लिए बने मकान की दीवार गिरने से उसके नीचे दबने से 11 भेड़ों व बकरियों की मौत हो गई।

तूफान के कहर से करीब आधा दर्जन राष्ट्रीय पक्षी मोरों की मौत हो गई, वहीं सात मोर घायल हो गए और एक सौ से अधिक कबूतर घायल हो गए। तूफान के कारण प्रगति नगर निवासी किसान कमल दादरवाल के घर पर 132 केवी की विद्युत लाईन गिरने से पूरे घर में करंट फैल गया तथा घर में रखे पचास हजार रूपये नगदी, कपड़े, फ्रीज, कूलर सहित विद्युत उपकरण जल गए। हादसे में शनि मंदिर के पास रहने वाले किसान कमल दादरवाल के भी करंट आया था। यह विद्युत लाईन 220 के.वी. जीएसएस से पारेवड़ा जीएसएस जा रही थी। जिसे ठीक करवाने के लिए डिस्कॉम द्वारा बीकानेर से टीम बुलाई गई। एन.के. लोहिया स्टेडियम में बरसों से खड़े सफेदे के पेड़ धराशाही हो गए। सफेदे के भारी भरकम पेड़ों के गिरने से एक बिजली को पोल टेढा हो गया, वहीं स्टेडियम की दीवार गिर गई तथा दीवार के उस पार सड़क पर खड़े आधा दर्जन ठेले दब कर क्षतिग्रस्त हो गए।

ऑगस्टिन जॉर्ज मसीह राजस्थान के नए मुख्य न्यायाधीश

जयपुर, 26 मई (का.सं.)। केन्द्र सरकार के विधि व न्याय विभाग ने शुक्रवार को एक नोटिफिकेशन जारी कर पंजाब एंड हरियाणा हाईकोर्ट के वरिष्ठतम जज, ऑगस्टिन जॉर्ज मसीह को राजस्थान हाईकोर्ट का नया चीफ जस्टिस (सी.जे.) नियुक्त किया है।

चीफ जस्टिस ऑफ इण्डिया, डी. वाय. चन्द्रचूड़ की अध्यक्षता वाले कोलीजियम ने गत अप्रैल महीने में राजस्थान हाईकोर्ट के नए सी.जे. पद पर नियुक्ति के लिए जस्टिस ऑगस्टिन जॉर्ज मसीह के नाम की सिफारिश की थी। राजस्थान हाईकोर्ट में सी.जे. का पद, तत्कालीन सी.जे. पंकज मित्थल की सुप्रीम कोर्ट में जज के पद पर नियुक्ति के बाद से खाली चल रहा है। हाईकोर्ट में फिलहाल एक्टिंग सी.जे.

- **कोलीजियम ने अप्रैल माह में पंजाब एण्ड हरियाणा हाई कोर्ट के वरिष्ठतम जज मसीह को राजस्थान का चीफ जस्टिस बनाने की सिफारिश की थी।**

पद पर जस्टिस एम.एम. श्रीवास्तव कार्यरत हैं।

गौरतलब है कि, जस्टिस मसीह का जन्म 12 मार्च 1963 को पंजाब में हुआ था। स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. की डिग्री प्राप्त की और वहीं, 1987 में उन्होंने वकालत शुरू की। इसके बाद उन्हें सरकार ने अतिरिक्त महाधिवक्ता नियुक्त किया। 10 जुलाई 2008 को उन्हें पंजाब एंड हरियाणा हाईकोर्ट का अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किया गया। इसके बाद 14 जनवरी 2011 को जस्टिस मसीह को इस पद पर स्थाई कर दिया गया।

'ऑस्ट्रेलिया के नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से ईर्ष्या रखते हैं'

ऑस्ट्रेलिया में विपक्ष के नेता पीटर डटन ने कहा कि, वे ईर्ष्यालु हैं, क्योंकि उनमें से कोई भी 20 हजार लोगों को इकट्ठा करने की क्षमता नहीं रखता है

- **पीटर डटन ने कहा कि, गत बुधवार को ऑस्ट्रेलिया के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना हुई, पहली बार मैंने ऑस्ट्रेलिया में इस तरह की भीड़ जुटने की असाधारण घटना देखी।**

सिडनी / नई दिल्ली, 26 मई। ऑस्ट्रेलिया में विपक्ष के नेता पीटर डटन ने कहा है कि, ऑस्ट्रेलिया के नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से जलते हैं। उन्होंने कहा कि, वे ईर्ष्यालु हैं, क्योंकि उनमें से कोई भी 20,000 लोगों को इकट्ठा करने और उनसे अपने सरनेम को बुलवाने में सक्षम नहीं है। संसद को संबोधित करते हुए विपक्ष के नेता प्रतिपक्ष डटन ने कहा कि बुधवार को एक असाधारण घटना हुई। उन्होंने कहा, "मुझे लगा कि यह एक असाधारण घटना थी और मैं वास्तव में प्रधानमंत्री मोदी की मेजबानी में भारतीय समुदाय के काम की सराहना करता हूं।" उन्होंने कहा कि वह (ऑस्ट्रेलियाई) प्रधानमंत्री के साथ ऑस्ट्रेलिया का दौरा करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी और उनके प्रतिनिधिमंडल का धन्यवाद करने में शामिल हुए।

भारत के साथ संबंधों पर बोलते हुए, उन्होंने कहा कि जब उनकी सरकार सत्ता में थी तो संबंध काफी असाधारण और प्रोडक्टिव थे। उन्होंने पूर्व प्रधान मंत्री मॉरिसन और डैन टीन सहित फ्रंट बेंच पर कई लोगों के काम को भी स्वीकार किया। उन्होंने कहा, "मैं आज सुबह (गुरुवार) सिडनी में प्रधानमंत्री मोदी से मिल रहा था। यह बहुत ही सौहार्दपूर्ण और आकर्षक चर्चा थी और जिन व्यापक विषयों पर हमने चर्चा की, वे संबंधों में द्विदलीय समर्थन का संकेत देते हैं।" प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी सिडनी यात्रा के दौरान एक सामुदायिक कार्यक्रम में भारतीय डायस्पोरा को एक महत्वपूर्ण संबोधन दिया, जिसमें पारस्परिक विश्वास और पारस्परिक सम्मान पर प्रकाश डाला गया था जो भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच घनिष्ठ ऐतिहासिक संबंधों की नींव है।

ऑस्ट्रेलिया की अपनी यात्रा के दूसरे दिन सिडनी में एक सामुदायिक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने ऑस्ट्रेलिया में भारतीय प्रवासियों को दोनों देशों के बीच आपसी सम्मान और विश्वास के पीछे एक ताकत के रूप में श्रेय दिया था।

प्रधानमंत्री मोदी ने मंगलवार को सिडनी में शीर्ष ऑस्ट्रेलियाई कंपनियों के बिजनेस लीडर्स के साथ बैठक की। इस दौरान उन्होंने प्रौद्योगिकी, कौशल और स्वच्छ ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में भारतीय उद्योग के साथ सहयोग बढ़ाने का आह्वान किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को अपने तीन देशों के दौरे के समापन पर ऑस्ट्रेलिया से भारत के लिए उड़ान भरी थी। इस दौरे के दौरान उन्होंने जापान और पापुआ न्यू गिनी का भी दौरा किया था।

विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता अरिंदम बागची ने एक ट्वीट में कहा, "तीन देशों की सफल यात्रा संपन्न हुई। जापान, पापुआ न्यू गिनी और ऑस्ट्रेलिया की तीन देशों की यात्रा के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दिल्ली के लिए रवाना हुए।" प्रधानमंत्री मोदी ने भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच गहराते संबंधों को समझाने के लिए "क्रिकेट डिप्लोमेसी" का इस्तेमाल किया और कहा, "हमारे संबंध टी-20 मोड में आ गए हैं!"

उन्होंने कहा, "मैं अपने मित्र प्रधानमंत्री अल्बनीस की भारत यात्रा के दो महीने के भीतर ऑस्ट्रेलिया का दौरा कर रहा हूं। पिछले एक साल में यह हमारी छठी बैठक है। यह हमारे व्यापक संबंधों की गहराई, हमारे संबंधों की परिपक्वता को दर्शाता है। क्रिकेट की भाषा में, हमारे संबंध टी-20 मोड में प्रवेश कर चुके हैं।

गुरुवार शाम से शुरु हुये तूफान और बारिश ने प्रदेश के कई हिस्सों में जबरदस्त तबाही मचाई और नुकसान पहुंचाया। तूफान के कारण जमालपुरा (चूरु) स्थित एशिया की सबसे बड़ी तिरपाल मंडी की कई दुकानों को भारी नुकसान पहुँचा है। यहाँ बड़े गोदाम की दीवार, वहाँ पर खड़ी तीन गाड़ियों पर गिर गई, जिसके कारण गाड़ियों को भारी नुकसान हुआ है। सुजानगढ़ में सड़क किनारे खड़े एक युवक पर पेड़ गिर गया, इसके अलावा होली धरा के एक खेत में दीवार गिरने से 18 मवेशियों की मौत हो गई। 80 से ज्यादा बिजली के खम्भे गिर पड़े जिस कारण कई इलाकों में बिजली आपूर्ति ठप्प हो गई।

टोंक जिले में तूफान ने मचाई तबाही, 12 जनों की मौत

गुरूवार रात 11 बजे आए तूफान में कई मकान गिर गए, टीनें उड़ गई, जिससे12 जनों की मौत हो गई व 24 से ज्यादा लोग घायल हो गए

- **तूफान के कारण सैंकड़ों जानवर व पक्षी भी मारे गए। इसके अलावा कई मकान, पेड़, बिजली के खम्भे व ट्रांसफॉर्मर गिर गए।**
- **जिला प्रशासन ने राहत कार्य शुरू कर दिए हैं।**

टोंक, 26 मई (निसं)। जिले में गुरुवार रात 11 बजे आए तूफान ने तबाही मचाई है। कई जगह मकान गिर गए तथा टीन उड़ गए। इनके नीचे दबने से जिले में 12 जनों की मौत हो गई, दो दर्जन से ज्यादा घायल हुए।

जिला प्रशासन के अनुसार तूफान में अलग-अलग जगह हुए हादसों में दर्जनों मकान गिर गए और पेड़ व बिजली के खंभे, ट्रांसफार्मर गिर गए। सैकड़ों जानवर और पक्षियों की मौत हो गई। जिले में बिजली व पानी की आपूर्ति बंद हो गई। नुकसान का आंकलन करने के लिए जिले के आला अधिकारी सुबह से फील्ड में पहुँचे।

पुलिस अधीक्षक राजर्षिराज ने बताया कि, मृतकों में धन्ना तलाई टोंक निवासी ईशाक पुत्र इमामुद्दीन, इनायत पुत्री अंसार, अयान पुत्र अंसार, ललवाडी निवासी मोहिद पुत्र वहीद बंजारा, लोदेडा निवासी सुवालाल पुत्र रामू गुर्जर, प्रतापपुरा निवासी बल्लाराम पुत्र भूरालाल मीणा, टोकरावास निवासी लटूर पुत्र हरलाल मीणा, आवां निवासी मुस्ताक पुत्र गफूर खान, गेदिया निवासी अनुष्का भांड, अरनिया निवासी भागीरथ जाट पुत्र श्रीलाल, डिग्गी निवासी बसंत पुत्र हीरा गुर्जर, उनियारा निवासी अर्पिता पुत्री हितेश मीणा की मौत हो गई।

जिले में दर्जनों मकान ऐसे थे जो पूर्ण रूप से गिर गए। रात को आस-पास के लोगों ने उन्हें रहने की जगह दी।

जिला कलेक्टर ने आंधी-तूफान में घायल हुए लोगों की कुशलक्षेम पूछी- जिला कलेक्टर चिन्मयी गोपाल और अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवचरण मीना ने गुरुवार रात आए तूफान में मरने वाले लोगों के परिजनों से मिलकर संवेदना जताई एवं जिला प्रशासन की तरफ से हर संभव मदद करने भरोसा दिया। जिला कलेक्टर ने उपखंड निवाई में तूफान से हुई जन एवं पशुहानि का मौके पर पहुंचकर हालात का जायजा लिया। उन्होंने ग्राम ललवाड़ी में दीवार गिरने से मरने वाले 13 वर्षीय बालक मोहिद के परिजनों से मिलकर ढांढस बंधाया। प्राकृतिक आपदा से प्रभावित लोगों ने अपनी पीड़ा जिला कलेक्टर को बताई। जिला कलेक्टर ने उपखंड अधिकारी रविकांत सिंह को प्रभावित परिवारों का सर्वे कर राहत पहुंचाने के निर्देश दिए। इसके बाद जिला कलेक्टर ने घासी की ढाणी, लोदेडा एवं अवाना की ढाणी में क्षतिग्रस्त हुए घरों तथा जन एवं पशुहानि का मौके पर जाकर जायजा लिया। उपखंड टोंक के ग्राम निमोला की सरदारपुरा ढाणी में पेड़ गिरने से घायल हुई वृद्ध महिला भूरी देवी से मिलकर कुशलक्षेम पूछी।

राजस्थान राज्य ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लाभ निसृत हो, वचन ग्रहिता की यह अभीप्सा, सदैव सिद्ध प्रमेय नहीं हो सकती है।" उन्होंने अपने आदेश में यह भी कहा कि मैसर्स आशापुरा द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज़, जो उनके प्रस्तावित लाभ को दर्शाते हैं, किसके द्वारा तैयार करे गए हैं और उनकी क्या विश्वसनीयता है, इस विषय में कोई विश्वसनीय और स्पष्ट जानकारी नहीं दी गई है। अदालत ने अपने आदेश में इस बात का जिक्र किया है कि मैसर्स आशापुरा ने कुछ घटनाओं का वर्णन किया है जिनका अनुबंध की शर्तों को पूरा करने पर प्रभाव पड़ता है, जैसे बस खराब हो जाने के कारण पार्सल की डिलीवरी ना हो पाना। परन्तु अदालत ने अपने आदेश में कहा कि यह समस्याएं हर जिले में समान रूप से व्याप्त थीं कि नहीं, इस विषय में, कुछ भी स्पष्टता से बताया नहीं गया है। अदालत ने आर्बिट्रेटर के फैसले को रद्द करने के कई कारण बताये हैं और कहा "यह भारत की विधि की आधारभूत नीति कदाचित नहीं हो सकती है कि मध्यस्थ की शरण में आये पक्षकारों के विवादों का निस्तारण करते समय विवेचित अनुबंध के दायरे में वास्तविक क्षति के आधारभूत कारकों एवं क्षतिपूर्ति के मानक सिद्धान्तों की अनदेखी की जाए। राज्य का हित इसमें है कि पक्षकारों के मध्य विवादों का न्यायपूर्ण अंत हो।"

अदालत ने आर्बिट्रेटर के अवार्ड को रद्द करते हुए उसे "तर्कसंगत" एवं "पर्याप्त" नहीं बताया है।

न्यायपालिका...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अधिकारियों के लिए आवासीय इमारतों के निर्माण के लिए राज्य सरकार के संसाधनों को बढ़ा रही हैं।

स्कीम सहभागिता पर आधारित है इसमें 60:40 (केंद्र : राज्य), उत्तर पूर्वी व दो हिमालयन राज्यों के लिए 90:10 की भागीदारी है। केन्द्र शासित क्षेत्रों में शत प्रतिशत खर्च केन्द्र सरकार उठाएगी।

महाराष्ट्र के मंदिरों में प्रवेश के लिए ड्रैस कोड लागू हुआ

- **मंदिरों में कटी-फटी जीन्स, अर्धनग्न कपड़े, स्कर्ट, उत्तेजक वस्त्र, अशोभनीय वस्त्र पहन कर प्रवेश पर पाबंदी लगा दी गई है।**

नागपुर, 26 मई। महाराष्ट्र मंदिर महासंघ की ओर से आज यानी शुक्रवार से नागपुर के चार मंदिरों में ड्रेस कोड लागू कर दिया गया है। महासंघ की ओर से मंदिर की पवित्रता को बनाए रखने के लिए यह ड्रेस कोड लागू किया गया है। महासंघ का मानना है कि ड्रेस कोड देश के कई मंदिरों, गुरुद्वारों, चर्चों, मस्जिदों और अन्य पूजा स्थलों पर लागू है। यह ड्रेस कोड महाराष्ट्र के 300 से अधिक मंदिरों में लागू किया जाएगा। कटी-फटी जींस, अर्धनग्न कपड़े, स्कर्ट, उत्तेजक वस्त्र, अशोभनीय वस्त्र पहन कर प्रवेश पर पाबंदी लगा दी गई है। महाराष्ट्र मंदिर महासंघ के पदाधिकारियों ने बताया कि इस तरह के कपड़े पहनकर मंदिर आते हैं, तो उन्हें ओढ़नी, दुपट्टा, लूंगी दिया जाएगा, जिसके बाद उन्हें प्रवेश दिया जाएगा। महासंघ की ओर से कहा गया है कि इस संबंध में प्रचार-प्रसार किया जाएगा। नागपुर के धंतोली गोपाल कृष्ण मंदिर, संकट मोचन पंचमुखी हनुमान मंदिर बेलोरी, बृहस्पति मंदिर कानॉली बारा और दुर्गा मंदिर आदि शामिल हैं।

भंवर जितेन्द्र...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चानना की ओर से पैरवी कर रहे एडवोकेट प्रकाश भंडारी ने बताया कि अविनाश चानना की शिकायत पर कोतवाली थाने में भंवर जितेंद्र सिंह, श्रीनाथ सिंह हाडा, विजेंद्र सिंह के विरुद्ध मुकदमा दर्ज हुआ था। पुलिस ने मामले में न्यायालय में एफ.आर. पेश की, जिस पर अविनाश चानना ने प्रोटेस्ट किया।

मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने इस मामले में आई.पी.सी. की धारा 420, 467, 468, 473 120-बी में प्रसंज्ञान लेते हुए 18 नवंबर 2021 को भंवर जितेंद्र सिंह, श्रीनाथ सिंह हाड़ा, विजेंद्र सिंह के खिलाफ गैर जमानती वॉरंट जारी किया था।

सी.जी.एम. कोर्ट के आदेश के खिलाफ भंवर जितेंद्र सिंह एवं अन्य ने जिला एवं सत्र न्यायालय में अपील की जिस पर न्यायालय ने गुरुवार को फैसला करते हुए सी.जे.एम. कोर्ट द्वारा जारी गिरफ्तारी वॉरंट को जमानती वॉरंट में तब्दील कर दिया लेकिन साथ ही जिला न्यायालय ने सी.जे.एम. के प्रसंज्ञान आदेश को बहाल रखा है।

नई संसद के...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दलों की संख्या 25 तक पहुंचा कर अपना पलड़ा भारी होने का सबूत दे दिया है। ज्ञातव्य है कि 21 विपक्षी दल इस समारोह का बहिष्कार कर रहे हैं।

भाजपा के अलावा, रविवार के समारोह में शामिल होने की पुष्टि करने वाले दलों में शामिल एन.डी.ए. के विभिन्न प्रमुख घटक दल हैं, ए.आई.ए.डी.एम.के., अपना दल, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया, शिव सेना का शिंदे गुट, एन.पी.पी. तथा एन.पी.एफ.। कुछ तटस्थ दल, जिनमे बीजू जनता दल, टी.डी.पी. तथा वाई.एस.आर.सी.पी. शामिल हैं, भी उद्घाटन समारोह में शामिल होंगे।

विपक्षी दलों में से शिरोमणि अकाली दल (एस.ए.डी.) बहुजन समाज पार्टी (बसपा) तथा जनता दल सेकुलर भी रविवार के समारोह में शरीक होंगे। जे.डी. (एस) की तरफ से पूर्व प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौड़ा समारोह में शामिल होंगे। इससे पूर्व, कांग्रेस सहित 19 विपक्षी दलों ने इस सप्ताह के प्रारंभ में ही एक संयुक्त बयान में संसद भवन के उद्घाटन के बहिष्कार की घोषणा कर दी थी। दो अन्य पार्टियाँ इनके साथ बाद में आई हैं।

मध्य प्रदेश...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रयोग किया था। इसी बीच कांग्रेस इस आग में घी डाल रही है, पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के भाई लक्ष्मण सिंह जो कांग्रेस के विधायक हैं, ने हाल ही में सिंधिया की प्रशंसा की तथा उन्हें अच्छा वक्ता बताया और कहा कि कांग्रेस के लिए वे बहुत महत्वपूर्ण थे। भाजपा आलाकमान मध्य प्रदेश में नेतृत्व परिवर्तन पर विचार कर रहा है। आदिवासी सांसद सुमेर सिंह सोलंकी को चौहान की जगह मुख्यमंत्री बनाने की चर्चा है। सोलंकी भी संघ के करीबी माने जाते हैं।

राहुल गांधी को अब नया पासपोर्ट...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मजिस्ट्रेट वैभव मेहता ने कहा था कि यात्रा करने का अधिकार मौलिक अधिकार है तथा अदालतों ने कांग्रेस नेता के आने-जाने पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया है। अनुमति लेने की बाध्यता नहीं होने के कारण, वे कई बार विदेश यात्रा पर जा चुके हैं।

मजिस्ट्रेट ने यह भी कहा कि दिसम्बर 2015 में गांधी को जमानत देते समय, अदालत ने उनकी यात्राओं पर कोई नहीं रोक लगाई थी तथा प्रतिबंध लगाने की स्वामी की याचिका उस समय खारिज कर दी गई थी।

ज्ञातव्य है कि गांधी को उस समय लोकसभा की सदस्यता से डिसक्वालिफाई कर दिया था, मोदी सरनेम के बारे में उनकी टिप्पणी को लेकर दायर मानहानि के केस में उन्हें सजा दे दी गई थी।

नैशनल हैरल्ड केस एक प्राइवेट क्रिमिनल शिकायत पर आधारित था, जो स्वामी ने सोनिया गांधी, राहुल गांधी तथा अन्य के खिलाफ दर्ज कराई थी। उन्होंने इन लोगों पर धोखाधड़ी, साजिश तथा ट्रस्ट के नियमों के क्रिमिनल उल्लंघन के आरोप लगाये थे।

स्वामी ने उन पर आरोप लगाया था कि उन्होंने अब बंद हो चुके अंग्रेजी दैनिक नैशनल हैरल्ड का स्वामित्व प्राप्त करने के लिये धोखाधड़ी की थी तथा फन्ड्स का दुरूपयोग किया था।

ये सब यंग इंडियन लिमिटेड (वाई आई) नामक उस कम्पनी के डायरेक्टर थे, जो 2010 में समाविष्ट की गई थी तथा जिसने नैशनल हैरल्ड की प्रकाशन एससिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (ए.जे.एल.) के कर्ज का भार अपने ऊपर ले लिया था।

स्वामी ने सोनिया तथा राहुल गांधी एवं अन्य पर आरोप लगाया था कि उन्होंने केवल 50 लाख रू. देकर धोखाधड़ी की साजिश करने तथा फन्ड्स का दुरूपयोग किया था। इस प्रकार वाई आई को उन 90.25 करोड़ रू. की वसूली का अधिकार मिल गया था। एजेल इस राशि के लिये कांग्रेस पार्टी की देनदार थी।

अमेरिका प्रवास के दौरान, कांग्रेस नेता सेनफ्रांसिस्को, वाशिंगटन डी.सी. तथा न्यूयॉर्क के कार्यक्रमों में व्यस्त रहेंगे। 30 मई को वे सैंटा क्लारा के सैंटा क्लारा मैरिअट में एन.आर.आई. समुदाय के साथ संवाद करेंगे।

31 मई को राहुल सिलिकॉन वैली की स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में "द न्यू ग्लोबल इक्विलिब्रियम" विषय पर व्याख्यान देंगे। स्टैनफोर्ड ग्रेजुएट स्कूल ऑफ बिजनैस में इस व्याख्यान का आयोजन "सेन्टर फॉर डेमोक्रेसी", "डवलपमेंट" तथा "रूल ऑफ लॉ" द्वारा किया जा रहा है।

पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष प्रमुख व्यवसायियों तथा कलाकारों के ग्रुप के साथ पृथक-पृथक मीटिंग करेंगे। इसके वे कुछ मीडिया इन्टरव्यूज भी देंगे।

राहुल 1 और 2 जून को वाशिंगटन में होंगे। 1 जून को वे नैशनल प्रेस क्लब में "भारतीय लोकतंत्र का भविष्य", "भाषण की स्वतंत्रता" तथा "स्टेनेबल एवं इनक्लूसिव इकॉनॉमिक ग्रोथ" विषयों पर बोलेंगे। सी.एन.एन. के लिये फरीद ज़करिया को एक इन्टरव्यू देने की योजना बनाई जा रही है। राहुल भारतीय अमेरिकन एन्ट्रेप्रीन्योर फ्रैंक इस्लाम की मेजबानी में एक डिनर में शामिल होंगे। इस डिनर में बिजनैस लीडर्स, सीनेटर्स तथा कांग्रेमैन भी मौजूद होंगे।

न्यूयॉर्क में राहुल 4 जून को जैविट्स सेंट में भारतीय अमेरिकनों को संबोधित करेंगे। इसके अलावा, वे पूरे अमेरिका से आये इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के सदस्यों के साथ भी मीटिंग करेंगे।

75 रूपए ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

"भारत" तथा दायीं और अंग्रेजी में "इंडिया" अंकित होगा।

सिक्के के दूसरी ओर पार्लियामैंट कॉम्पलेक्स के चित्र के नीचे वर्ष "2023" अंकित होगा।

मणिपुर में भाजपा नेताओं पर हमले

इंफाल 26 मई (वार्ता)। मणिपुर में दो जातीय समूहों के बीच संघर्ष के शीघ्र समाधान की मांग को लेकर गुरुवार रात महिलाओं सहित बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारियों ने केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री डॉ.आर के रंजन के आवास की ओर मार्च किया।

इस बीच भारतीय जनता पार्टी के नेताओं पर जारी हमलों को देखते हुए सुरक्षा बढ़ा दी गयी है।

मणिपुर पुलिस और सुरक्षाकर्मियों की एक मजबूत टीम की ओर से उन्हें वापस जाने के लिए मजबूर किया गया। इससे पहले बिशनपुर जिले में गोविंददास कों ग्राौजम मिनिस्टर वर्क्स के आवास पर महिलाओं ने हमला किया था। इस बीच राज्य के अधिकांश हिस्सों में शुक्रवार को दोपहर तक कर्फ्यू में ढील दी गई। भाजपा नेताओं के आवासों के आसपास सुरक्षा बढ़ा दी गई है। भाजपा नेताओं के खिलाफ नारेबाजी करने वालों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चुप्पी पर सवाल उठाया।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908

संक्षिप्त

अंधड़ से दीवार गिरी, 15 बकरियां मरी

दूदू, (निसं)। कस्बे एवं आसपास के गांवों में गुरूवार की रात को आये तेज अधंड़ व बरसात से जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया। जगह-जगह पेड़, टीन शैड, ट्रांसफार्मर, बिजली के पोल गिर गये। एक गांव में दीवार गिर जाने से मलबे में दबकर 15 बकरियों की मौत हो गई। रातभर आई आंधी बरसात के साथ ओला वृष्टि भी हुई। राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे बनी फैक्ट्रियों के टीनशैड उडकर दूसरी जगह पहुंच गये। महेशपुरा गांव में जयराम बलाई के मकान की दीवार गिर जाने पर मलबे में दबकर 15 बकरियों की मौत हो गई।

तेज अंधड़ से दो भैंस मरी

बौंली, (निसं)। क्षेत्र में गुरुवार रात्रि को आए तेज अंधड़ के कारण अनेकों टीन शेड व मकान धराशाई हो गए एवं विद्युत पोल ट्रांसफार्मर व तार टूटकर जमीन पर गिर गए। तेज गति से आए अंधड के कारण दो अलग-अलग गांव में भी दो भैंसों की मौत हो गई। क्षेत्र के बहनोली, पिपलवाडा, बोरखेड़ा, मोरण, मजेवला, बौंली वंदावल, पीपल्दा, खोहरी सहित अनेकों गांव में अंधड़ के कारण भारी नुकसान होने के समाचार प्राप्त हो रहे हैं।

किसान की बेटी ने नाम रोशन किया

खैरथल, (निसं)। स्थानीय ईपी स्कूल की छात्रा अन्नु यादव ने कला वर्ग के राजस्थान बोर्ड परीक्षा परिणाम में 94.80 प्रतिशत अंक प्राप्त कर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। छात्रा की इस उपलब्धि पर स्कूल निदेशक आजाद चौधरी, प्राचार्य राजेश आचार्य, प्.स.प्रधान, सरपंच आदि गणमान्य लोगों ने छात्रा के पिता मुकेश यादव को माल्यार्पण कर मिठाई खिला बधाई दी।

युवक ने फांसी लगाई

बौंली, (निसं)। मित्रपुरा थाने के एएसआई नंदराम ने बताया कि उदगांव निवासी मक्खन लाल मीणा उम्र 19 वर्ष ने अपने घर के ऊपर कमरे में रस्सी का फंदा लगाकर सुसाइड कर लिया। सूचना पाकर मित्रपुरा पुलिस मौके पर पहुंची।

तेज अंधड़ ने बरपाया कहर, दो जनों की मौत, कई मकान धराशायी

निवाई, (निसं)। गुरुवार रात क्षेत्र में आए अंधड़ से जन जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। रात करीब साढे दस बजे आए तेज अंधड से ग्रामीण क्षेत्र में दो वृद्धों की मौत हो गई तथा एक गांव में पूरा मकान गिर गया जिससे एक महिला के तीन जगह फ्रेक्चर हो गए। इसके अलावा किसानों के खेतों में लगी सोलर प्लेटें उडकर दूर जा गिरी। इसके अलावा शहर सहित ग्रामीण क्षेत्र में सैकडों बिजली के पोल टूट गए तथा पेड धाराशाई हो गए।

निवाई सदर थाना इंचार्ज ने बताया कि गुरुवार रात आई तूफानी हवाओं से अपने घर में सो रहे नाडी की ढाणी प्रतापपुरा निवासी बल्लूराम पुत्र भूरा लाल उम्र करीब 60 वर्ष पर घर की दीवार आ गिरी जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इसी प्रकार गांव लोडेदा में स्थित अवाना की ढाणी निवासी सुवालाल उम्र 60 वर्ष की भी दबने से मौत हो गई। मृतक भेडों की रखवाली के लिए छप्परनुमा घर में सो रहा था। तूफान से उसका छप्पर उड गया तथा वह जिस ऊंची चारपाई पर सो रहा था वह भी हवा के साथ उड गई और दूर जाकर गिरी जिससे उसकी भी मौत हो गई। जगतपुरा के देवजी मंदिर के पुजारी सूरज प्रजापत ने बताया की मंदिर परिसर में करीब दो सौ साल पुराना पीपल का पेड उखड गया। मूण्डिया निवासी फैली राम मीणा पुत्र श्योनारायण मीणा,गोपाल पुत्र रामचन्द्र मीणा, बीडोली निवासी आशु शर्मा, रामबिलास शर्मा व विजयगोविन्दपुरा निवासी हरिनारायण मीणा पुत्र सांवतराम मीणा, नन्दा माली व गांव बस्सी में फूमा देवी व सीपुरा निवासी बनवारी बैरवा, जीवली निवासी रामकिशन बैरवा,टोरडी निवासी केसर देवी मीणा के खेत पर सौर ऊर्जा सेट उड गया। इसी प्रकार मूण्डिया निवासी किसान वैद्य सत्यनारायण शर्मा एवं राकेश कुमार शर्मा के गांव झापडी के खेतों में लगी सोलर सेट तेज अंधड में उड गए। इसी प्रकार डांगरथल निवासी प्रकाश तिवाडी की भैंस की छप्पर के नीचे दबकर मौत हो गई। गांव हरभांवता में गोकुल गुर्जर का पूरा मकान ढह गया। रामजीपुरा की ढाणी वनस्थली में जीतपाल मीणा के मकान की करीब दो सौ फीट दीवारें ढह गई और इन पर लगी चद्दर भी टूट गई। चद्दर की चपेट में आने से उनकी एक पाडी भी मर गई। इसी प्रकार झिलाय क्षेत्र के गांव खिडगी में अंधड से एक बाडे में लगा हुआ नीम का पेड टूटकर गिर गया जिससे उसके नीचे बंधी हुई एक भैंस व बछडी की मौत हो गई।

दादूयाल गौशाला में नवनिर्मित पांच कमरों के टीन शेड उडकर दूर जा गिरे। कनिष्ठ अभियंता राघव अग्रवाल ने बताया कि तेज अंधड से 30 विद्युत पाल क्षतिग्रस्त होने के साथ ही पांच ट्रांसफार्मर व विद्युत लाईनें नीचे गिर गई जिससे विद्युत आपूर्ति बंद रही। जामडोली में दीवार गिरने से दो बकरियों की मौत हो गई तथा सेदरिया में भगवान देवनारायण के मंदिर के सामने लगा हुआ नीम का पेड टूट गया। गांव तुर्किया में पूरा मकान ढह गया जिसमें दबने से एक महिला के पैर में तीन जगह फ्रेक्चर हो गया व बकरियों की मौत हो गई।

गांव खिडगी में नीम का पेड़ गिर गया जिससे उसके नीचे बंधी एक भैंस व बछड़ी की मौत हो गई।

- सैकडों पेड़ टूटे, विद्युत पोल उखड़े, अंधेरा छाया रहा

फायरिंग व लूट के आरोपियों का नहीं लगा सुराग

खाटूश्यामजी, (निसं)। कस्बे के वार्ड नंबर 15 में रात्रि में व्यापारी पर फायरिंग कर करीब 14 लाख की लूट के आरोपियों का शुक्रवार को कोई सुराग नहीं लगा। जयपुर रेंज आईजी उमेश चन्द्र दत्ता ने वारदात का मौका मुआयना कर पुलिस अधीक्षक करण शर्मा को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

पुलिस ने मौका-ए-वारदात से फायरिंग किए गए कारतूस के खाली खोल भी बरामद किए। इसके साथ ही सीसीटीवी कैमरा के आधार पर आरोपियों की तलाश की जा रही है। पुलिस ने आधा दर्जन क्राइम स्पेशलिस्ट की टीम बनाकर आरोपियों के पकड़ने का प्रयास किया जा रहा है। वहीं नाकाबंदी भी करवाई गई है। एएसपी गिरधारी शर्मा ने बताया कि संदिग्ध व्यक्तियों को हिरासत में लेकर पूछताछ भी की जा रही है। क्राइम स्पेशलिस्ट पुलिस के जवानों की आधा दर्जन टीमें बनाई गई है जिससे आरोपियों को पकड़ा जा सके। थानाधिकारी सुभाष चंद्र यादव के निर्देशन में सभी पक्षों को ध्यान में रखते हुए आरोपियों की तलाश की जा रही है। व्यापारी के साथ हुई लूट की घटना के बाद कस्बें में दहशत का माहौल बन गया। इस दौरान खाटूधाम व्यापार मण्डल ने भी थानाधिकारी सुभाष यादव को ज्ञापन देकर लूट के आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग की है।

ओ.एस.डी. चौधरी ने अधिकारियों की बैठक ली

कोटपूतली, (निसं)। कोटपूतली-बहरोड़ जिले की ओएसडी शुभम चौधरी द्वारा जिला स्तरीय सरकारी कार्यालयों को अस्थाई रूप से खोले जाने के लिए लगातार उपलब्ध राजकीय एवं गैर राजकीय भवनों एवं भूमि का अवलोकन किया जा रहा है।

इस सम्बंध में ओएसडी शुभम चौधरी ने शुक्रवार को कस्बा स्थित पंचायत समिति सभागार में ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों की बैठक भी ली। बैठक के दौरान चौधरी ने सभी विभागों के अधिकारियों को उनके पास उपलब्ध भवन, भूमि व संसाधनों को लेकर रिपोर्ट जल्द से जल्द प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। आपको बता दें कि उक्त रिपोर्ट राज्य सरकार को भेजे जाने के बाद आवश्यक संसाधनों को उपलब्ध करवाये जाने की प्रक्रिया शुरू होगी। बताया जा रहा है कि कोटपूतली में जिला स्तरीय 33 कार्यालय खोले जाने है। फिलहाल नगर परिषद कार्यालय में अस्थाई रूप से ओएसडी का कार्यालय खोला गया है। ओएसडी चौधरी ने विभागीय अधिकारियों के साथ शुक्रवार को लगातार दुसरे दिन भी जिला स्तरीय कार्यालयों के लिए उपलब्ध वैकल्पिक भवनों का निरीक्षण करते हुए अवलोकन किया। उन्होंने राजकीय सरदार विधालय स्थित छात्रावास, राजकीय सरदार विधालय, ग्राम पंचायत अमाई, चतुर्भुज, बामनवास के अटल सेवा केन्द्र, सराय मौहल्ला स्थित पूराना कन्या महाविधालय आदि का मौका देखा। समस्त प्रक्रियाओं के पूर्ण होने के बाद ही जिले का सीमांकन होकर राज्य सरकार द्वारा नोटिफिकेशन जारी किया जा सकेगा।

वहीं विभिन्न विभागों में जिला स्तरीय नोडल अधिकारियों की नियुक्ति की जा रही है। पुलिस विभाग के लिए एएसपी विधा प्रकाश को नोडल अधिकारी नियुक्त किया है।

21 मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया

लालसोट, (निसं)। उपखंड मुख्यालय स्थित श्रीअशोक शर्मा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में सीनियर सेकेंडरी बोर्ड परीक्षा में अव्वल रहने वाले छात्र छात्राओं के सम्मान समारोह कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नगर पालिका के चेयरमैन रक्षा मिश्र ने कहा कि राजकीय विद्यालयों ने बोर्ड परीक्षाओं में अव्वल परिणाम देकर खुद की श्रेष्ठता को साबित किया है।

चेयरमैन मिश्र ने कहा कि इस बार राजकीय विद्यालयों की सीनियर बोर्ड की परीक्षाओं में आए अव्वल छात्र-छात्राओं की संख्या प्रमाणित करती है कि विभिन्न समस्याओं से ग्रसित होते हुए भी सरकारी विद्यालय निजी विद्यालयों की शैक्षिणक गतिविधि एवं शैक्षिक गुणवत्ता से कहीं आगे है। विद्यालय परिवार द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में विज्ञान वाणिज्य एवं कला संकाय के मेधावी छात्र छात्राओं को सम्मानित किया गया।

श्रीअशोक शर्मा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में छात्र-छात्राओं का सम्मान किया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य मदन पारीक ने बताया कि सीनियर सेकेंडरी बोर्ड परीक्षा विज्ञान वाणिज्य व कला संकाय के मेधावी छात्र छात्राओं का नगर पालिका चेयरमैन रक्षा मिश्र शिक्षाविद ओम प्रकाश चतुर्वेदी द्वारा माला पहना एवं मुंह मीठा कराकर सम्मान किया गया। प्रधानाचार्य पारीक बताया कि वाणिज्य संकाय में विद्यालय का शत प्रतिशत एवं विज्ञान संकाय में 96.22 प्रतिशत वह कला वर्ग में 92.64 प्रतिशत परिणाम रहा। इस सम्मान समारोह के दौरान कई छात्र-छात्राएं एवं अभिभावक आदि मौजूद रहे।

चिकित्सा मंत्री ने 61 लाख के विकास कार्यों का उद्घाटन किया

मंडावरी लालसोट, (निसं)। चिकित्सा मंत्री परसादी लाल मीणा द्वारा शुक्रवार को कल्याण पुराने एवं काकरिया में 61 लाख रुपए लागत के विकास कार्यों का उद्घाटन किया।

चिकित्सा मंत्री ने कल्याणपुरा में 41 लाख की लागत से उप स्वास्थ्य केन्द्र व राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कल्याणपुरा में 20 लाख की लागत से तीन कक्षा कक्ष मय हाल का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए आमजन को समर्पित किया। इस दोरान पंचायत कांकरिया में महंगाई राहत एवं प्रशासन गांव के संग अभियान का चिकित्सा मंत्री मीणा द्वारा निरीक्षण कर पात्र लाभार्थियों से संवाद किया गया।

- कल्याणपुरा में स्कूल के तीन कमरों का भी उद्घाटन किया

मंडावरी के कल्याणपुरा ग्राम में उप स्वास्थ्य केन्द्र का चिकित्सा मंत्री परसादी लाल मीणा ने फीता काटकर उद्घाटन किया।

शिविर में कुल 582 परिवारों का पंजीयन किया गया। चिकित्सा मंत्री मीणा द्वारा महंगाई राहत शिविर के दौरान पात्र लाभार्थियों को गारंटी कार्ड वितरण किए गए। इस अवसर पर प्रधान नाथू लाल मीना सरपंच मुनेशी देवी उपखंड अधिकारी बृजेंद्र मीना प्रगति प्रसार अधिकारी विमल जैमन विकास अधिकारी राजाराम मीना तहसीलदार मदनलाल मीना सामाजिक सुरक्षा अधिकारी अशोक मीणा ब्लॉक सांख्यिकी अधिकारी सुखपाल मीणा राजीव गांधी युवा मित्र बृजमोहन शर्मा विकास शर्मा व ग्रामीण लाभार्थी मौजूद रहे।

भामाशाह ने मंदिर में वाटर कूलर लगवाया

श्रीमाधोपुर, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम मऊ में पहाड़ी पर स्थित बजरंगबली मंदिर में भामाशाह ने वाटर कूलर भेंट किया है। ग्रामवासी राकेश चुलेट ने बताया कि राजकुमार सिंह राठौड़ (उदयपुर) ने अपने नानाजी व नानीजी पंचायत समिति के पूर्व प्रधान स्व. मानसिंह शेखावत की स्मृति में आमजन के लिए मऊ पहाड़ी पर वाटर कूलर रखवाया गया।

श्री बालाजी मित्र मण्डल,मऊ के सक्रिय सदस्यों के सहयोग से ठण्डे पेयजल हेतु एक वॉटर कूलर को पहाड़ी पर स्थापित कराया गया। यह वाटर कूलर आमजन को समर्पित है। ग्रामवासियों ने भामाशाह के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर मोहन सिंह अध्यापक, विकास तिवारी, भगवान सिंह, रतन, विनोद,बँटी शेखावत, गोलू तिवारी, ब्रिजेश जांगिड, फूलचंद नायक, गिरधारी शर्मा, राजू सिंह, रमेश, सुरेश चुलेट आदि मोजूद थे।

किसान की मौत के मामले ने तूल पकड़ा

दौसा, (निसं)। जिले के लालसोट विधानसभा क्षेत्र के ढोलावास गांव के एक किसान को सांड द्वारा घायल करने के बाद इलाज के लिए जिला अस्पताल पहुंचने पर चिकित्सक एवं चिकित्सा कर्मियों द्वारा इलाज में लापरवाही बरतने के बाद किसान जसपाल मीणा की हुई मौत प्रकरण तूल पकड़ता जा रहा है।

इस मामले को लेकर गठित हाई लेवल कमेटी में चिकित्सा विभाग के जन स्वास्थ्य निदेशक डॉ. रवि प्रकाश माथुर के नेतृत्व में अतिरिक्त निदेशक डॉ. सुशील परमार एवं ज्वाइंट डायरेक्टर ओपी शर्मा आदि की तीन सदस्य टीम ने शुक्रवार को चिकित्सा अधिकारी व चिकित्सा कर्मियों के बयान दर्ज किए गए।

16 मई रात्री को रामगढ़ पचवारा उपखंड क्षेत्र के ढोलावास ग्राम की आम वाली ढाणी निवासी किसान जसपाल मीणा सांड को खेतों से भगाने का प्रयास कर रहा था उसी समय किसान पर सांड द्वारा हमला करने में वह गंभीर घायल हुआ था। जिसे गंभीर अवस्था में घायल होने पर जिला अस्पताल में लाया गया था जहां चिकित्सा अधिकारी अमित कुमार शर्मा चिकित्सा कर्मी दिनेश बैरवा व ईसीजी टेक्नीशियन शीतल सैनी पर इलाज में लापरवाही बरतने एवं गंभीर घायल किसान को जयपुर रेफर करने के बाद इलाज के दौरान मौत हो जाने पर आरोप लगाते हुए इसकी शिकायत चिकित्सा मंत्री परसादी लाल मीणा को दी गई थी। इस मामले को लेकर सक्रिय हुए चिकित्सा विभाग द्वारा आरोपी चिकित्सा अधिकारी एवं दो चिकित्सा कर्मियों को तुरंत प्रभाव से निलंबित कर दिया था। वहीं मामले को लेकर टीम ने चिकित्सकों व चिकित्सक कर्मियों बयान लिए गए हैं।

- तीन सदस्य टीम ने निलंबित चिकित्साकर्मियों के बयान किए दर्ज

विराटनगर क्षेत्र को कोटपुतली में शामिल करने का विरोध

पावटा, (निसं)। विराटनगर तहसील क्षेत्र के सैकड़ों की संख्या में ग्रामीणों ने संघर्ष समिति पदाधिकारियों के नेतृत्व में कोटपूतली नगर परिषद स्थित कार्यालय में ओएसडी शुभम चौधरी से मुलाकात कर विराटनगर तहसील क्षेत्र को जयपुर जिले में यथावत रखने की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा।

नवसृजित कोटपुतली जिले में विराटनगर तहसील क्षेत्र को शामिल करने का विरोध जताया। ज्ञापन में मांग की है कि विराटनगर तहसील क्षेत्र को जयपुर जिले में यथावत रखा जाए। जनप्रतिनिधियों व ग्रामीणों का कहना है कि विराटनगर तहसील क्षेत्र भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, प्रशासनिक दृष्टिकोण से जयपुर जिला विराटनगर क्षेत्र की जनता के लिए उपयुक्त है। संघर्ष समिति के सदस्यों ने बताया पिछले 47 दिनों से लगातार धरना प्रदर्शन चल रहा है। इस क्रम में प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, जिला गठन कमेटी के चेयरमैन राम लुभाया मुय सचिव, अतिरिक्त मुय सचिव, विधानसभा सचिव, जिला कलेक्टर सहित अनेक राजनीतिक एवं प्रशासनिक लोगों से मुलाकात कर अपना पक्ष रख चुके हैं।

सांभर में तूफान से दर्जनों पेड़ व विद्युत पोल गिरे

सांभरझील, (निसं)। सांभर व आसपास के क्षेत्रों में गुरुवार की रात्रि करीब 10 बजे भीषण चक्रवाती तूफान से सैकड़ों पेड़ व कई जगहों पर विद्युत पोल उखड़ गए व कुछ आधे से अधिक झुककर गिरने जैसी स्थिति में आ गए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार सांभर और आसपास के गांव में करीब 20 से अधिक विद्युत पोल गिरने की खबर है, इसके अलावा ट्रांसफार्मर भी क्षतिग्रस्त हुए हैं तो कहीं पर डीपी स्ट्रक्चर का पूरा ढांचा ही जमीन पर आ गिरा। समूचा कस्बा पूरी रात अंधेरे में डूबा रहा व दोपहर बाद विद्युत सप्लाई सुचारू होने के बाद लोगों को राहत मिली।

तूफान का कहर का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि सांभर की गांधी बालवाड़ी सहित अनेक जगहों पर विशालकाय नीम के पुराने वृक्ष तक उखड़ गये। देवयानी स्थित श्याम बाबा दरबार के बाहर लगा मजबूत टीन शेड तक उखड़ कर दूर मंदिर के पास जाकर गिर गया। आस-पास के गांव सहित कस्बा में भी अनेक बालकनी टूट कर गिर गई तो किसी की चारदीवारी धराशाई हो गई।

कई जगहों से पशुओं के मारे जाने की भी खबर है तो कुछ मकान की दीवार व टीनेशेड गिरने से उसकी चपेट में आने के कारण चोटिल भी हुए बताए। न्यू मार्केट से लेकर नया बस स्टैंड तक अधिकतर दुकानों पर लगे बड़े-बड़े होल्डिंग्स सड़क पर पड़े हुए थे। कमोबेश यही स्थिति गोला बाजार सहित सभी प्रमुख स्थानों पर देखने को मिली। आसपास के अनेक गांव से भी इसी प्रकार का काफी नुकसान होने के समाचार है।

विधायक निर्मल कुमावत नहीं फुलेरा विधानसभा क्षेत्र में भीषण तूफान में हुए नुकसान का आकलन कर संबंधित को आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाई जाने के लिए सर्वे रिपोर्ट के लिए जिला कलेक्टर को लिखा है।

- देर रात तक चला बारिश का दौर, अंधेरे में डूबा शहर

सांभर में तूफान से अनेक जगहों पर पेड़ धराशायी हो गए।

यादव एवं वर्मा का स्वागत

श्रीमाधोपुर, (निसं)। भारतीय सिविल सेवा में श्रीमाधोपुर व खंडेला के निवासी क्रमशः गणपत यादव व पंकज वर्मा का चयन होने पर विनायक क्लासेज श्रीमाधोपुर में स्वागत किया गया।

इस अवसर पर निदेशक संयोग भावरिया ने बताया खंडेला निवासी पंकज वर्मा के पिता राम सिंह वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक हैं जिन्होंने अखिल भारतीय स्तर पर 515 वी रैंक हासिल की है व श्रीमाधोपुर के फुटाला निवासी गणपत यादव किसान के बेटे हैं जिन्होंने अखिल भारतीय स्तर पर 665 वी रैंक हासिल की है, दोनों प्रतियोगियों का विनायक क्लासेज श्रीमाधोपुर में माल्यार्पण कर, राजस्थानी परंपरा की पहचान साफा बंधवा कर, स्मृति चिन्ह भेंट कर भव्य स्वागत किया गया। इस मौके पर पर आए हुए अतिथियों का राकेश सर ने अभिनंदन एवं स्वागत किया।

इस अवसर पर खंडेला के रिटायर्ड जिला शिक्षा अधिकारी रहे सुल्तान पालीवाल, सीताराम सैनी पूर्व वैज्ञानिक,रामसिंह पालीवाल वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक, पूर्व प्रिंसिपल झाबर महला, सुरेश यादव,महेंद्र मेहरडा एवं क्लासेज के अभ्यर्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का मंच संचालन गोपाल गढवाल ने किया।

Office of Gram Panchayat Puniyo Ka Tala,
Panchayat Samiti Gida (Barmer)
क्रमांक: ग्रापं/निविदा/2023-24/25 दिनांक :- 24.05.2023
NOTICE INVITING E-BID
E-Bids for the procurement of Construction Material and related equipments services are invited from interested Bidder/Dealers/Suppliers up to 06.00 PM on 02.06.2023. Other particulars of bid may be visited on the State Public Procurement Portal (www.sppp.rajasthan.gov.in) and www.eproc.rajasthan.gov.in
UBN - PLP2324GLRC00010
Village Development Officer — Sarpanch
Gram Panchayat Puniyo Ka Tala, Panchayat Samiti Gida (Barmer) — Gram Panchayat Puniyo Ka Tala, Panchayat Samiti Gida (Barmer)

Office of Gram Panchayat Sawau Moolraj,
Panchayat Samiti Gida (Barmer)
क्रमांक: ग्रापं/निविदा/2023-24/145 दिनांक :- 20.05.2023
NOTICE INVITING E-BID
E-Bids for the procurement of Construction Material and related equipments services are invited from interested Bidder/Dealers/Suppliers up to 06.00 PM on 04.06.2023. Other particulars of bid may be visited on the State Public Procurement Portal (www.sppp.rajasthan.gov.in) and www.eproc.rajasthan.gov.in
UBN - PLP2324GLRC00012
Village Development Officer — Sarpanch
Gram Panchayat Sawau Moolraj, Panchayat Samiti Gida (Barmer) — Gram Panchayat Sawau Moolraj, Panchayat Samiti Gida (Barmer)

Office of Gram Panchayat Neemba Ki Dhani,
Panchayat Samiti Gida (Barmer)
क्रमांक: ग्रापं/निविदा/2023-24/17 दिनांक :- 24.05.2023
NOTICE INVITING E-BID
E-Bids for the procurement of Construction Material and related equipments services are invited from interested Bidder/Dealers/Suppliers up to 06.00 PM on 02.06.2023. Other particulars of bid may be visited on the State Public Procurement Portal (www.sppp.rajasthan.gov.in) and www.eproc.rajasthan.gov.in
UBN - PLP2324GLRC00007
Village Development Officer — Sarpanch
Gram Panchayat Neemba Ki Dhani, Panchayat Samiti Gida (Barmer) — Gram Panchayat Neemba Ki Dhani, Panchayat Samiti Gida (Barmer)

Office of Gram Panchayat Mado Ki Dhani
Panchayat Samiti Gida (Barmer)
क्रमांक: ग्रापं/निविदा/2023-24/123 दिनांक :- 20.05.2023
NOTICE INVITING E-BID
E-Bids for the procurement of Construction Material and related equipments services are invited from interested Bidder/Dealers/Suppliers up to 06.00 PM on 04.06.2023. Other particulars of bid may be visited on the State Public Procurement Portal (www.sppp.rajasthan.gov.in) and www.eproc.rajasthan.gov.in
UBN - PLP2324GLRC00011
Village Development Officer — Sarpanch
Gram Panchayat Mado Ki Dhani, Panchayat Samiti Gida (Barmer) — Gram Panchayat Mado Ki Dhani, Panchayat Samiti Gida (Barmer)

Office of Gram Panchayat Lapundara Barthan,
Panchayat Samiti Gida (Barmer)
क्रमांक: ग्रापं/निविदा/2023-24/31 दिनांक :- 24.05.2023
NOTICE INVITING E-BID
E-Bids for the procurement of Construction Material and related equipments services are invited from interested Bidder/Dealers/Suppliers up to 06.00 PM on 02.06.2023. Other particulars of bid may be visited on the State Public Procurement Portal (www.sppp.rajasthan.gov.in) and www.eproc.rajasthan.gov.in
UBN - PLP2324GLRC00009
Village Development Officer — Sarpanch
Gram Panchayat Lapundara Barthan, Panchayat Samiti Gida (Barmer) — Gram Panchayat Lapundara Barthan, Panchayat Samiti Gida (Barmer)

Office of Gram Panchayat Kharapar
Panchayat Samiti Gida (Barmer)
क्रमांक: ग्रापं/निविदा/2023-24/11 दिनांक :- 24.05.2023
NOTICE INVITING E-BID
E-Bids for the procurement of Construction Material and related equipments services are invited from interested Bidder/Dealers/Suppliers up to 06.00 PM on 02.06.2023. Other particulars of bid may be visited on the State Public Procurement Portal (www.sppp.rajasthan.gov.in) and www.eproc.rajasthan.gov.in
UBN - PLP2324GLRC00008
Village Development Officer — Sarpanch
Gram Panchayat Kharapar, Panchayat Samiti Gida (Barmer) — Gram Panchayat Kharapar, Panchayat Samiti Gida (Barmer)

Office of Gram Panchayat Danpura,
Panchayat Samiti Gida (Barmer)
क्रमांक: ग्रापं/निविदा/2023-24/SPL/102 दिनांक :- 20.05.2023
NOTICE INVITING E-BID
E-Bids for the procurement of Construction Material and related equipments services are invited from interested Bidder/Dealers/Suppliers up to 06.00 PM on 29.05.2023. Other particulars of bid may be visited on the State Public Procurement Portal (www.sppp.rajasthan.gov.in) and www.eproc.rajasthan.gov.in
UBN - PLP2324GLRC00005
Village Development Officer — Sarpanch
Gram Panchayat Danpura, Panchayat Samiti Gida (Barmer) — Gram Panchayat Danpura, Panchayat Samiti Gida (Barmer)

Office of Gram Panchayat Jaakhada,
Panchayat Samiti Gida (Barmer)
क्रमांक: ग्रापं/निविदा/2023-24/02 दिनांक :- 20.05.2023
NOTICE INVITING E-BID
E-Bids for the procurement of Construction Material and related equipments services are invited from interested Bidder/Dealers/Suppliers up to 06.00 PM on 29.05.2023. Other particulars of bid may be visited on the State Public Procurement Portal (www.sppp.rajasthan.gov.in) and www.eproc.rajasthan.gov.in
UBN - PLP2324GLRC00006
Village Development Officer — Sarpanch
Gram Panchayat Jaakhada, Panchayat Samiti Gida (Barmer) — Gram Panchayat Jaakhada, Panchayat Samiti Gida (Barmer)

TRUE VALUE
MARUTI SUZUKI
बेचें। खरीदें। भरोसे के साथ।
True Value, pre-owned कारों को ख़रीदने और बेचने की श्रेष्ठ जगह।
TRUE VALUE
MARUTI SUZUKI
CELERIO
TRUE VALUE CERTIFIED
App Store
Google play
अपनी कार बेचने के लिए स्कैन करें
यहाँ ऐप डाउनलोड करें।
घर पर मूल्यांकन
376 चेक पॉइंट
कीमत निर्धारण के लिए AI आधारित इंजन
1 वर्ष तक की वारंटी और 3 मुफ्त सर्विस*
विस्तृत डिजिटल मूल्यांकन
कार का जांचा-परखा इतिहास
सरल पेपरवर्क
पूछताछ के लिए, कॉल करें 1800 102 1800 | www.marutisuzukitruevalue.com/hi-in/ पर जाएं
*Terms and Conditions apply. Black glass shade on the vehicle is due to lighting effect. Creative visualization. Images used are for illustration purposes only. Car colour may vary due to printing on paper.
JAIPUR: B 1 GOVIND MARG, RAJAPARK OPP. PINK SQUARE MALL, KP AUTOMOTIVE: 9549650533, 9116190344 | A-209, RAJENDRA PRASAD NAGAR, 200FT BYPASS, AJMER ROAD, JAIPUR, SATNAM MOTOCORP. 7413900007, 7413900009, 7821823626 | 13 JHOTWARA INDUSTRIAL AREA, NEAR JHOTWARA POLICE STATION, JAIPUR, KTL: 7412068475, 9209056789 | PADMAWATI COLONY- II, OPPOSITE METRO PILLAR NO 25, MANSAROVER METRO STATION JAIPUR, VIPUL MOTORS PVT. LTD.: 9829351470, 9509157505, 9351044999 | E-101, ROAD NO. 8, VKIA AREA, JAIPUR, PREM MOTORS: 8058794068, 8058791634, 8058794091 | E-197(A), RIICO INDUSTRIAL AREA, MANSAROVAR, JAIPUR, KP AUTOMOTIVIES: 9116190342, 9116190346.